शाह का कहना कि दिल छोटा न करो दीन की दुहाई बड़ी होती है।

कहै साहि साहाब। कहो तत्तारषान सुनि ॥
षुरासान रुस्तमां। जमन मारूफ षान गुनि ॥
काल जमन जेहान। सुनौ वर बत्त चित्त तुम ॥
मंत सत्त सुद्धरौ। दीन मन हीन करौ क्रम ॥
सजि सेन चढ़ौ कनवज्ज धर। भंजि देस सम पुर सयल ॥
हरि रिद्धि बंधि नर नारि धर। आतस जालिय अप्प बल ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

दूहा ॥ सज्जि सेन 'साहन'समुद्द। गज्जनवै सुरतान ॥
बोलि मीर गंभीर भर। भंजि देस यम थान ॥ छं० ॥ ६०२ ॥

शहाबुद्दीन का हिंदुस्तान पर चढ़ाई करना और कुंदनपुर के पास रयसिंह बघेले का उसे रोकना।

पद्धरी ॥ मिलि सेन साहि आलम असंष। गंभीर मीर दिढ़ तीर नंषि ॥
मेमंति दंति घन बज्जि सार। आगाढ़ स्याम बद्दर सु ढारि ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

वर तुरिय तेज अगाल उभाव। उत्तंग अंग 'जिम वेग वाव ॥
सजि लष्ष चढ़े गोरीस सेन। रङ्क सुबाज बज्जे सु गेन ॥ छं० ६०४ ॥
धज नेज झंड हल्ले अनंत। वहुरंग अंग लभ्भै न अंत ॥
षह पूरि धूरि धुंधुरिग भान। दिसि विदिसि पूरि मंनिय समान ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

गद्दरह सुमंत सुनियै न कान। संचार बत्त संचरहि थान ॥
संपत्त सेल कनवज्ज देस। भंजिए नयर पुर ग्रभनेस ॥ छं० ६०६ ॥
बंधियहि बांधि गोचीय बाल। धर जारि पारि किज्जै विहाल ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-साहिन। (२) ए.-समुह। (३) ए. कृ. को.-ताजि।

कवित्त ॥ कुंदन पुर बघेल । राय रयसिंघ सिंघ रन ॥
आगम साहि सहाब । सेन सज्जिय [1]बीरह तिन ॥
सहस उभै साहन । समुंद दस सहस पयभ्भर ॥
बंधि नारि नग ढारि । रह्यौ निज सेन सज्जि बर ॥
आवंत सेन रुक्यौ सकल । भयौ जुद्ध हरि उच्च मनि ॥
परसै न सुदल रोक्यौ सकल । भयौ जुद्ध अद्भुत्त तिन ॥ छं० ६०८ ।

हिन्दू मुस्लमान दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ चली अग्र चौकी सु साहाब सायं । अगें गज्ज चालीस मत्ते महायं ।
अगें हथ्थनारी उभारी उतंगा । सयं सत्त सासह बादी सु चंगा ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

सहस्सं च पंचं गजं बाज पूरं । महाबीर बाजिच बज्जे करूरं ॥
मिली फौज हिंदू तुरक्कीस तेजं । कहै सूर रैसिंघ अप्पं अजेजं ॥
छं० ॥ ६१० ॥

सरं दून छुट्टै सुभारं उभारं । सरा पंजरं पंथज्यों पंड चारं ॥
हकै हक्क बज्जी भरं दून दूनं । चपे सिंघ न्त्रसिंघ हक्कं सजूनं ॥
छं० ॥ ६११ ॥

भगी साहि चौकी च पे सिंघ रायं । परे मीर भीरं सयं तीन घायं ॥
महा आय गज्जे सु मैदान सिंघं । भगे मीर मारूफ करि जेम जंगं ॥
छं० ॥ ६१२ ॥

हके कढ्ढि तत्तार कत्तार तिष्षं । भली मुच्छ मोहैं भई रत्त अंषं ॥
करै फौज अग्गै चल्यो गज्जि गोरी । चवै दीन दीनं लषै झल्लि षोरी ।
छं० ॥ ६१३ ॥

मिलै आवधं मीर हिंदू करारे । धुरं भुव्व तुट्टै उभै सार धारै ॥
झरं आवधं आवधं झाक बज्जै । बजै बीर बाजिच गोगेंन गज्जै ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

धरा बार [2]लोहं रसं रुद्र मत्तं । उभै हार मग्गै नहीं आय अंतं ॥

(१) ए.-बारह । (२) ए.-मोहं ।

मिलो दिट्ठ तत्तार रैसिंघ दूनं। मिले घाय मायं घुलै घम्म जूनं॥
छं० ॥ ६१५ ॥

करे दिट्ठ तत्तार कम्मान मुट्ठी। कसे बान गोरी महा दट्ठ दिट्ठी॥
लगे ऊर सौसंग फुट्टे परारं। हँसे भार संगी हयौ षान सारं॥
छं० ॥ ६१६ ॥

लगे बाहु ग्रीवा समं घाय सालं। पन्यो षान तत्तार बाजी बिहालं॥
हयो सिंघ कालन्न मीरं सनेजं। पन्योराय रनसिंघ रन ऋंत सेजं॥
छं० ॥ ६१७ ॥

भगी फोज हिंदू जुधं जीति मीरं। धन्यौ षान तत्तार झोरी सु तीरं॥
छं० ॥ ६१८ ॥

मुस्लमानी सेना का हिन्दू सेना को परास्त कर देश में लूट मार मचाते हुए आगे बढ़ना।

दूहा॥ परे हिंदु सय तीन धर। सत्त पंच पर मीर॥
गुर गुस्ताना नंचिया। बजि बाजिच गुहीर॥ छं० ॥ ६१९ ॥

संझ ढाल तत्तार षां। धरि आयौ साहाब॥
साज सज्जि चल्यो सु फुनि। जनु उलौ [1]दरियाव॥ छं० ॥ ६२० ॥

भंजि रयन पुर लूटि निधि। बजि बाजिच निहाय॥
अलहन सागर उत्तरिय। बंधि तत्तार सु घाय॥ छं० ॥ ६२१ ॥

नागौर नगर में स्थित पृथ्वीराज का यह समाचार पाकर उसका स्वयं सन्नद्ध होना।

दिसि दिसि धाह जु संचरिय। भगिय प्रजा तजि देस॥
सुनिय बत्त नागौर पहु। चढ़ि प्रथिराज नरेस॥ छं० ॥ ६२२ ॥

(१) मो. दाधि आव।

पृथ्वीराज का सब सेना में समाचार देकर जंगी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । चढ्यौ चहुआन महाभर ॥
बोलि कन्ह चहुआन । राय बरसिंघ सिंघ बर ॥
बोलि चंदपुंडीर । बोलि बघेल्ल सु लष्यन ॥
लोहानौ आजानबाहु । मिलयो सु ततच्छिन ॥
गुज्जरह राम जिन बंध सम । चालुक बीझ सु भीम भर ॥
हाहुलिराव हम्मीर हर । मिलिय सेन दस सहस सर ॥छं०६२३॥

दूहा ॥ अवर सेन सामंत मिलि । चढ्यौ राज प्रथिराज ॥
गाजि गुहिर बाजिय बजि । सज्जि सयन [1]जुध साज ॥ छं०॥६२४॥

कुमक सेना का प्रबंध।

कवित्त ॥ बोलि चंद चंडीस । दीन आयस प्रथिराजहु ॥
तुम षट्टूपुर जाहु । [2]जहां तिथि मंचिय काजह ॥
लै आवहु कैमास । राइ चामंड महाभर ॥
हैवर पष्षर सूर । सज्जि आतुर सु जुझ्झ हर ॥
कहियौ सु बत्त साहाब सब । भंजि देस कनवज्ज हम ॥
षिन पंग हिंदु मिरजाद मिटि । आवहु आतुर षेत रिम ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

पृथ्वीराज का सारुंडे के मुकाम पर डेरा डालना जहां से शाही सेना केवल २८ कोस की दूरी पर थी।

दूहा ॥ पठय चंद षट्टूपुरह । चढ्यौ राज चहुआन ॥
आतुर बहिय अवधि न्रप । सारुंडै सुसथान ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
जाइ चंद षट्टूपुरह । कहिय षबर कैमास ॥
चढ्यौ सु अप्पन सुनत हीं । आनि संपतौ पास ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

(१) ए.-सुध ।　　(२) ए. कृ. को.-जहां थिति मांची कैमासह ।

सारुंडै चहुआन पहु। संपत्तौ बरबीर ॥
सुनिय बत्त [1]सुरतान की। ओजन सिताइ [2]तीर॥ छं० ॥ ६२८ ॥

पृथ्वीराज की सेना का ओज वर्णन।

भुजंगी ॥ स्वयं चढ्ढियं सेन प्रथिराज राजं। बजे बीर बाजित्र [3]आयास गाजं॥
धुअं सीस सामंत सूरं सुधारे। भरं बंधियं राग रज्जे करारे ॥
छं० ॥ ६२९ ॥
तुरी सद्द उत्तंग षुंदै धरन्नी। मनो छुट्टियं मेघ सेना सुरन्नी ॥
पुरं जाइ संपत्त सो संकराई। सबें उत्तरे बाग मध्ये सु भाई ॥
छं० ॥ ६३० ॥

चंद पुंडीर का कहना कि रात को छापा मारा जाय।

दूहा ॥ चवै चंद पुंडीर तब। अहो राज चहुआन ॥
निसा जुद्ध सज्जिय समय। भंजिय सेन परान ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पृथ्वीराज का सात घड़ी दिन रहते से धावा करके आधी रात के समय शाही पड़ाव पर छापा जा मारना।

कवित्त ॥ मानि मंत चहुआन। मंत पुंडीर चंद कहि ॥
घटिय सत्त दिन सेष। राज सज्जिय सु सेन सह ॥
चल्यौ राज प्रथिराज। नद्द नीसान बीर सुर ॥
कौन दान तं हान। सूर सामंत सब्ब भर ॥
सन्नाह सब्ब सेना धरिय। निसा अद्ध पत्ते सु पुर ॥
हल्लाल हल्लि सय सत्ति दुति। चढ़ि चौकी गोरी गहर ॥छं०॥६३२॥
दूहा ॥ चौकी चढ़ि षुरसान षां। सहस सत्ति हय रज्जि ॥
उभय सत्त गज मद गहर। गुरु सनाह हय रज्जि ॥ छं० ॥ ६३३ ॥
त्रोटक ॥ चढ़ि सज्जि सबैं प्रथिराज भरं। पर चौकिय [4]चंपिय हक्कि हरं ॥
भर बज्जिय आवध रीठ सुरारि। मनौं बन कूटहि कट्टि कवारि ॥
छं० ॥ ६३४ ॥

(१) ए. कृ. को. चहुआन। (२) मो.-नीर।
(३) ए. कृ.-अकास। (४) मो. चंपय।

दोनों सेनाओं का घमासान युद्ध होना और मुसलमानी सेना का परास्त होना।

हहक्किय चंपिय सूर सुधीर। महा भर सामंत विभ्रम बीर॥
महा बर चंपिय चौकिय काल। ठिलै भर भग्गिय मिच्छ बिहाल॥
छं० ॥ ६३५ ॥

कहंकह सद्द सु मच्चि करार। सुन्यौ सुरतान भजे दल भार॥
बजे मुष मारि चँपे बहुआन। लरे मझि अप्पह मेछ अपान॥
छं० ॥ ६३६ ॥

हवक्कहिं धक्कहि सेलहि संग। पटा भर झार बिडारिय अंग॥
वहै किरमाल सुचाल सुभेद। मनों सुभ सार करव्वत छेदि॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परे सिर नंचत उट्ठक मंध। करे रिनषंड सु धार बिसंद॥
षलक्कत श्रोन नदी जिम षाल। परे गज बाल भरे रन ताल॥
छं० ॥ ६३८ ॥

करष्षत केस सु एकहि एक। परे रन रिंघहि तुट्टि सुतेक॥
तरफ्फत उट्ठन लग्गत कंठ। सुछुट्टिय घाव करै दिठ मुंठि॥
छं० ॥ ६३९ ॥

लरक्कर लग्गहि कंठ करीति। मनों मतवार लरै रस मीत॥
किनक्कहि बाजिय बीर सुभार। [1]फिरें गज भीर करंत चिकार॥
छं० ॥ ६४० ॥

लष्यौ पतिसाह सु चंद पुंडीर। हयौ हिय सेल भगी भर भीर॥
भग्यौ रन सेन सहाब सचस्सि। निकस्सिय सक्कि दिसा [2]अवदस्सि॥
छं० ॥ ६४१ ।

रह्यौ पतिसाह इकल्लो बीर। भयो जिम मीन गयै सर तीर॥
धरी गर सिंगनि चंद पुंडीर। सयो पतिसाह सु बंधिय बीर॥
छं० ॥ ६४२ ॥

(१) ए. कृ. को.-परे। (२) ए. कृ. को. अवदिस्स।

चंद पुंडीर का शाह को पकड़ लेना।

दूहा ॥ भाग्यौ सेन साहाब गिरि। इकंल्लौ गहि सार ॥
गह्यौ चंद पुंडीर परि। हय कंधहि दिय डारि ॥ छं० ॥ ६४३ ॥
भगे सेन साहाब रन। उग्गि सूर सुविहान ॥
अठ सहस धर मीर परि। पंच कोस रन थान ॥ छं० ॥ ६४४ ॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाना और लौट कर दर पुर में मुकाम करना।

सोधि सु रन प्रथिराज पहु। [1]दरपुर कीन मुकाम ॥
लुट्टि रिद्धि षिय गोस धन। जुरि जस लद्धौ ठाम ॥ छं० ॥ ६४५ ॥

पृथ्वीराज का शाह से आठ हजार घोड़े नजर लेना।

दंड कियौ सुरतान सिर। अट्ठ सहस हय सब्ब ॥
घत्ति सुषासन पट्ठ घर। गज्जिय पिथ्थ सु गब्ब ॥ छं० ॥ ६४६ ॥

कविचंद का कहना कि पृथ्वीराज ने इस प्रकार शाह को परास्त कर आप का राज्य बचाया।

इम गज्जनवै गंजि पिथ। जस लिद्धौ षल मारि ॥
सरवर सक संभरि धनी। कोइ न मंडौ रारि ॥ छं० ॥ ६४७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज के पास कितना औसाफ है।

कितक सूर संभरि धनी। कितक देस [2]दल बंधि ॥
कितक हथ्थ रन अग्गरौ। हसि नृप बूझयौ चंद ॥ छं० ॥ ६४८ ॥

कवि का उत्तर देना कि उनकी क्या बात पूछते हैं पृथ्वीराज के औसाफ कम परंतु कार्य्य बड़े हैं।

---

(१) दरपुर। (या) हरपुर।
(२) ए. कृ. को.-बल।

कवित्त ॥ कितक सूर संभरि नरेस । चंदेस कहत करि ॥
　　कितक देस बल बंधि । [1]राव रावत्त छत्रधर ॥
　　कितक कोम मेंगल मदंध । तोषार भार भर ॥
　　कितइक गहि करिवार । कलह बिहारि बीर भर ॥
　　कित इक मौज विद्रन बहत । अति पर आगम जानियै ॥
　　उग्गो न अरक तित्तह लगै । तिमिर तितें बल मानियै ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ६४९ ॥

पृथ्वीराज का पराक्रम वर्णन ।

दूहा ॥ सूर जिसौ गग्गनह उवै । दल बल मारन आस ॥
　　जब लग अरि कर उट्ठवै । तब लग देय पचास ॥ छं० ॥ ६५० ॥

कवित्त ॥ सूर तेज चहुआन । हनत गज कुंभ झार षग ॥
　　विय विहंड होइ षंड । परत धर रत्त धार अग ॥
　　दल बल धरै न आस । तेज आजानबाह बर ॥
　　सपत नाग सर पार । तार [2]कोवंड तजै कर ॥
　　मत्त दुरद रद सद्द बर । पारि भारि मथ्थै धरनि ॥
　　विसगा विकार उप्पारि पटु । मालकार नंषे करनि ॥छं०॥६५१॥

जैचन्द का पृथ्वीराज की उनिहार पूछना ।

दूहा ॥ विहसत कवि बुल्ल्यौ बयन । इह लच्छन छिति है न ॥
　　सूत्र सु मूरति लच्छिनह । को दिषवौं पहु नेंन ॥ छं० ॥ ६५२ ॥
　　मुकट बंध सब भूप हैं । सब लच्छिन संजुत्त ॥
　　कौन बरन उनहार किहि । कहि चहुआन सु उत्त ॥छं०॥६५३॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की आयु बल बुद्धि और शकल सूरत का वर्णन करके सच्चे पृथ्वीराज को उनिहारना ।

कवित्त ॥ बत्तीसह लच्छिनह । बरस छत्तीस मास छह ॥
　　दस दुज्जन संग्रहत । राह जिस चंद सूर ग्रह ॥

(१) ए. कृ. को. राह ।　　(२) ए. कृ. को.-कोदंड ।

एक छुटहि मषिदान। एक छुट्टिहिति दंड भर॥
एक गहहि गिर कंद। एक अनुसरहि चरन परि॥
चहुआन चतुर चावद्दिसहि। हिंदवान सब हथ्थ जिहि॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। प्रथीराज उनहारि इहि॥ छं०॥६५४॥

इसौ राज प्रथिराज। जिसौ गोकुल महि कन्हह॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ पथ्थर अहि बम्भह॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ अहँकारिय रावन॥
इसौ राज प्रथिराज। राम रावन संतावन॥
बरस तीस छह अग्गरौ। लछ्छिन सब संजुत्त गनि॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। प्रथीराज उनहारि (१)इनि॥ छं०॥६५५॥

जैचन्द का कुपित होकर कहना कि कवि वृथा बक बक करके क्यों अपनी मृत्यु बुलाता है।

दिष्षि नयन कमधज्ज। नरेस अंदेस इह बर॥
दंग दहन जीरन जरंत। परचंत अंत पर॥
श्रुत्ति अरुन मुष अरुन। नैन आरत्त पत्त सम॥
पानि मींडि दवि अधर। दंत दब्बंत तेज तम॥
कविचंद बहुत बुल्लहु बयन। छित्ति अछिति षचौ कवन॥
चल दल्ल समान रसना चपल। विफल बाद मंडौ मवन॥छं०॥६५६॥

पृथ्वीराज और जैचंद का दूर से मिलना और दोनों का एक दूसरे को घूरना।

दूहा॥ देषि थवाइत थिर नयन। करि कनवज्ज नरिंद॥
नयन नयन अंकुरि परिय इक थह दोइ मयंद॥ छं०॥६५७॥

कवित्त॥ दिष्षि नयन रा पंग। दंग चहुआन महा भर॥
अंकुरि नयन विसाल। झाल झारंत रंच उर॥

(१) ए. कृ. को.-इहि।

इक थार कंठीर । [1]पल न आकज्ज करत तमि ॥
बर बारुनी समग्ग । मत्त मातंग रोस [2]भमि ॥
कमधज्जराज फिरि चंद कहु । कहत बत्त संभरधनिय ॥
बर बर कवित्त कवि उच्चरिय । अब सुकित्ति कथ्थौ घनिय ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

जैचन्द का चकित चित्त होकर चिन्ताग्रस्त होना और कविचंद से कहना कि पृथ्वीराज मुझ से मिलते क्यों नहीं ।

अति गँभीर पहु पंग । मन सु दब्बै द्रिग [3]लज्जइ ॥
कवन काज छग्गरह । पानि ग्राही भट कज्जइ ॥
कित्त काज करि बेंन । बानि बंदन बरदाइय ॥
श्रवन राग हम तुमै । दिष्ट गोचर तत लाइय ॥
संभरै जंम देषै सुभट । अंत निमत पुज्जै भिलत ॥
सोमेस पुत्त तुम हित्त करि । क्यौं मुझझहि नाहीं [4]मिलत ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

कवि का कहना कि बात पर बात बढ़ती है ।

दूहा ॥ मत मंतौ लहु मंत कहि । नीतें नीति बढंत ॥
जिम जिम सैसव सो दुरै । तिम तिम मदन चढ़ंत ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कवि का कहना कि जब अनंगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली दान करने लगे तब आपने क्यों दावा न किया ।

कवित्त ॥ चहुआना कुल रीति । भम्म आनन सोमी बर ॥
बर सोमेसर सीस । तिलक कढ्ढ्च अनंग करि ॥
अप्प जानि दोहित्त । राज ढिल्ली दे हथ्था ॥
प्रजा [5]लोक परधान । राय सह तूंअर कथ्था ॥

(१) मो.-पलन । (२) ए. कृ. को.-जिमि । (३) ए. कृ. को.-कज्जह, लज्जह ।
(४) ए. कृ. को.- भिलत । (५) ए. कृ. को.-लोइ ।

तिन्नेंति वीर तिथ्थह गयौ। रहसि फेरि विष घत्त दिय ॥
जे मुरिय नृपति कविचंद 'कहि। तब जोगिनि पुर छल न लिय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

जैचन्द का कहना कि अनंगपाल जब शाह की सहायता ले कर आए थे तब शाही सेना को मैं नें ही रोका था।

अनंग पाल चक्कवै। साहि। गोरी पुकारै ॥
हय गय दल चतुरंग। मीर मीरह सब्बारै ॥
में बल रुकि साहिब्ब। सेन भग्गा षुरसानी ॥
बर अगस्ति कमधज्ज। समुद सोषै तुरकानी ॥
मी सरन रहन हिंदू तुरक। जग्गि जानि तिहि मंडयौ ॥
बिग्गारि जग्ग चहुआन गय। हिंदु जानि मैं छंडयौ ॥छं०॥६६२॥

कवि का कहना कि यदि आपने ऐसा किया तो राजनीति के विरुद्ध किया।

कोन लोइ जग्ग ते। बसत अप्पनी गमावै ॥
कोन जोर रस जोइ। दई जन कोन छलावै ॥
को तात बैर दुज्जनै। दया मानव को मुक्कै ॥
को विषहर बर डसै। दाव को घावह चुक्कै ॥
पहपंग जानि चहुआन अरि। बसि परि मर्क न मुक्कियै ॥
पुज्जै न सुबल कर चढ़त नहिं। घात अप्प अप चुक्कियै ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

जैचन्द का पूछना कि इस समय सर्वाङ्ग राजनीति का आचरण करने वाला कौन राजा है।

दूहा ॥ हँसि पुच्छौ पहुपंगने । तुम जानौ बहु मित्त ॥
को राजन तकि काल रत। को रत कोन विरत ॥ छं० ॥ ६६४ ॥

(१) मो-सुनि।

कवि का कहना कि ऐसा नीति निपुण राजा पृथ्वीराज है जिसने अपनी ही रीति नीति से अपना बल प्रताप ऐश्वर्य्य आदि सब बढ़ाया।

पद्धरी ॥ संभरिय पंग आयस प्रमान। बोलै सु छंद पाधरी माम ॥
संभरि सु बीर सुनि तत्त राज। नोतें सु बंध सब चलन साज ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

नीतिय सु लहिय लहौ सु राज। धन ध्रम्म किस्ति तिहिं तेज साज ॥
जीवन सु नीति नृप जमिन पीन। वह मरन बीर कुल ध्रंमहीन ॥
छं० ॥ ६६६ ॥

पुनः कवि का कहना कि आपका कलियुग में यज्ञ करना नीति संगत कार्य्य नहीं है।

उच्चरै चंद बरदाइ तब्ब। राज ह्व जग्य को करै अब्ब ॥
बलिराय प्रथम जुग जग्गि मंडि। बर बीर बंधि पाताल छंडि ॥
छं० ॥ ६६७ ॥

कट्टन कलंक ससि मंडि जग्ग। गज्जरे कुष्ट बर बीर अंग ॥
रघुराइ जग्य मंडे प्रमान। काकुष्ट धरिग तन कोपि ध्यान ॥
छं० ॥ ६६८ ॥

इच्छियै इच्छ गुर मंडि बीर। नव सीय दोष जज्जर सरीर ॥
श्री राम जग्य मंड्यौ विचारि। कुब्बेर बरषि सोब्रन्न धार ॥
छं० ॥ ६६९ ॥

मह दान कलहि षोडस्स होइ। राजसू जग्य मंडै न कोइ ॥
सुब्रै सरूप पंगु लम्भ कीय। देवरह ध्रम्म षडु बंध चीय ॥
छं० ॥ ६७० ॥

राजसू जग्य को करन भाय। मन होय पंच कलिजुग्ग राइ ॥
*सतजुग्ग जग्य सुत कवल कीन। हाटक सुमेर दच्छिना दीन ॥
छं० ॥ ६७१ ॥

---

*यहा से मो. प्रति में पाठ नहीं है आवांतर कथा की कल्पना होने से कुछ भाग के क्षेपक होने का भी संदेह है।

संकलित नग्ग तिहि संग च्यार। लूटंत विप्र हरि हथ्थ हारि ॥
ता पच्छ जग्य रचि मरुत रज्ज। दानह सु दीन बेपार दुज्ज ॥
छं० ॥ ६७२ ॥

नंषिय सु मग्ग लगि हेम भार। परि साठि सहस पंकति पहार ॥
गो दान दीन फुनि तिहि अलेह। तारक्क गंग रज बुंद मेह ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

आरंभ जग्य फुनि राज ऐल। तसु दान वेद कहि सकि न सैल ॥
नवषंड पूरि बेदी रवंन। डाभाग्र रहि न षाली अवंनि ॥
छं० ॥ ६७४ ॥

करि जग्य सेत कीरत्ति भूप। दस सहस नदी चल्लाय नूप ॥
मक्कि सक्किय न झेल आहुत्ति बन्हि। तजि कुंड गइय ब्रह्मा सरन्नि॥
छं० ॥ ६७५ ॥

पथ्थहि चराइ षंडीव जग्ग। मिट्टिय अजीर्न घन दिनौ तब्ब ॥
बलिराइ जग्य रच्चिय जिवार। उतपन्न भ्रंम वामनति वार ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

थपि जग्य जुधिष्टिर राज षंड। पनवार अप्प श्री कृष्ण मंडि ॥
गुह्वरिय तब्ब इह चंद भट्ट। जैचंद राइ सों विविध थट्ट ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

राजा जैचन्द का कवि को उत्तर देना।

सुनि श्रवन जंपि पहुपंग ताम। पर छोड़ करन कहु कौन काम ॥
उनमान अप्प अप्पनि अवन्नि। रष्षहि जु नाम सोइ भूप धन्नि ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

*साध्रम्म छोड़ जोगिन पुरेस। आमंत निरषि संची नरेस ॥
नीतह सु भंग किट्टी सुरज्ज। भनतंत जोति बिज्जरै सज्ज ॥
छं० ॥ ६७९ ॥

तजि नीत सोय अप इष्ट जान। कट्टै जु अद्ध दिन धरि प्रमान ॥
जुध सथ्थ साइं मुक्किये अंग। रष्षियै भ्रंम साईं सुरंग ॥
छं० ॥ ६८० ॥

* यहा से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ होता है।

बिन राजनीति ग्रह जो अरज्ज। घट घटहि नीर छिन गलति सज्ज॥
बिन राजनीति दुति तजिय जोन्ह। सोव्रन प्रतिम मंडिये बैन॥
छं० ॥ ६८१ ॥

इह सुनिय बैन पहुपंग बीर। मुष तत्त मुष्य कलह सरीर॥
न्रिप कलह साउ जैसो जनाय। कालंत कहिय कल किंत्ति गाय॥
छं० ॥ ६८२ ॥

चाटंक निमुष घटि कला जाइ। जानौ सुकाल छल हीन ताय॥
रत गुन अरत्त रत्ते न मोह। उप्पंम चंद जंपै सद्रोह ॥छं०॥६८३॥
रँग रंग गत्त मझीठ मन्न। कसहूँभ रंग रँग मोह पन्न॥
बर बिरत ओन लच्छिन प्रमत्त। नव नवी बाम इच्छा रमत्त॥
छं० ॥ ६८४ ॥

'सातुक्क सक्कहूं हित बढंत। आतंम मोह माया चढ़ंत॥
दिष्षौ ज मग्ग चिक्का सरंत। संसार कूप रस में परंत॥
छं० ॥ ६८५ ॥

राजा जैचन्द का कहना कि कवि अब तुम मेरे मन की बात बतलाओ।

दूहा ॥ सत सुवत्त कविचंद. मुष। तब पुच्छिय इह बत्त॥
हौं पुच्छो चाहूं सुमति। सो जंपौ कवि तत्त॥ छं० ॥ ६८६ ॥

कवि का कहना कि आप मुझे पान दिया चाहते हैं और वे पान रनिवास से अविवाहिता लौंडियां ला रही हैं।

जे त्रिय पुरिष रस परस बिन। उठिगराइ सु निसान॥
धवलग्रह संपन्न कहि। भट्टहिं अप्पन पान॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का पूछना कि तुमने यह कैसे जाना।

महल अदिट्ठ त्रिय दिट्ठ सुअ। क्यों ब्रम्मं बर कवि॥
सरसें बुधि ब्रम्हन कह्यौ। मुष दिष्षे नन रवि॥ छं० ॥ ६८८ ॥

(१) ए. कृ. को. सक्क हितहि बढंत।

कवि का कहना कि अपनी विद्या से।

कछुक सयन नयनह करिय। कछु किय बयन बषान॥
कछु इक लछिन विचार किय। अति गंभीर सु जानि॥छं०॥६८९॥

कवि का उन पान लाने वाली लौंडियों का रूप रंग आदि वर्णन करना।

तिन कह अथ्यि सु हथ्य किय। जे राजन ग्रह अच्छि॥
ते सुंदरि सब एक सम। चली सुगंधनि कच्छि॥ छं०॥ ६९०॥
षोडस बरस समुच्च ग्रिह। ले सब दासि सु जानि॥
मनों सभा सुरलोक की। चलि अच्छिरिय समान॥ छं० ॥६९१॥

उक्त लौंडियों की शिख नख शोभा वर्णन।

अर्धनराज॥ विहिंग भंग जो पुरं। चलंत सोभ नूपुरं॥
अनेक भंति सादुरं। अषाढ़ सोर दादुरं॥ छं०॥ ६९२॥
सुधा समान सथ्थही। सुगंध हथ्थ हथ्थही॥
चरन रत्त सोभई। उपम्म कब्बि लोभई॥ छं०॥ ६९३॥
बरन्न रत्त श्रीर जे। कसीस कासमीर जे॥
चरन्न एड़ि रत्त ए। उपम्म कब्बि पत्त ए॥ छं०॥ ६९४॥
सु वंक चंद अंकनं। सु राइ तेज संकनं॥
सुसंक जीवनं टरै। सुनें सरूप में करै॥ छं०॥ ६९५॥
नषादि आदि उप्पनं। सु काम केलि द्रप्पनं॥
चरन्न हंस सद्दही। उपम्म कब्बि बद्दही॥ छं०॥ ६९६॥
सुनंत छोड़ छंडयौ। चरन्न सेव मंडयौ॥
सु पिंडि बाल सोभई। सु रंग रंग लोभई॥ छं०॥ ६९७॥
सुरंग कुंकुमं भरी। पराद काम उत्तरी॥
सुरंग जंघ ताल से। कि काम षंभ आलसे॥ छं०॥ ६९८॥
नितंब तंब स्याम के। मनो सयन्न काम के॥
लवन्न अंग गंजही। सुगंध गंध पुंजही॥ छं०॥ ६९९॥

दिषंत डोर कंकनं। कटिं प्रमान रंकनं॥
टिकै न दिट्ठ लंकयौ। विलोकि अष्षि अंकयौ॥ छं०॥ ७००॥
उतंग तुंग तामयौ। कि भम्म लोभ कामयौ॥
सु रोमराजि दिट्ठयौ। हलंत बेनि पिट्ठयौ॥ छं०॥ ७०१॥
सु चंपि चंद गाढयौ। विपास काम चाढ़यौ॥
जुअन्न हीय सोभई। सु सिद्ध मेंन लोभई॥ छं०॥ ७०२॥
ग्रहन्न रंग चालई। सु लज्जि लंक हालई॥
उठंत कुच्च कंचुअं। कि तंबु काम रच्चयं॥ छं०॥ ७०३॥
बजे प्रमान सज्जनं। सुमेर अब्ब भंजनं॥
जु पोत पुंज सोभयौ। सु चित्त काम लोभयौ॥ छं०॥ ७०४॥
सु जित्ति राह थानयौ। सु चंद बैठि मानयौ॥
जराइ चौकि कंठयौ। उपम्म कब्बि तंठयौ॥ छं०॥ ७०५॥
ग्रहं जु इंद आइयं। चरन्न चंद साहियं॥
बनित्त सब्ब जंपयौ। सुराह थान अप्पयौ॥ छं०॥ ७०६॥
चिबुक्क चारु सोभयौ। उपम्म कब्बि मोहयौ॥
सु बाल अंग पत्तयौ। सु कंज मुक्कि जत्तयौ॥ छं०॥ ७०७॥
सुरत्त अद्ध [1]रत्तयौ। लहै न ओप अंतयौ॥
ओसाफ, कव्वि सोहयौ। प्रबाल रत्त मोहयौ॥ छं०॥ ७०८॥
सुधा समान सुष्षही। दसन्न दुत्ति रुप्पही॥
सु सद्द बद्द पंचमं। कलिन्न कंठतं कमं॥ छं०॥ ७०९॥
सुनी सु कव्वि राजई। उपम्म कब्बि साजई॥
ससंक सारगं हरी। प्रगट्ट काम मंजरी॥ छं०॥ ७१०॥
धनुक्क भौंह अंकुरे। मनों नयन्न बंकुरे॥
श्रवन्न मुत्ति ताल जे। अलक्क बंक आलुजे॥ छं०॥ ७११॥
सबद्द सोभ जो धुलै। रहंत लज्जि कोकिलै॥
अनेक हन्न जो कहै। तौ जम्म अंत ना लहै॥ छं०॥ ७१२॥

(१) ए.कृ. को.-जत्तयौ।

दासी का पानों को लेकर दरबार में आना और पृथ्वीराज को देख कर लज्जा से घूंघट घालना।

कवित्त ॥ आय निकट रापंग। अंग आरयन बेद बर ॥
अति सुगंध तंमोर। रंग जुत धरय जुथ्थ पर ॥
दिष्षि न्रिपति प्रथिराज। दासि आरोहि सीस पट ॥
मनहु काम रति निरषि। सकुचि गुर पंच मझि घटु ॥
कमधज्ज राज संकुल सभा। अकुल सुभर दरसंत दिस ॥
उस्सासे अंग उभ्भरि अरषि। परसपर सु अवलोकि [1]सिस ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

कवि का इशारा कि यह दासी वही करनाटकी थी।

चौपाई ॥ बहुआनह दासी सिर कंषिय। पुर रठ्ठौर रही दिसि नंषिय ॥
बिगरत केस पुरुष नहिं अंकिय। प्रथीराज देषत सिर ढंकिय ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

दासी के शीश ढांकने से सभासदों का संदेह करना कि कवि के साथ में पृथ्वीराज अवश्य है।

अरिल्ल ॥ ढंकित केस लषी भय [2]भूपह। दिन दिन दिस्सि कहां राई मह ॥
कविवर सथ्थ प्रथीन्रप आयौ। सो लच्छिन बर दासि बतायौ ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

उच्च सरदारों और पंगराज में परस्पर सुगबुग होना।

कवित्त ॥ अप्प अप्प भट अटकि। षटकि पट दासि मंडि सिर ॥
इक षवै क्रत बदन। एक षल नथ्थ जानि थिर ॥
इक कहै प्रथिराज। इक्क जंपय षवास घर ॥

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को.-भूमह।

दिष्षि दरस [1]रयसिंघ। कहत दीवान अज्ज भर ॥
कढ़िया [2]विकट केहरि कहर। जहर भार अंगय मनह ॥
संग्रही आय रिपु दुष्ट ग्रह। समय सह रा पंग कह ॥छं०॥७१६॥

दूहा ॥ भै चकि भूप अनूप सह। पुरष जु कहि प्रथिराज ॥
सुमति भट्ट [3]सथ्यह अखै। जिहि करंत तिय लाज ॥ छं० ॥ ७१७ ॥

कविचन्द का दासी को इशारे से समझाना।

अरिल्ल ॥ करि बल कलह स मंची मान्यौ। नहि चहुआन सरंन बिचान्यौ ॥
सेन सुबर कहि कवि समुझाई। अब तूं कलह करन इहां आई ॥
छं० ॥ ७१८ ॥

दासी का पट पटक देना और पंगराज सहित सब सभा का चकित चित्त होना।

समझि दासि सिर बर तिन ढंक्यौ। कर पल्लव तिन द्रग बर अंक्यौ॥
कव रस सबै सभा कमधज्जी। भैचकि भूप [4]सिंगिनी सज्जी ॥
छं० ॥ ७१९ ॥

उक्त घटना के संघटन काल में समस्त रसों का आभास वर्णन।

कवित्त ॥ बर अदभुत कमधज्ज। हास चहुआन उपन्नौ ॥
करुना दिसि संभरी। चंद बर रुद्र दिपन्नौ ॥
बीभछ बीर कुमार। बीर बर सुभट बिराजै ॥
गोष बाल भंषतह। द्रिगन सिंगार सु राजै ॥
संभयौ सन्त रस दिष्षि बर। लोहालंगरि बीर कौ ॥
मंगाइ पान पहुपंग बर। भय नव रस नव सीर कौ ॥
छं० ॥ ७२० ॥

दूहा ॥ सिर ढंकति सकुचिय तरुनि। सु बिधि चिंति स्वामित्त ॥
बहुरि सु जिम तिम ही किग्रौ। [5]लवन बिचारिय हित्त ॥छं०॥७२१॥

(१) मो.-रासिंघ। (२) मो. निकट। (३) ए.कृ. को.-अथ्थह।
(४) ए. कृ को. सिंगनि गुन। (५) ए. कृ. को.-नवन।

एक कहै बैठै सुभट। इनह सथ्थ प्रथिराज॥
ए न्रप जीवन एक है। तिनहि करत चिय लाज॥ छं०॥ ७२२॥

जैचन्द का कवि को पान देकर विदा करना।

अप्पि पान सनमान करि। नहि रष्यौ कवि गोय॥
जु कछु इच्छ करि मंगिहौ। प्रात समप्पों सोय॥ छं०॥ ७२३॥

राजा का कोतवाल रावण को आज्ञा देना कि नगर के पश्चिम प्रान्त में कवि का डेरा दिया जाय।

हक्कारयौ रावन न्रपति। के के सुक्कि सुवास॥
पच्छि दिस्सि जैचंद पुर। तिहि रष्यौति अवास॥ छं०॥ ७२४॥

रावण का कवि को डेरों पर लिवाजाना।

आयस रावन सथ्थ चलि। अयुत एक भट सथ्थ॥
अग्ग राइ सो संचरै। मेर उचावहि बथ्थ॥ छं०॥ ७२५॥

कवित्त॥ पच्छिम दिसि पुर चंद। सु कवि सौ न्रपति सपत्तौ॥
रावन सथ्थ समथ्थ। वचन सो कवि रस रत्तौ॥
धवल मझ्झ सपन्न। कलस कुंदनइ वज्र दुति॥
जठित थंभ जगमगहि। कनक वासन विचित्र भति॥
प्रज्जंक कनक मनि मुत्ति भति। मानिक मध्य विविद्ध भति॥
आसनइ पट्ट बहु मोल विधि। मनु मनि भूमि कि संझ क्रति॥
छं०॥ ७२६॥

दूहा॥ डेरा सु कवि विरंम तुम। करि कवि लघौ चरित्त॥
राजनीति रज गति चरित। चित गनि कहौ [1]सुचित॥
छं०॥ ७२७॥

रावण का कवि के डेरों पर भोजन पान रसद आदि का इन्तजाम करके पंगराज के पास आना।

(१) ए. कृ. को. चरित्त।

डेरा कराइ रावन चल्यौ। षान पान तिन ठाहि॥
सुष्य सुषासन आरुहै। तहां पंग न्रप आहि॥ छं० ७२८॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का राजसी ठाठ से आसीन होना और सामंतों का उसकी मुसाहबी में प्रस्तुत होना।

कवित्त॥ बोलि लियौ सब सथ्थ। तथ्थ प्रथिराज 'सुअत्तं'[२]॥
सलिता जेम समुद्द। मुद्द पति मिलन सपत्तं॥
चामर छच रषत्त। लियै सामंत सपत्ते॥
रति सुभ्यौ राजान। मझि ग्रह पति रवि रत्ते॥
आए सु सुहर सब चंदपुर। देषि अनूपम षंति तथ॥
सामंत नाथ बरदाइ बर। आय सपत्त सब्ब सथ॥ छं०॥ ७२६॥

सब सामंतों का यथास्थान अपने अपने डेरों पर जमना।

दूहा॥ सथ्थ सपत्तौ तथ्थ सब। श्रित सामंत रु सूर॥
हय हयमाला बंधि गै। सुभि राजन दर नूर॥ छं०॥ ७३०॥

अरिल्ल॥ मंदिर बंटि दिए सब भूपन। आप रहै निज ग्रेह अनूपन॥
हीर हिरंनन की दुति पंडिय। तापर लाल परग्गहि मंडिय॥
छं०॥ ७३१॥

पृथ्वीराज के डेरों पर निज के पहरुवे बैठना।

दिय डेरा सामंत समानह। फिरि आवास सुवास सबानह॥
दर रष्ये दरबार सुजानह। बिन आयस न्रिप रुक्कि परानह॥
छं०॥ ७३२॥

पंगराज का सभा विसर्जन करके मंत्रियों को बुलाना और कवि के डेरे पर मिजवानी भेजवाना।

दूहा॥ सभा विसरजी पंग पहु। गय मधि साल विचित्त॥
तहां सुषासन इंद्र सम। तिष्ठ सुमंचिय मंच॥ छं०॥ ७३३॥

(२) ए. कृ. को.-सुअप्पं।

कवित्त ॥ तव राजन जैचंद। बोलि सोमिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार सुजानह ॥
दियौ राइ आएस। जाहु सो कवियन थानह ॥
विविध अन्न व्यंजनह। सरस रसरंग रसानह ॥
तंमोर कुसुम केसरि अगर। कट्ठ कपूर सुगंध सह ॥
आदर अनंत उपचार बर। करि सु प्रसन्नह कविय कह ॥छं०॥७३४॥

सुमंत का कवि के डेरे पर जाना, कवि का सादर मिजवानी स्वीकार करके सबको विदा करना।

तब आयस जैचंद। मंनि सो मिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार प्रमानह ॥
बचन बंदि जय जंपि। लिए उपचार सार सब ॥
गये कव्वि सुस्थान। रुके दर सथ्थ सब्ब जब ॥
दर रष्षि कह्यौ दरबार न्रप। भय षवास संबोलि सह ॥
धरि वस्त विवह अग्गै सु कवि। विविध विवरि बर लष्ष लहु ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

सुमंत का जैचंद के पास आकर कहना कि कवि का सेवक विलक्षण तेजधारी पुरुष है।

चोटक ॥ कवि आदर किन्न सु पंग दियं। किय विप्र सु विप्रह जीति जियं॥
फिरि मंगिय सीष सु पंग रजं। लषि नीति सु कित्ति अनंत सजं॥
छं० ॥ ७३६ ॥
रज मित्ति सु गत्ति अनंत भती। महनूर अदब्ब न आइ मती ॥
कवि भत्त सरूप सु भूप बरं। तिन तेज अजेज असेस भरं ॥
छं० ॥ ७३७ ॥
चित चक्रित मंचि मुकंद गुरं। भए देषि बिमन्न प्रइन्न नरं ॥
गय पंग दरं सुधि पंग लही। चिचसाल सुधूपह बोलि तही ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

सब पुच्छिय कव्वि चरित्र कला। कहि मंचिय [1]मोसहु बार न ला ॥
कहै मंचिय विप्र सु राज सुनै। कवि मंनिय गत्ति न चित्त गुनै
छं० ॥ ७३९ ॥

रज रीति अनूप अदब्ब लही। छित देषि अनूप न जाय कही ॥
छित रूपहि इंद्र समान लजं। बल तेज अजेज सु राज सजं ॥
छं० ॥ ७४० ॥

कवि सथ्थ जु छितह तेज नवं। भर पंग निरष्षिय नेन सबं ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

जैचंद के चित्त में चिन्ता का उत्पन्न होना।

दूहा ॥ सुनि चित्तह चिंत्यौ न्रपति। कवि यह कह कथ चित्त ॥
गुन गंभीर सु गंठि हिय। गौ दिय सिष्ष सु रुत्त ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

रानी पंगानी के पास कविचन्द के आने का समाचार पहुंचना।

चौपाई ॥ सुनिय बत्त न्रप पंग सु राजह। आयौ कवि चहुआन सु लाजह ॥
सुनि जुन्हाइय चित्त सु चिंतिय। बोलि सहचरि मंत सुमंतिय ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

रानी पंगानी का कवि के पास भोजन भेजना।

गाथा ॥ इह कवि दिल्लियनाथो। मैं सुन्यौ बीर बरदाई ॥
तिहि नव रस भाष छ भनियं। पट्टाइयं असनं[2] तथ्थं ॥छं०।७४४॥
तिहि सषि बोलि सुथानं। चिचनि चिच केसरी समुषं ॥
लीला विमल सु बुद्धी। सा बुद्धी लग्गि चरनायं ॥ छं० ॥ ७४५ ॥

दूहा ॥ पंगराइ बर बीर बर। सेंन अप्पि सहलीन ॥
दिसि जुन्हाइ असीस कवि। हुकम कहन न्रप दीन ॥छं०॥७४६॥

पद्धरी ॥ चौवार स्याम बर पंग ग्रेह। ग्रिह मद्धि रतन कै मद्धि केह ॥
षोड़स बरष्ष अप्रपत्त बाल। [3]दिष्षियै पंग भामिनि विसाल ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

(१) मो.-सां माति। (२) मो.-तये। (३) ए. कृ को. दिष्षी सु।

दिषि हरन कपि करवत्त काम। मनौं मीन मीन विस्राम ताम॥
पद्‌मिनिय हंस चित्रनिय बाल। सोभै सुपंग प्रिह मुह बिसाल॥
छं०॥ ७४८॥

पद्‌मिनी कुटिल केसह सुदेस। अस्तनह चक्र वक्रह सुनेस॥
बरगंध पद्‌म सुर हंस चाल। जन औभ रत्त म्रिग अंकि साल॥
छं०॥ ७४९॥

कुलवंत सील अंमृत वचन्न। पदमिनी [1]हरै पहुपंग मन्न॥
आसीस भट्ट बोल्यौ प्रकार। चित हरै चंद मुषचंद मार॥
छं०॥ ७५०॥

पंगानी रानी "जुन्हाई" की पूर्व कथा।

कवित्त*। सूर किरनि तें प्रगटि। रुचिर कन्यका तपत्या॥
तरवर तुंग कैलास। माष संग्रहि कर सत्या॥
झूलंती संपेषि। भयौ भुअपत्ति सु आसिक॥
एक पाइ तय मंडि। धारि द्रग अग्ग सु नासिक॥
वाचिष्ट रिष्यि सु प्रसन्न होइ। रवि प्रारथ्यि विवाह किय॥
जैचंद राय बरदाइ कहि। तिहि सम जुन्हाइ लहिय॥ छं०॥ ७५१॥

अरिल्ल॥ पंग हुकम अरुदान जुन्हाई। भट्ट न्रपति चहुआन सुनाई॥
रहि सि चौय चित दै बहु बढ्ढै। [2]जनों किरन कल पत्रम चढ्ढै॥
छं०॥ ७५२॥

दासियों की शोभा वर्णन।

मुरिल्ल॥ सब अंग सु रंगिय दासि घनं। घन हथ्थय पीत पटंबरनं॥
घनसार सुगंध जु हथ्थ धरै। तिन उप्परि भोरन भोर परै॥
छं०॥ ७५३॥

रानी जुन्हाई के यहां से आई हुई सामग्री का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-रहै। *यह कवित्त मो.-प्रति में नहीं है और क्षेपक जान पड़ता है।
(२) ए. कृ.-जनों कि हथ्थ कल पत्रम चढ्ढै।

कवित्त ॥ सहस एक हेमंग । सहस दोइ पीत पटंवर ॥
सहस अट्ठ नव नालि । केलि [1]कप्पूर सु ठुंमर ॥
म्रिग जु नाभि निक रासि । देस गवरी सा षंगी ॥
मुक्कि गंध कावीन । सेत बंधह भारंगी ॥
दारिम्म विजोरी द्रुष्ष वर । विमल मद्द मोदक भरन ॥
अरु गंध पंग संभारि करि । जाति जुन्हाई संधि रन ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

हनूफाल ॥ मिलि मंजरी गुन वेलि । मदनावली गुनकेलि ॥
मालती अविज सरूप । लीलया कमला अनूप ॥ छं० ॥ ७५५ ॥
मभ्भ छिय सुलष्ष सुबुद्धि । लषि नेंन लषन सु बुद्धि ॥
[2]कंमारि माला मुष्ष । सम हंस गोरिय रुष्प ॥ छं० ॥ ७५६ ॥
वर बीर सषि सम लाज । पुच्छिय सु स्वामिनि काज ॥
कर जोरि आयस मंगि । बहु मषिय बोलिय संग ॥ छं० ॥ ७५७ ॥
जुन्हाइ जंपिय तब्ब । पति दिल्लिय आयौ कब्ब ॥
मिष्टाइ लै [3]तहां तथ्थ । [4]सम जाहु सषिसम सथ्थ ॥ छं० ॥ ७५८ ॥
मिष्टाइ विवह विचित्र । मिष्टाइ रुप पवित्र ॥
सें तीन बानय पूरि । आच्छादि अवर सनूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥
रस अगर पंच सुअट्ठ । करपूर पूरित जट्ठ ॥
केसरि सद्रोन सदून । म्रगमद्द थालन रुन ॥ छं० ॥ ७६० ॥
तंमोलि चौसट्ठि पान । द्वै सहस हेम जुनान ॥
हिम हंस एक अनूप । जम जपै चातुर भूप ॥ छं० ॥ ७६१ ॥
मानिक्क जटित अमूल । मनि विचित्र जानि अतूल ॥
मरकंति मनि विन रेह । वर द्रद्ध मुत्ति जलेह ॥ छं० ॥ ७६२ ॥
मनि जटित विवह विराज । वर बसन धारित भाज ॥
सुभ सुजल मुत्तिय माल । वासंसि सुभ धरि थाल ॥ छं० ॥ ७६३ ॥
वर विचित्र अन्न अनंस । सुभ गत्ति स्वाद सुमंस ॥
मिष्टाइ जाति न संष । बहु रूप राजित अंष ॥ छं० ॥ ७६४ ॥

(१) ए.-ठुंमर । (२) ए. कृ को. कम्पारि ।
(३) ए. कृ. को.- थह । (४) ए. कृ को.-लै ।

अनि वस्त विवह विभंति। गनि जाति कौन गिनंत ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६५ ॥

दूहा ॥ सु बन सिंगारिय सह सषिय। विवह वस्त लिय सब्ब ॥
सो निज स्वामिनि अंग सुनि। क्रमिय सु अथ्यह कब्ब ॥छं०॥७६६॥

कवि के डेरे पर मिठाई लेजाने वाली दासियों का सिखनख श्रृंगार वर्णन।

लघुनराज ॥ रजंत बाल सा सषी। द्रगंत बालता तिषी ॥
सिंगारि साज सब्बयौ। दिषै छरीब गब्बयौ ॥ छं० ॥ ७६७ ॥
सु गोपि वास रासयं। तमोर भष्षि आसयं ॥
बदन्न रूव रज्जयौ। सरद्द [1]बिंब लज्जयौ ॥ छं० ॥ ७६८ ॥
ढुरंत मुत्ति बेनियं। विराजि काम नेनियं ॥
सुभाल कोर बासनं। उही सुमुच्छ भासनं ॥ छं० ॥ ७६९ ॥
चाटंक सोभि अमरं। तड़ित्त दुत्ति संमरं ॥
[2]खंत कढ्ढि मेघरं। चकोर साव से सुरं ॥ छं० ॥ ७७० ॥
सुरंस हंस हंस यौ। समूह साव रंसयौ ॥
सुरं समथ्थ कामिनं। समोहि मुट्ठ वामिनं ॥ छं० ॥ ७७१ ॥
वरष्य अठ्ठ अठ्ठयं। सवंक कंपि तठ्ठयं ॥
हलंत हीय हारयं। समुठ्ठि काम कारयं ॥ छं० ॥ ७७२ ॥
विचित्त हंस कामिनी। मयंद मत्त गामिनी ॥
सषी सुबीय सष्षयं। क्रमंत अंग पष्षयं ॥ छं० ॥ ७७३ ॥
प्रवीन बीन बद्दनं। सुरन्न षड्ड अद्दनं ॥ ॥
विचित्त काम जंकला। कटाषि बाल अष्षिला ॥ छं० ॥७७४ ॥
विसाल बैन चातुरी। मनो सु मोहिनीं जुरी ॥
सु सामं दान भेदयौ। कुसल्ल दंड षेदयौ ॥ छं० ॥ ७७५ ॥
कला सु अट्ठ अठ्ठयौ। सुभेव भाव गठ्ठयौ ॥
सभाव चन्न सोभिलं। बदंत काम कोकिलं ॥ छं० ॥ ७७६ ॥

(१) मो.-रूप। (२) मो. रचांति।

चलौं सु सब्ब संजुरी । मनो सुइंद अच्छरी ॥
चढ़ी कि डोलियं बरं । सरोहि कै हयं बरं ॥ छं० ॥ ७७७ ॥
सषी सु पंचयं सयं । गमंत सथ्थ सेनयं ॥
लियं सु सब्ब साजयं । सु अथ्थि रिद्धि राजयं ॥ छं० ॥ ७७८ ॥
सपन्न कव्वि थानयं । दरं सु रष्षि मानयं ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७९ ॥

कवित्त ॥ पंकज सुत[1] सोवंत । फेरि करवट्ट प्रजंकह ॥
असुर उपजि अनपार । धरनि कज मंडिय कंकह ॥
संझ समय तब ब्रह्म । देह तजि रंभ उपाइय ॥
रूप अचंभम देषि । रहे दानव ललचाइय ॥
नष सिष मानहु तिहि सम । रचे संप्रतीक सहचरि सकल ॥
कविचंद थान कमधज पठय । कलन सु छल पिथ्थह अकल ॥
छं० ॥ ७८० ॥

उक्त दासी का कवि के डेरे पर आना ।

अरिल्ल ॥ मतु दासी न्रप थान सपत्ती । नूपर सद कवियान प्रपत्ती ॥
चंद चिंत उप्पय बर भारे । जुथ वजे मनमथ्थ नगारे ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

दरवान का दासी को कवि के दरबार में लिवा जाना ।

गाथा ॥ सषि दरबार सपन्नी । आदर दीन तथ्थ दरवानं ॥
दर गय अंदर राजं । नइबेदयं तथ्थ सब्बायं ॥ छं० ॥ ८७२ ॥

चौपाई ॥ बोलिय मझ्झ सु कव्विय बाल्लह । तब सिंघासन छंडि भुआलह ॥
आय सषी सब मझ्झ स बुल्लिय । आदर विवह वानि कवि किल्लिय ॥
छं० ॥ ७८३ ॥

दासी का रानी जुन्हाई की तरफ से कवि को पालागी कहना और कवि का आशीर्वाद देना ।

(१) को.-सोवत्त ।

विवह विचित्र धरी मुष अंबह। कही असीस जुन्हाइय कब्बह ॥
तुम त्रिकाल दरसी बुधि पाइय। बहु आदर दिन्नौ जु जुन्हाइय ॥
छं० ॥ ७८४ ॥

तुम चहुआन सु भट्ट समत्तिय। अगम सुमग गत लही सु गत्तिय[1]॥
मंगिय विद्दा सु कव्वि प्रसन्निय। देषि चरित रजगत्ति सु[1]मन्निय॥
छं० ॥ ७८५ ॥

दासी का रावर में वापस जाकर रानी से कवि का आशीर्वाद कहना।

गति मति अंतर भेद सु जन्निय। देषि चरित अचिज्ज सु मुन्निय ॥
फिरि आई जु जुन्हाइय थानह। पयलग्गी विधि कही विनानह॥
छं० ॥ ७८६ ॥

गाथा ॥ कहि आसीस सु कव्वी। सुप्रसन्नों दिष्टतो भासं ॥
[2]तो तन चिंता भंगो। कथ्थिय आसीस केलि कब्बीसं॥ छं॥ ७८७॥
रामा रज गति [3]लद्धी। आदर अदब नीति अनभूतं ॥
कवि यह अथ्यह राजं। संपिष्पय कह कहं नाई॥ छं०॥ ७८८॥
सुनि सा बत्त जुन्हाई। दिय निज कम्म सब्ब सपिएनं ॥
निज हिय चिंता ठानी। संपन्नी धवल मभभ्भ नं॥ छं०॥ ७८९॥

यहां डेरों पर यथानियम पृथ्वीराज की सभा का सुशोभित होना और राजा का कवि से गंगाजी के विषय में प्रश्न करना।

दूहा ॥ तहां सु सूर सामंत मिलि। मधि[4]नायक कवि चंद॥
प्रथीराज सिंघासनह। [5]जनु परिपूरन इंद ॥ छं०॥ ७९० ॥
अहो चंद इह दंद भलि। हंज दरसन किय गंग ॥
मन उछाह पुनि मुक्क भयो। कछु बरनन करि रंग ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

(१) ए. कृ. को. गत्तिय, मत्तिय।
(२) ए. कृ को-"तो तन चिंतिय भंगो कही अमीस केलि कब्बीसं"।
(३) मो. रिद्धी।
(४) ए. कृ. को.-ताकिय।   (५) मो. मनों प्रथीपुर इंद।

कविचन्द का गंगाजी की स्तुति पढ़ना ।

कहै कव्वि नृप राज सुनि । मो मुष रसना एक ॥
इह सु गंग सुर मुनि जिते । [1]लहहि न पार अनेक । छं० ॥ ७९२ ॥

भुजंगी ॥ मुनी साधु जोगी जती आय जेते । गुनी ग्यान ध्यानं प्रमानं न तेते ॥
धरा रोम ते व्योम तुम्मं तरंगे । बसी ईस सीसं जटा जूट गंगे ॥
छं० ॥ ७९३ ॥

चतूरान पानं ब्रह्मंडं कमंडं । चयीकाल संभ्या रिषी दोष षंडं ॥
समाधिं धरै कूल साधून साधं । तुही एक तें चंद चक्कोर राधं ॥
छं० ॥ ७९४ ॥

तुमं सेव भागीरथें जानि कीनी । सबें मेलि जाचानि तू संग दीनी ॥
छुती स्वर्गवै लोक धारा अपारं । धसी प्रव्वतं पेलि नाना प्रकारं ॥
छं० ॥ ७९५ ॥

प्रवाहं अमानं प्रमानं न जानं । मनो एक मुष्षं मती मूढ़ ग्यानं ॥
कंपै पाप जो भीर पत्तं सु मत्तं । रहै दिष्ष संसिष्ष तज्जार भत्तं ॥
छं० ॥ ७९६ ॥

तुही सग्गुनं निग्गुनं सुद्धि कासं । तुही सब्ब जीवं सजीवं स सासं ॥
तुही राजसं तामसं सातुवंती । तुही आहितं हित्त चितं चरंती ॥
छं० ॥ ७९७ ॥

तुही ज्वाल माला कुलाला कुरष्टी । तुही बारिधारा अधारं अरिष्टी ॥
तुही वर्न भेदे विसंताहि साधै । तुही नाद रूपी सजोगी अराधै ॥
छं० ॥ ७९८ ॥

तुंही ते हरी तूं हरी तेन औरै । जिसौ भेद जो कंचनं टूक कोरै ॥
लषै को गती ता मती देव गंगे । रटै कोटि तेतीस तो नाम अंगे ॥
छं० ॥ ७९९ ॥

जिसौ वारि गंगा तरंगे प्रकारे । तिसौ तोमने अप्प अप्पं अपारै ॥
करै पाप भारं फना व्याल कंपै । रसन्नाजि कै देवि तो नाम जंपै ॥
छं० ॥ ८०० ॥

(१) मो.-लहत ।

त्रिभारं करै पाप भारंत दूरं। रची पुन्य कै व्यारवै भ्रम्म हूरं॥
सते साध गहि लोक तें सीस रष्यौ। तबै बेद भय बेद सब छेद नंष्यौ॥
छं० ॥ ८०१ ॥

अमी आइ अंगाइ त्रिमया न किन्नौ। हुंतौ दोष आदिष्ट गारिष्ट भिन्नौ॥
तुंही देषि करि तेज कप्पौ समुद्दं। छल्यौ सब्ब करि देवि छंडयौ सु चंदं॥
छं० ॥ ८०२ ॥

धरे सहस सत रूप आनूप भारी। कला नेक नेकं अनेकं प्रकारी॥
रमी रंग रंगं तरंगं सरीरं। जिसौ भेद पय पान जान्यौ न नीरं॥
छं० ॥ ८०३ ॥

जिसौ सिंह अरु सगति भयभीत भारी। जिसौ मुत्तिहर मूर तें भाकभारी॥
जिसौ अप्प अप्पै अपारं अनंतं। तिसौ मोष नर भेद पावै तुरंतं॥
छं० ॥ ८०४ ॥

सिया रूप हुय भूप रावन सहार्‌यौ। भये देवकी अंस चानूर मार्‌यौ॥
इसौ कौन सहगत्ति सों कहै ग्यानी। हुई द्रोपदी होइ भारथ्थ ठानी॥
छं० ॥ ८०५ ॥

[1]समी सीस तें देवि देवी मुरारें। रमी सीस तें माहिषं पाइ ठारे॥
[2]हुई कालिका काल जिम दुष्ट मारै। हुई संभनिस्संभ धायौ प्रहारै॥
छं० ॥ ८०६ ॥

तुंही ग्रंथ गेनं सिवं संग धंगे। तुही मोचनी पाप कल अलष गंगे॥
दयालं दया जानि चवि चंद बानी। जयं जान्हवी जोति तू पापहानी॥
छं० ॥ ८०७ ॥

श्री गंगा जी का माहात्म्य वर्णन।

चन्द्रायण॥ मनसा एक जनम्म महा अघ नासही।
दरसन तीन प्रकारति पाप प्रनासही॥
न्हायै दुष्ष समूह मिटै भव सात के।
अंब हरै लगि बूंद सहसति गात के॥ छं० ॥ ८०८ ॥

(१) मो-रमी। (२) ए. कृ. को.-हे।

गंगाजी के जलपान का माहात्म्य और कन्ह का कहना कि धन्य हैं वे लोग जो नित्य गंगाजल पान करते हैं।

गाथा ॥ सो फल निरषित नयनं। सो फल गुन गाइयं बैनं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पिअत अंब अंजुलयं ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

भुजंगी* ॥ जलं गंग न्हावै कितीकं कलत्तं। अलंकार चीरं सरीरं सहित्तं ॥
सरं केस पासं नितंबं बिलंबे। तिलं तेल फुल्लेल सीचें प्रलंबे ॥
छं० ॥ ८१० ॥

द्रगं कज्जलं म्रग्गयं कस्सतूरी। करी कच्छपं भीजिय हथ्थ चूरी ॥
मुकत्ताफलं सीपयं कीट पट्टं। विलेपन कीनें सुगंधं सुघट्टं ॥
छं० ॥ ८११ ॥

मुषं नाग वल्ली विरष्षं वरंगं। महंदी नषं जावकं रंग पग्गं ॥
इतें जीव पायं तुरन्तं मुकत्ती। कवीचंद जंपी न झूटी उकत्ती ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

धरे ध्यान चौहान किन्नौ सनानं। अचिज्जं कहा पावनं मोषथानं ॥
सुने क्रन्न तामं कहै कन्ह काकौ। पियें अंब निसि दीह वड़भाग ताकौ ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

दूहा ॥ इय गंगा राजं न थुति। सुनौ रत्ति धरि ध्यान ॥
जनम मरन दोऊ सधै। जो उपजै इह थान ॥ छं० ॥ ८१४ ॥

सामंत मंडली में परस्पर ठट्ठा होना और बातों ही बात में पृथ्वीराज का चिढ़ जाना।

तब सामंतन चंद कहु। सब पुच्छिय न्रप बत्त ॥
जु कछु सत्य सँबोध भो। निठुररायह तत्त ॥ छं० ॥ ८१५ ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

अरिल्ल ॥ तत्त करे न्त्रिप निठ्ठुर बुझ्झिय। राजा चंद प्रहास समुझ्झिय ॥
आदि दिये कमधज्ज सु रायहि। दासि समेत कह्यौ सब भायहि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

आचिज एक भयौ बहुआनह। मान सबै सुक्किय न्रप पानह ॥
भट्ट निवेस करै कर जोरहि। छच धर्‌यौ कहि कोन निहोरहि ॥
छं० ॥ ८१७ ॥

फेरि कहौ कविचंद सु बज्जिय। पंग प्रताप गयौ तप छज्जिय ॥
पान सु पात तुम्हें गर थप्पिय। भट्ट कहै कर छुग्गर [1]भप्पिय ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

संभरि राव तमंकि रिसानौं। में भ्रम काज धर्‌यौ कर पान्यौं ॥
काल्हि सु भेस करौं भुअपत्तिय। कंप न तोहि धरद्धर छत्तिय ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

कन्ह का कविचन्द से बिगड़ पड़ना।

भट्ट सों कन्ह निपट्ट रिसानौ। तूं सामंत न तोर घरानौ ॥
तूं कवि देत असीसन छुट्टहि। सूर सीस दे सस्त्रन [2]जुट्टहि ॥
छं० ॥ ८२० ॥

कविचन्द का राजा को समझाना और सब सामंतों का कन्ह को मनाकर भोजन प्रसाद करना।

कवित्त ॥ [3]कपह जग्ग मंडयौ। न्योंति जम इंद्र बुलाइय ॥
दिग्गविजय तँह करत। फौज लै रावन आइय ॥
मरन अचिंत्यौ जानि। चिंत कायरपन आदर ॥
वायस करकोटिया। रूप धरि उग्गरि दादुर ॥
दिय श्राद्ध पिंड जम कग्ग कौं। रंग क्रकेटक सुरपती ॥
मंडिक मदद्ध गर्‌यौ वरुन। चंद कहत सुनि नरपती ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

---

(१) ए. क्रु. को.-घलिय। (२) मो. छुट्टहि। (३) क्रु.-कगह, को.-कवह।

अरिल्ल ॥ तब परिहार वीर वीरन वर । भोजन सह सबै कीनौ नर ॥
राव गोयंद इंद वर उट्ठे । धरिय कन्ह निज बाह स रुट्ठे ॥छं०॥८२२॥

सब का शयन करने जाना ।

तो लगु भोजन भष्य संपज्जे । हसि करि मंन सुचेतन लज्जे ॥
हो सब साथ सनाथ सयानौ । सूर कहै कब होइ बिहानौ ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

वार्ता ॥ जब लगि मिष्टान पान सरसे । तब लगि अंबर [1]दिनयर दरसे ॥

पृथ्वीराज का निज शिविर में निःशंक होकर सोना ।

दूहा ॥ भइत निसा दिन मुदित बिनु । उडुपति तेज विराज ॥
कथक साथ कथ्थहि कथा । सुष्य सयन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८२४ ॥
अदरस दिनयर देषि करि । तलप प्रजंक असंक ॥
मनहु राज जोगिनिपुरह । सोभै सेंन निसंक ॥ छं० ॥ ८२५ ॥
कोतर रत रत चित्त तह । मानों थान बिहंग ॥
जुवती जन मन कुमुद बसि । मनु मनि सध्य भुअंग ॥छं०॥८२६॥

जैचंद का कवि को नाटक देखने के लिये बुलवाना ।

ओसर पंग सुरत्त किय । चंद सुजानह भट्ट ॥
कहै जाय जुग्गिनि पुरह । नव रस भास सुघट्ट ॥ छं० ॥ ८२७ ॥
और प्रपंच विरंच कौ । निजरि पंग लगि क्रूर ॥
साच दिषावन राग रँग । चंद बुलाय हजूर ॥ छं० ॥ ८२८ ॥
जाम एक निसि बीति वर । बोले भट्ट नरिंद ॥
ओसर पंग नरिंद कौ । देषहु आय कविंद ॥ छं० ॥ ८२९ ॥
एकाकी बोल्यौ सु कवि । ओसर देषन राय ॥
राज नींद मुक्यौ करत । पौरि संपतौ जाइ ॥ छं० ॥ ८३० ॥

(१) ए. कृ. को.-दिनरय ।

जैचंद की सभा की रात्रि के समय की सजावट और शोभा वर्णन।

मुरिल्ल ॥ सुनि न्नप भट्ट महल्ल तजि आइय। देषत पंग सु ओपम पाइय॥
नहि रावन्न सजै सु प्रमानं। क्रम लछी ¹गिर अंध गजानं॥
छं० ॥ ८३१ ॥

दूहा ॥ म्रदु म्रदंग धुनि संचरिय। अलि अलाप सुध व्यंद ॥
ताल त्रिग्गम उपंग सुर। औसर पंग नरिंद ॥ छं० ॥ ८३२ ॥

कवित्त ॥ दस हजार मन तेल। सित्त मन अगर फ,लेलह ॥
सत्त सहस सोव्रन्न। जरित दीवी मित मेलह ॥
सहस पाल असुहेज। षेल षाना सु जनावर ॥
सीह म्रग्ग सोहन्न। कपिल हस्ती बहु नाहर ॥
पंषी अनेक जलचर प्रबल। जल थल प्रव्रत इक हुए ॥
जैचंद राइ तप तेज थी। कु निजरि कोई नह जुए ॥ छं० ॥ ८३३॥

दूहा ॥ ज्वलन दीप दिय अगर रस। फिरि घनसार तमोर ॥
जमनि कपट उच्च महल मुष। जनु सरद अभ्भ ससि कोर ॥
छं० ॥ ८३४ ॥

राजा जैचन्द की सभा में उपस्थित नृत्तकी (वेश्याओं) का वर्णन।

तात धरम्मह मंत इह। रत्तह काँम सु चित्त ॥
काम बिरुद्ध निविद्ध किय। न्नत्य नितंबिनि नित्त ॥ छं० ॥ ८३५ ॥

भुजंगी ॥ सजी पातुरं नट्ट दीसै सु पंगं। चिहुं पास पासं अतंकी अभंगं ॥
उड़ी धाम अग्गार ने धाम छाई। तिनं देषतें चंद ओपंम पाई
॥ छं० ॥ ८३६ ॥

सुरं नूपुरं सद्द बद्दं विहंगं। बरं तारि ता रूप पावं सुरंगं ॥
करै जमनिकं पट्ट दीसै सुरंगी। गतं चंदलं चंद उप्पम्म मंगी ॥
छं० ॥ ८३७ ॥

(१) मो.-गिरधंगज।

हरं बार पुब्बं मनंमध्य सज्जं। बंध्यौ काम आरं मनी सीम [1]मज्जं॥
बजै नूपुरं सद्द पर सद्द धंमै। बजै दुंदभी समर सम राज क्रम्मै॥
छं० ॥ ८३८ ॥

नगं हेम बर जटित तन घन विराजै। तिनं ओपमा चंद बरदाइ साजै॥
लगी नौग्रहं उग्रहं काम लग्यौ। मनों आतमा आतमा भाव जग्यौ॥
छं० ॥ ८३९ ॥

तिनं भट्ट संकै कहै बाल संचै। तिनं कारनं पातुरं साथ नंचै॥
कटिं छुद्रघंटी रुलंती विराजै। तिनं उप्पमा सुबर कविचंद साजै॥
छं० ॥ ८४० ॥

दिपै धनुष कामं षिजै सिंभ बासी। लगै पंचग्रह चंचलंतं धरासी॥
रुरै हार भारं सु मुत्ती अनूपं। दमं मुष्य कंती प्रतीब्यंब रूपं॥
छं० ॥ ८४१ ॥

कथी चंद बंदी उपम्मा अनूपं। करै चंद आरुन्न जल सेत कूपं॥
रुरै बाल कंठं समं [2]मुट्ठि पुंगं। कहै चंद कव्वी उपम्मा [3]अनुज्जं॥
छं० ॥ ८४२ ॥

तिनं भेष सोहै फिरै बंध नंगं। धरै चंद तत्तं हरं मध्य गंगं॥
बरं भूषनं दूषटं बाल साजै। बरं अट्ठ दूनं सिंगारं विराजै॥
छं० ॥ ८४३ ॥

वेश्याओं का सरस्वती की वंदना करके नाटक आरंभ करना।

साटक॥ दीपांगी चंद्रनेत्रा नलिन अलि मिली, नैन रंगी कुरंगी॥
कोकाषी दीर्घनासा सुसर कलिरवा, नारिंगी सारदंगी॥
इंद्रानी लोल डोला चपल मति धरा, एक बोली अमोली॥
पूइया बानी बिसाला सुभग गिरवरा, जैत रंभा सु बोली॥
छं० ॥ ८४४ ॥

(१) मो.-वज्जं। (२) ए. कृ. को.-कुच्च। (३) ए. कृ. को.-लवुजं।

नृत्यारंभ की मुद्रा वर्णन।

दूहा ॥ पुहपंजलि दिसि वाम कर। फिरि लग्गी गुरपाइ ॥
तरुनि तार सुर धरिय चित। धरनि निरष्षय चाइ ॥
छं० ॥ ८४५ ॥

मुरिल्ल ॥ सजि नग पातुर चातुर चल्ली। कैवर चंद चंद वर वुल्ली ॥
देषि सुबर ओपम [1]वर भल्ली। मदन दीप मालासजि चल्ली ॥
छं० ॥ ८४६

मंगल आलाप।

दूहा ॥ मंग प्रथम जंपं जपै। जै गजमुष अग्रजाइ ॥
सेत दंत पाठक उदै। सोभै पंगुर राइ ॥ छं० ॥ ८४७ ॥

वेश्याओं का नृत्य करना; उनके राग, वाज, ताल, सुर,ग्राम, हाव भाव आदि का और उनके नाट्य कौशल का वर्णन।

नराज ॥ उअं अलाप मड्डिता सुरं सु ग्रामपंचमं।
षडंग तप्प मूरछं मनंत मान संचमं ॥
निसंग थारंत अलप्प जापते प्रसंसई।
दरस्स भाव नूपुरं इतन्न तान नेतई ॥ छं० ।. ८४८ ॥
सुरंसपत्त तंच कंठ[2]बोधि राग साभरं।
हहा हुहू निरष्षि तार रंभ चित्त ताहरं ॥
ततंग थेइ तत्तथेइ तत्तथे सुमंडियं।
थथुंगं थुंग थुंगथे विराम काम मंडयं ॥ छं० ॥ ८४९ ॥
सरग्गमप्प धुन्निधा धुनं धुनं निरष्षियं।
भवंति जोति अंग मानु अंग अंग लष्षियं ॥

(१) ए. कृ. को. सुर। (२) ए. कृ. को.-बोलि।

कलं कलं सु [1]सथ्यनं सुभेदनं मनंमनं।
रनकि झंकि नूपुरं बुझंत झंझनं झनं ॥ छं० ॥ ८५० ॥
थमंडि थारु घंटिका भमंति भेष रेषयौ।
[2]जुटंति घुंट केस पास पीत स्याह रेषयौ ॥
लजंति गत्ति तारया कटिं प्रमान कंटरी।
कुसम्मसार आउधं कुसुम्म ओड नंटरी ॥ छं० ॥ ८५१ ॥
उरंप रंभ भेष रेष सेषरं करं कसं।
तिरप्पि तिष्प सिष्पयौ सु देस दच्छिनं दिसं ॥
सुरंति संगि गातनी धरंति सासने धुने।
जमाइ जोग कट्टरी चिविद्ध नंच संपने ॥ छं० ॥ ८५२ ॥
तिरप्पि लेत [3]पातुरं सु चातुरं दिषावहीं।
कै अठ्ठ ग्रे ह वीय चंद भोर कै भ्रमावहीं ॥
छतीस राग बंधि तार बाल ता बजावहीं ॥
.... छं० ॥ ८५३
सु क्रम्म तार धी म्रदंगचित्त बंध संचरं ॥
विरम्म काम धूव बंधि चंद्र भ्रूव उच्चरं ॥
समीप रथ्थ भेदयौ जु चित्त चित्त चोरई ॥
अनेक भंति चातुरी जुमन्न मेर डोरई ॥ छं० ॥ ८५४ ॥
सिँगार ते कलेवरं परस्सि उभ्भ रावके ॥
सिँगार सोभ पातुरं कि [4]चातुरं सिंगार के ॥
उलट्टि पट्टि नाचनौ फिरहि चक्कि चाहनौ ॥
निरत्ति नेंन राषि जानि बंभ पुत्ति बाहनौ ॥ छं० ॥ ८५५ ॥
बिसेष देस द्रुप्पदं बदन्न देंन राजयौ ॥
सु चक्क भेष चक्क हत्ति बाल ता बिराजयौ ॥
उरद्ध मुद्ध मंडली अरोह रोह चालिनं ॥
ग्रहंति मुक्ति दुत्तिमा मनों मराल मालिनं ॥ छं० ॥ ८५६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मथ्थनं। (२) ए. कृ. को.-जटंति।
(३) ए. कृ. को. षातुरं। (४) ए. कृ. को.-पातुरं।

प्रवीन बान उद्धरी मुनींद्र मुद्र कुंडली ॥
प्रतष्षि भेष उद्धर्‌यौ सु भुम्मि लोइ षंडली ॥
तलं तलं सुताल ता मृदंग धुंकने घने ॥
अपा अपा भनंत मे जपंत जान ज्यौं जने ॥ छं० ॥ ८५७ ॥

अलाष लाष लाष नेनयं न बेंन भुंषने ॥
नरे नरिंद मास मेस मेस काम सुष्षने ॥
.... । ....छं० ॥ ८५८ ॥

सप्तमी शनिवार के बीतक की इति।

दूहा ॥ जाम एक छिन [1]दान घट सत्तमि सत्तनिवार ॥
कहु कामिनि सुष रति समर। [2]त्रिपनिय नींद निवार ॥छं०॥८५९॥

घटि चियाम घरियार बजि। ससि मिटि तेज अपार।
अकस अच्छ दिन सो तजौ। चिय रुठि निसि भरतार ॥छं०॥८६०॥

नृत्यकी (वेश्या) की प्रशंसा।

साटक ॥ सुष्षं सुष्ष मृदंग तस्स जघनं , रागं कला कोकनं ॥
कंठी कंठ सुभासने समजितं , कामं कला पोषनं ॥
उरभी रंभ कि ता गुनं हरहरो , सुरभीय पवनं पता ॥
एवं सुष्षइ काम कुंभ गहिता , जय राज राचं गता ॥ छं०॥८६१॥

कांती भार पुरान यौविंगलिता , साषा न गल्हस्थलं।
तुच्छं तुच्छ तुरास लग्गि कमनं , कलि कुंभ निंदा दलं ॥
मधुरे माधुरयासि आलि अलिनं , अलि भार गुंजारियं ॥
तरुनं [3]प्रात लुटीय पंगज जिया, राचं गता साम्प्रतं ॥
छं० ॥ ८६२ ॥

(१) ए. कृ. को. दक्षिन (२) ए. कृ. छो.-त्रिय तिय निंद्रनिवार।
(३) ए. कृ. को.-प्रान।

तिपहरा बजने पर नाच बंद होना, जयचंद का निज शयनागार को जाना और कवि का डेरे पर आना।

अरिल्ल ॥ भई ग्रम बेर अथवंत निसं। गहि घोर परहर कपट बसं ॥
　　झलि झालरि देवर सुष्ष नदं। भइ विप्र उचारिय बेद बदं ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ८६३ ॥

दूहा ॥ गयौ चंद यानह न्त्रपति। मतौ पंग चितवार ॥
　　भट्ट सथ्थ चहुआन सत। बंधि दियौ करतार ॥ छं० ॥ ८६४ ॥
　　प्रातराव संप्रापतिग। जहं दर देव अनूप ॥
　　सयन करहि दरबार तहं। सत्त सहस अस भूप ॥ छं० ॥ ८६५ ॥
　　गत चिजाम राजन उठ्यौ। सीष दई कविचंद ॥
　　निसा जाम इक नींद किय। प्रात उठ्यौ जैचंद ॥ छं० ॥ ८६६ ॥
　　प्रापत चंद कविंद तहं। जहं ढिल्ली चहुआन ॥
　　जगि बरदाइ बर बुल्लै। बरबंधन सुरतान ॥ छं० ॥ ८६७ ॥

इधर पृथ्वीराज का सामंत मंडली सहित सभा में बैठना, प्रस्तुत सामंतों के नाम और गुप्तचर का सब चरित्र चरच कर जैचन्द से जा कहना।

भुजंगी ॥ सभा सोभियं राज चहुआन पासं। बिठे सूर सामंत रस बीर लासं।
　　सभा सोभियं सूर सूरं प्रमानं। तहां बैठियं सूर चौहान ध्यानं ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ८६८ ॥
　　तहां बैठियं राइ गोयंद जूपं। जिनै मुग्गली बंध दिय हथ्थ भूपं ॥
　　भरं दाहिमौ सोभि नरसिंघ बीरं। जिनै पत्ति बंध्यौ षुरासान मीरं॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ८६९ ॥
　　सभा सोभियं सूर कूरंभरायं। जिनै आस हांसीपुरं जीति पायं॥
　　सभा मभ्भ सारंग चालुक्क मंध्यौ। मनों लाल मोतीन में मेर छंध्यौ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ८७० ॥

सभा सोभियं सूर बघ्घेलरायं। जिनै सेइरो स्वामि कित्ती चढ़ायं॥
रजं राज पामार लष्षं सलष्षं। जिनै बंधि गोरी सबै सेन भष्षं॥
छं० ॥ ८७१ ॥

सभा सोभियं राइ आल्हन रायं। जिनै ठेलि ठट्टा समुद्दं बहायं॥
सभा बीरचंदं सुचंदं पुंडीरं। जिनें प्रांन रक्कं सरद्दं गंभीरं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

सभा सोभियं बीर भोहां प्रकारं। जिनैं देवगिरि सीस झिल्लै दुधारं॥
सभा धावरं सोभि नारेन बीरं। जिनै भंजियं मीर सुरतान तीरं॥
छं० ॥ ८७३ ॥

सभा सोभियं जावलौ जल्ह कातं। जिनै षेदि सब्बं ससी पल्ह जंतं॥
सबै सूर सामंत सभ में बिराजैं। जिनै देषि ससि सरद की भांति लाजैं॥
छं० ॥ ८७४ ॥

बरं संभरी कथ्थ जंपै नरिंदं। इदं बैठियं भासि प्रथमीपुरंदं॥
ढुरै कनक सीसं सु चौरं जु दीसं। मनों इग्गयौ भान प्राची प्रदीसं॥
छं० ॥ ८७५ ॥

[1]सुनी पंग बीरं[2] अबी रंति मिंटी। करे जोर जम्मं रह्यौ भान ब्यंटी॥
बरं बोलहीं दिष्ट बिहु जन्न एकं। जनों आरजं बार बर इंद्र मेकं॥
छं० ॥ ८७६ ॥

अरिल्ल ॥ गयौ दूत सब देषि चरित्तं। पंग अग्गि जंपी बर तत्तं॥
भट्ट जानि जिन भुल्लो चंदं। बैठौ जेम प्रथीपुर इंदं॥छं०॥८७७॥

दूत के वचन सुनकर जैचन्द का प्रसन्न होना और शिकारी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग कमधज्ज। पंग फुल्ल्यौ बर भासं॥
प्रात फुल्लि सतपत्र। संझ कामोद प्रकासं॥
[2]बार रूप भौ बीर। भीम दुस्सासन बारं॥
द्रोन कन्न हनुमान। कन्ह गोधन्न उपारं॥

(१) ए. कृ. को.-सुनी पंग बीरं अपं रीति मिट्टी"। (२) मो.-बीर

उहरं चंद चंदहति सम । दंद पुब्ब भंजन सु दह ॥
आषेट हुकम दै पुब्ब दिसि । चंद समप्पन दान वह ॥ छं० ॥ ८७८ ॥

जैचन्द की शिकारी सजनई की शोभा वर्णन ।

आषेटक पहुपंग । बाजि नीसान प्रथम बर ॥
हिंदवान अरु असुर । गयह सज्जीय [1]धरद्धर ॥
दुतिय बज्जि नीसान । सबै भृत हैवर सब्बर ॥
मग्ग अट्ठ पय बांम । राज कमधज्जह समभर ॥
बज्जै निसांन न्त्रपतिय चढ़ौ । पंच सबद बाजिच बजि ॥
सामंत सूर बर भरि भरिय । करह न दंद नरिंद कजि ॥ छं० ॥८७९॥

दूहा ॥ आषेटक पहु पंग क्रत । चढ़िग लष्य बजि तूर ॥
आज बीर कमधज्ज सौ । इंद फुनिंद न सूर ॥ छं० ॥ ८८० ॥
क्रम्यौ राज जैचंद बर । जहां चंद प्रथिराज ॥
सुभि ग्रहगन मध्ये सवित । अदभुत चरित विराज ॥ छं० ॥८८१ ॥

कवित्त ॥ नग सु तुल्य चलि नाग । मान सेना कितीस तर ॥
मनहुं काम कर सज्जि । रंग चवरंग [2]चंग चर ॥
अदभुत चरित विराज । नग्ग जर बंग विराजत ॥
अंतरष्षि हय [3]हष्षि । मनहुं पातुर तिय साजत ॥
दरबार उतरि भयभीर भर । सकल लोक बर इंद कौं ॥
जैचंद राज विजपाल [4]सुअ । विदा करन कविचंद कौं ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

वृद्ध नाराच ॥ चढ्यौ नरिंद पंग राइ बाजि बीर सद्दयं ।
अनेक राइ राज सज्जि हि [5]जान मद्दयं ॥
कनंक हथ्थ पच सुलक्करीन कंन्नियं ।
मनों समंद उच्छि सोर बीर बोभ क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ८८३ ॥

(१) मो.-चर पर ।　　(२) मो.-चंक, चक्क ।
(३) मो.-हच्छि ।　　(४) ए. कृ. को.-तन ।
(५) को.-जम ।

सुपंग अंग बंधि बीर बार कंद्रपं कयं।
रजंत अग्ग एक सौ ज दंति पंति षोरयं॥
तिमद्द रद्द हेम पट्ट घट्ट थट्ट फेरयं।
सुभंत छत्र राज सीस हेम दंड मेरयं॥ छं०॥ ८८४॥

धनुष्षधार मीर बंद दुट्ट [1]अघ्य दिष्षयं।
रमंत तत्त बेध साम बान ते विसष्षयं॥
सुढुंढ सज्ज हथ्थ रथ्थ पट्ट पोत चक्कयं।
मनों करीय नाग अग्ग पट्ट कांम घुक्कयं॥ छं०॥ ८८५॥

दसं दिसान कंपवै निसान राज संभरै।
सुन्यौ जू सूर लोक वाम पुंज तेज विफ्फुरै॥
.... छं०॥ ८८६॥

जैचंद का सुखासन (तामजाम) पर सवार होना।

दूहा॥ मिसि कज्जहिं गंगा बरन। दान कवी पति सेव॥
चढ़त सुषासन संमुहौ। अहं सामंत नृपेव॥छं०॥ ८८७॥

पंगराज का मंत्री को बुलाकर शिकार की तैयारी बंद करके कवि की विदाई के विषय में सलाह करना।

कवित्त॥ बोलि सु मंत्रिय पंग। मुक्कि आषेट राइ बल॥
भट्ट किंत्ति चल चित्त। भट्ट निस चलइ किंत्ति चल॥
भेद मंच दिय दान। दंद दालिद कवि भग्गिय॥
सबें मनोरथ भग्गि। सुष्ष आसुष्ष बिलग्गिय॥
जाचै न दून हिंदून दुह। कै कवि भग्गौ कंक बल॥
संभारै बाल संभरि धनी। अम्म चंद भग्गौ जलल॥ छं०॥ ८८८॥
*चिंति चित्त कमधज्ज। दान बेताल सु विक्रम॥
अड लष्ष मन कनक। अंक मेटन विधि अक्रम॥

(१) ए. अघ्य।
* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

मुत्तिय मन इकतीस । दुरद मदगंध प्रकासं ॥
वारंगन इकतीस । रूप लावन्य निवासं ॥
मंत्री सुमंत इह कुमति किय । बरजि राइ जैचंद कौं ॥
पन कितौ कहरि कप्पन्न होइ । इतिक विदा सजि चंद कौं ॥
छं० ॥ ८८९ ॥

मंत्री सुमंत का अपनी अनुमति देना।

हनूफाल ॥ सो मंत्र मंत्रिय तब्ब । करि अरज फेरि सु कब्ब ॥
इकतीय सजि गजराज । सुनि गगन मंद अवाज ॥ छं० ॥ ८९० ॥
सम इंद्र आसन जूप । चलि नाग नाग सरूप ॥
घन चुअत मद परि अंत । गिरि राज झरनि झरंत ॥ छं०॥ ८९१ ॥
जटि कनक [1]काज सुरंग । सम बसति सोभ दुरंग ॥
सत उभय तुरिय सु तेज । दुअ अंस वंस विरेज ॥ छं० ॥ ८९२ ॥
फरकंत चातुर जेम । असमान सज्जत तेम ॥
नग जीन करित अमोल । उत साज सज्जित तोल ॥ छं० ॥८९३॥
लगि लाग लेत ललित्त । गति अंतरिच्छ कलित्त ॥
रस उभै बानी हेम । सतमन्न तुल्लिय तेम ॥ छं० ॥ ८९४ ॥
द्वै लाष पूरि प्रमान । गिरिराज उदर समान ॥
मनि रतन मोल अनंत । गनि होइ गनिकन अंत ॥
छं० ॥ ८९५ ॥
फिरि पुरष कीनी कोस । सकलाति फिरगरु तोस ॥
जरबाफ कसब जराव । उद्दोत करन प्रभाव ॥ छं० ॥ ८९६ ॥
बहु जात चामर रूप । सिर ढुरै जानि सुभूप ॥
जिन चरचि बहुत सुवास । कलि कसब सवित उहास ॥
छं० ॥ ८९७ ॥
जैचंद इंद विराज । हैगै सुघन घन साज ॥
कविचंद कारन इंद । सम दैन चलि जैचंद ॥ छं० ॥ ८९८ ॥

(१) ए. कृ. को.-साज ।

कविचन्द की बिदाई के सामान का वर्णन।

कवित्त ॥ तीस सज्जि गजराज। गगन गर जार मंद करि ॥
ह सें चपल तुरंग। चरन लग्गै धरनि पर ॥
हाटक षोडस बानि। मनह सत केवल तोलिय ॥
रतन अमोलक मुत्ति। परषि ते गंठहि बंधिय ॥
मकलाति फिरंग चामर चरचि। कसब मवें विधि जर जरिय ॥
जैचंद इंद वित विविध लै। विदा करन चलि चंद किय ॥
छं० ॥ ८९९ ॥

दूहा ॥ तीस करिय मुत्तिय सघन। इ सें तुरंग बनाय ॥
द्रव्य बदर बहु संग लिय। भट्ट समंपन जाय ॥ छं० ॥ ९०० ॥

पंगराज के चलते समय असकुन होना।

कवित्त ॥ भट्ट समंपन जात। राज नट बिंद प्रबंधो ॥
सौस बैन नहि चित्त। मझझ हक्कत सालब्धो ॥
सिभू मेस अनंत। रुंड माला रचि गुंथो ॥
षंड षंड अंगार। मच जूरी तत रुंथो ॥
उथ्थई कंभ षग मग्ग करि। गिद्धि पष फुनि फुनि करै ॥
जनय चोट धाराहरह। रस प्रसिद्ध बीरह भिरै ॥ छं० ॥ ९०१ ॥

दूहा ॥ कुरलंती त्रिसिहय गयन। चंच विलग्गौ सप्प ॥
वाम अंग मंजार भय। चक्रित चिंत न्रप अप्प ॥ छं० ॥ ९०२ ॥

पंगराज का चिंता करके कहना कि जिस प्रकार से शत्रु हाथ आवे सो करो।

बोलि सवक्की सुनि श्रवन। सुर अन भग अकथ्थ ॥
धम्मि भ्रंम भरि क्कित्ति जन। ज्यों अरि आवै हथ्थ ॥ छं० ॥ ९०३ ॥

---

(१) मो.-चित। (२) मो.-सिभ सेस।

मंत्रियों की सलाह से पंगराज का कवि के डेरे पर जाना।

भुजंगी ॥ ननं मांनियं जानियं देव मंती। गयं [1]चंद न्नप ग्रेह देषै बिरंती ॥
गतं सायरं साम गभीर दालं। सदं आ प्रवालं पवनं [2]प्रचालं ॥
छं० ॥ ९०४ ॥

बलं तेज केली ननं जाहि कालं। सुरज्जं समं पाइ संचार आलं ॥
बरं लावनं इंद्रियं दिग्ग पालं। बलीनं बलीनं भरं विश्व बालं ॥
छं० ॥ ९०५ ॥

ब्रह्मंडं विजै थंभ करि हथ्थ बज्जं। पगं जानि पारथ्थ भारथ्थ सज्जं ॥
दिदी असु दिट्ठी सबैं सथ्थ रारी। धरी सथ्थ नंदी संसारी सुभारी ॥
छं० ॥ ९०६ ॥

दिषी पंग जैचंद इंदं परष्षी। तहांईय आसीस बरदाय भष्षी ॥
छं० ॥ ९०७ ॥

जैचन्द का शहर कोतवाल रावण को सेना सहित साथ में लेना।

कवित्त ॥ जीत मत्त पहुपंग। बोलि राठौर सुबीरं ॥
साम दान करि भेद। डंड बंध्यौ अरि मीरं ॥
छल बल कल संग्रहै। दई दुरजन दावानल ॥
भट्ट थान आवृट्टि। पंग बुट्ठे सारह जल ॥
चतुरंग लच्छि लीजै सघन। दै दुवाह घायन चढ़हि ॥
सब सथ्थ सथ्थ प्रथिराज बल। सुनौ सुभर सो बुद्धि इहि ॥
छं० ॥ ९०८ ॥

रावण के साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-गयंदंच। (२) ए. कृ. को.-प्रवालं।

दूहा ॥ अगि मोकलि रावन न्रपति । इक्कन्नी कविराज ॥
भट्ट इट्ठ मोकलि सु वर । बंक विसाइन काज ॥ छं० ॥ ९०९ ॥

कवित्त ॥ मेर उच्चवहि वथ्थ । देय तन वज्र पात कर ॥
भषै च्यार अज इक्क । नेर सम क्रंति देह धर ॥
हठिय अग्ग रिन परहि । स्वामि स्वामित्तन चुक्कहि ॥
पर नायि पर मुष्ष धर । धरा धीर सु रष्षहि ॥
कर चलहि अप्प पय अचल बर । रावन सथ्थ सु मंडि लिय ॥
दिष्षिय सु भति इह कव्वि करि । मनुं सरद अभ्भ ससि कुंडलिय ॥
छं० ॥ ९१० ॥

रावण का कवि को जैचन्द की अवाई की सूचना देकर नाका जा बांधना।

दूहा ॥ सवैं क्रूर ग्रह पंग बर । एकादस न्रप राह ॥
दुष्ट मंच दानह करिग । भट्ट सुमंदन राहु ॥ छं० ॥ ९११ ॥
गयौ रावन मैलान बर । कपट चित्त मुह मिट्ठ ॥
दान समप्पन भट्ट कौं । चित बंधन बर दिट्ठ ॥ छं० ॥ ९१२ ॥

पंगराज के पहुंचने पर कवि का उसे सादर आसन देना और उसका सुयश पढ़ना।

कवित्त गयौ रावन मेल्हान । चंद बरदिया (१)समष्षन
देषि सिंघासन सद्यो । पास पारस्स इंद्र जनु ॥
कवि आदर बहु कियौ । देषि कनवज्ज मुकट मनि ॥
इह ढिल्लिय सुर दत्त । वियौ नहि गनै तुभ्भह गिनि ॥
थिरु रहै यवा इत वज्र कर । छंडि सिकारहि छिन(२) कुरहि ॥
जिहि असिय लष्ष पलानि यहि । पान देहि दिढ हथ्थ गहि ॥
छं० ॥ ९१३ ॥

(१) मो.-समप्पन। (२) मो. निसि।

पान देह दिढ़ हथ्थ। परिस षावास पंग बर ॥
आ आगै अस तेज। तेज कंपहि जु नाग नर ॥
देषि प्रथीपुर उदै। सूर सरनै गौ तंतक ॥
बर कंपै द्रिगपाल। चित्त चंचल गत्तौ भक ॥
अघ हरन किरन किरनौ प्रचंड। देखि दून गति देषियै ॥
अप्पि बर पान पारस सुगत। दुती परस सौ लिष्यियै
छं० ॥ ९१४ ॥

पान धार दै पान। भट्ट न्रिप जानि मंडि कर ॥
नर नरिंद जैचंद। जग्गि सम मंडि देव बर ॥
इंद्र मौज जखन [1]विसा। सह होय जवाइय ॥
। .... । .... ॥
[2]त्रय हथ्थ लंक उप्पर न्रपति। तरन हथ्थ कमधज्ज कहि ॥
आदि करि देव दानव सुरह। बलि जांच्यो बावन जुजहि ॥
छं० ॥ ९१५ ॥

खवास वेष धारी पृथ्वीराज का जैचन्द को बाएं हाथ से पान देना और पंगराज का उसे अंगीकार न करना।

दूहा ॥ पान देइ दिढ हथ्थ गहि। बर करि हथ्थ दिवंक ॥
मनु राहिनि सो मिल्लिग ज्यों। बीय उदित्त मयंक ॥ छं० ॥ ९१६ ॥
लिय सु पान भुअ राज रुष। मुखप्रसन्न [3]मन रोस ॥
दिषत न्रपति चल चिंत किय। पुब्ब प्रसन्नौ दोस ॥ छं० ॥ ९१७ ॥
करै न कर प्रथिराज तर। धरै न कर जैचंद ॥
उभय नयन अंकुरि परिग। ज्यौं जुग मत्त गयंद ॥ छं० ॥ ९१८ ॥
[4]सुनि तमोर पट्ठिय सुकर। मुष उत करि दिठ बंक ॥

(१) मो विसाल। (२) मो.-त्रय लोक हथ्थ लंक उद्धर न्रपति।
(३) ए.कृ. को.-मुन मुन। (४) ए. कृ. को.-मुनि।

[illegible] कुम्हटा मिलै। बहुत दिवस [1]रस पंक ॥ छं० ॥ ९१९ ॥
राज [illegible] अपछरी [illegible] न मंडे हथ्थ ॥
रोस न्रपति [illegible] चिंति मन। चाही चंद तब गथ्थ ॥ छं० ॥ ९२० ॥

कवि का श्लोक पढ़ कर जैचन्द को शान्त करना।

श्लोक ॥ तुलसीयं विप्र हस्तेषु। विभूति श्रिय जोगिनां ॥
तांबूलं चंडि हस्तेषु। त्रयो दानेव आदरं ॥ छं० ॥ ९२१ ॥

जैचन्द का पान अंगीकार करना परंतु पृथ्वीराज का ठेल कर पान देना।

चौपाई ॥ भट्ट जानि करि मंग्यौ राय। उहि तंमोर दियौ न्रप चाइ ॥
ठट्ठै पानि दियौ नित ठेलि। मनों वज्रपति वज्रह मेलि ॥ छं० ॥ ९२२ ॥

पृथ्वीराज का जैचंद के हाथ में नख गड़ा देना।

दूहा ॥ पानि पान करिकें दियौ। कमधज्जह प्रथिराज ॥
चल्यौ रकत कर पल्लवनि। ग्रह्यौ कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ९२३ ॥
कर चंपे न्रप तास कर सारंग दिट्ठ सुचंग ॥
पानि प्रथीपति दब्बियौ। श्रोन चल्यौ नष संग ॥ छं० ॥ ९२४ ॥

इस घटना से जैचंद का चित्त चंचल हो उठना।

कवित्त ॥ पान धार दै पान। दिट्ठ आरुहिय बंक बर ॥
एक थान द्वै सूर। तेज दिष्यौ कि सूर बर ॥
[2]बिहुन हथ्थ विभ्भरै। लाज संकर गर बंधिय ॥
अंष वह दिषि भट्ट। बीर भंजन सु बीर पिय ॥
निश्चल सु चित्त चहुआन कौ। चित निश्चल नन पंग बर ॥
लग्गौ सु पान न्रप वज्र सर। पान धरे बर बज्र [3]सर ॥
छं० ॥ ९२५ ॥

दूहा ॥ प्रथमहि सभा परष्यौ। पानधार नहि भट्ट ॥
न्रप कवियान सपत्तयौ। तब परषयौ निपट्ट ॥ छं० ॥ ९२६ ।

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को. बहुन। (३) ए. कृ. को.-कर।

भुअ बंकी किय पंग न्रप । अप्पि हथ्थ तंमोर ॥
मनहु बज्रपति बज्र धर । सब अप्पौ तिहि ओर छं० ॥ ९२७ ॥

जैचन्द का महलों में आकर मंत्री से कहना कि कवि के साथ का खवास पृथ्वीराज है उसको जैसे बने पकड़ो।

कवित्त ॥ गहि कर पान सु राज । फिग्यौ निज पंग ग्रेह वर ॥
सोमंचिक परधान । बोल उच्चरिय क्रोध भर ॥
गहौ राज संभरि नरेस । सामंत अंत रिन ॥
मिटै बाल उर आस । आस जीवन सु मिटै तिन ॥
बोलिय सुमिच कमधज्ज बर । छग्गर भट्ट न पृथु गहन ॥
भृत भ्रात तात सामंत सुत । छलन काज पट्ठिय पट्टन ।
छं० ॥ ९२८ ॥

मंत्री का कहना कि पृथ्वीराज खवास कभी न बनेगा यह सब आपके चिढ़ाने को किया गया है।

दूहा ॥ छलन काज पट्ठिय पट्ट न । मिलिन भूम्म दरबार ॥
पान भट्ट पृथु किम ग्रहै । न्रप बर सोचि विचार छं० ॥ ९२९ ॥

कवित्त ॥ न्रप बर सोचि विचारि । संग सुभ्भै बरदाइय ॥
अवधि बसीठ रु भट्ट । बंस न्रप लगै बुराइय ॥
इह कलि कित्ति नरिंद । रज्ज अपजस हुअ ढंकन ॥
दिष्टमान बिनसिहै । लग्गि अंमर कुल अंकन ॥
जुग्गिनि समथ्थ जौ इन हग । तौ सब भ्रत मिनि मारियै ॥
रिधि मंच राइ राजन सुनौ । बिप्र भट्ट नन टारियै ॥ छं० ॥ ९३० ॥

जैचन्द का कवि को बुला कर पूछना कि सच कहो तुम्हारे साथ पृथ्वीराज है या नहीं।

चौपाई ॥ टरिय राज उर क्रोध विचारिय । बरदाई मिथ्या न उचारिय ॥
फिरि जैचंद पिथ्थ ग्रह आयौ । निज कर (१)रावन भट्ट बुलायौ ॥
छं० ॥ ९३१ ॥

(१) मो.-राव सुभट्ट ।

कवित्त ॥ अप्पि पान करि मान । नाथ कनवज्ज अप्प कर ॥
दिल्लीवै चहुआन । तास वर भट्ट सिद्धि हर ॥
अमर नाग नर लोक । जास गुन आन ग्यान वर ॥
आदि बध मुनिवर । प्रबंध षट भाष भाव भर ॥
नव रस पुरान नव दून जुत । चतुर देह चातुर सु तप ॥
रघ्यौ न राज अप्रछन्न कवि । कहत तत्त कनवज्ज न्रप ॥
छं० ॥ ६३२ ॥

चौपाई ॥ बोलौ भट्ट सु मत्ति विचार । किन सिर आतपत्र आधार ॥
जौ प्रथु ह्वै तौ हनों ततच्छिन । नहिं तुम्है गै [1]देउ अथ्थि घन॥
छं० ॥ ६३३ ॥

कवि चंद का स्वीकार करना कि पृथ्वीराज हैं और साथ वाले सब सामंतों का नाम ग्राम वर्णन करना।

दूहा ॥ पद्धरि छंद सु चंद कहि । सिंघासन प्रथिराज ॥
कन्ह सु दिष्षिन जन्ह गिरि । निड्डर वाम विराज छं० ॥ ६३४ ॥

पद्धरी ॥ बैठो [2]सुभट्ट आरोहि पिट्ठ । तिन ढिगह सोभ इंद्रह बयट्ठ ॥
छत्रह उतंग चामर बइंभ। कप्पह सरूप फुल्लीत संभ ॥छं०॥६३५॥
डोलीय पंच आरोहि तिथ्थ । तिन मझ्झ बयठ निड्डुर समथ्थ ॥
बल कन्ह देषि पट्टी अरोहि । कौरवह पत्ति कर्नह समोहि ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

पुच्छै सु वत्त कनवज्ज राइ । देषेव रूप प्रज्जलित लाइ ॥
दामित्त रूप सामंत देषि । लिन्नौ सु भ्रंम जम्मह स लेष ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

कन्हा नरिंद चहुआन बंक । पट्टनह राव मार्‍यौ जु कंक ॥
गोयंद राव गहिलौत नेस । जिन दोय फेर गज्जन गहेस ॥छं०॥६३८॥
जैतह पमार अब्बू नरेस । छत्रह धरंत मध्यै असेस ॥
बंडियौ राय बंध्योति साष । बलबंधि साह दस सहस लाष ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

(१) ए. कृ को.-दिया। (२) ए. कृ. को.-जु।

हरसिंघ नाम बर सिंघ बीर। तिन हथ्थ जुट्टि चचवट्ट नीर ॥
बालुका राव सध्यौ सु पंग। संभलिय राय झाला प्रसंग ॥
छं० ॥ ६४० ॥

विंझ राज देषि चहुआन रूप। जिन भरिय लष्ष द्रब्यान कूप ॥
परमाल देषि चंदेल राज। बंधिया राय द्रब्यान काज ॥
छं० ॥ ६४१ ॥

वारड़ सु राव अधिपत्ति सेन। तिन चढ़त लग्गि बह उड्डि रेन ॥
अचलेस नाम भट्टी सु संध। मुरधरह राइ पडिहार बंध ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

परिहार पीप सामंत सुद्ध। पतिसाह बंधि लीयौ अरुद्ध ॥
निढुरह राय अवनी अकंप। गजनेस राइ ज्वाला तलंप ॥ छं० ॥ ६४३ ॥

तोंवर पहार अवनी सु जोर। बंधयौ राइ कन्ना समोरि ॥
कूरंभ राव पज्जून बीर। सद्दये जेन इक लष्ष मीर ॥ छं० ॥ ६४४ ॥

नरसिंघ एक नागौर पत्ति। रिनधीर राज लीयै जुगत्ति ॥
परमार सलष जालौर राह। जिम बंधि लिद्ध गजनेस साहि ॥
छं० ॥ ६४५ ॥

कंगुरौ देस दल लीन ढाहि। कीनी सु एक चिच वट्ट राह ॥
परमार धीर रिनधीर सथ्थ। मेवात बंधि मुग्गल अकथ्थ ॥
छं० ॥ ६४६ ॥

जद्दव सु जाम षीचौ प्रसंग। लीनें सु देस अवनी पुलिंग ॥
हाहुलिराय कंगुर नरेस। लीए सु सत्त पतिसाह देस ॥
छं० ॥ ६४७ ॥

अंधार भीम उड़गन सु सोह। रिन जुद्ध बीर संकर अरोह ॥
सारंग राइ मोरी भुआल। कट्टिया राइ जिन किद्ध काल ॥
छं० ॥ ६४८ ॥

तेजलह डोड परिहार रान। भिड़ एक तेक बंदै सु भान ॥
गुजरात धनी सागीत गौर। आरनि सु माहि बंधंत मौर ॥
छं० ॥ ६४९ ॥

परिहार एक तारन सुरष्ष । कर सलय लोय सेना समष्ष ॥
वारड़ सुधीर सहसी करन्न । वरियाति बीस हुअ छिन्न भिन्न ॥
छं० ॥ ९५० ॥

चहुआन एक अतताइ रुप । कालिंज राइ बंध्यौ अनूप ॥
बन्निराइ एक भारथ्थ भीम । कूरंभ राव चंपेव सीम ॥छं०॥९५१॥
भोंहां चँदेल जिन बंधराज । पानीय पंथ प्रथिराज काज ॥
गुज्जरह राम धूवत समान । मारयौ जेन आलील षान ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

चंदेल माल षट्टा अरोह । साधियौ बीर जनचंद मोह ॥
रस सूर रोह मेरह समान । जिन हेम प्रवत लिय जोर पान ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

मंडलीक राव वघ्घह अरोह । आवद्ध एक चिस्सूल मोह ॥
पूरन्न माल पल हंड षेत । जिन सूर दीन मत अश्वमेत ॥छं०॥९५४॥
धावरह धीर सामंत राज । जिन जीव एक प्रथिराज काज ॥
हाडौ हमीर सथ्थें कुलाह । बंधयौ जेन भिरि पातिसाहि ॥छं०॥९५५॥
रावत्त राम सामंत सूर । जिन द्रिग्ग देषि नट्टे करूर ॥
जावलौ जल्ह रिनतूर बज्जि । लिय बंधि जेन इकतीस रज्जि ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

चालुक्क एक भारो जु सोह । लीयें जु फिरै इक सहस लोह ॥
बग्गरी बघ्घ षेता षँगार । रिनथंभ तेन करि मार मार ॥ ९५७ ॥
दाहिम सुभट्ट संग्राम धाम । मारयौ वरून करुना सु काम ॥
मंडलीक [1]कंकवे सेन चंद । बंधयौ जेन भौमह नरिंद ॥छं०॥९५८॥
परमार सूर सामल नरेस । रिन मंझ अटल दल असहेस ॥
परमार कनक पछवान लीन । प्रथिराज ग्राम दस सहस दीन ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

संजम हराय बर जुद्ध नेस । षोडस्स दान दिय वाल वेस ॥
चाटौ जु टांक बैठौ नरिंद । देषंत जानि धुअ रूप इंद ॥ छं०॥ ९६०॥

(१) ए. कृ. को.-कंसेव ।

विरसन्न इसौ चाटंत सेन । रिनं जुवत सेन उड्डुंत रेन ॥
सांषुलौ सहस मलनेत बंध । दस सहस ग्राम पट्टैति बंध ॥
छं० ॥ ९६१ ॥

विक्रमादित्य कमधज्ज राइ । जिन देस भोग लीयात नाय ॥
भुज राज सुभट दो सहस सेन । बंधिया राइ अवधूत तेन ॥
छं० ॥ ९६२ ॥

मोरीति सुभट मादल नरिंद । कंठिया राव वासीति हिंद ॥
बघेल सूर सोहंत सेन । लिन्नीय षग्ग बल दष्षि नेन ॥
छं० ॥ ९६३ ॥

लंगरिय राव सथ्यह भुआल । अध देस दिद्व व्याघात काल ॥
पुंडीर चंद सोहंत सथ्य । किरनाल नेच कीनी अकथ्य ॥
छं० ॥ ९६४॥

परिहार सुअन तारन सु सोह । देषंत अछर करि मोह सोह ॥
केहरिय मल्हनासह विधूंस । बंधनौर वास सत जाइ भूम ॥
छं० ॥ ९६५ ॥

हरिदेव सहस सामंत रूप । जद्दव सु आज अवनी अकूप ॥
उहठी गंभीर सोहंत एह । रज रीति रूप रष्षीति रेह ॥
छं० ॥ ९६६ ॥

सामंत राइ पुहकर समथ्थ । जिन लीन दिल्लि जोधान कथ्थ ॥
दाहिमौ कन्ह समियान गढ्ढ । बंधि लिय राय सोक तल बढ्ढ ॥
छं० ॥ ९६७ ॥

चहुआन पंचाइन सहस सेन । चलंत सथ्य उड्डुंत रेन ॥
परिहार इसौ रिनधीर सोह । रिन चढ़ै जन्म जालिम लोह ॥
छं० ॥ ९६८ ॥

सामंत सित्त पंगुर नरेस । तिन पिट्ठ सूर सत्तह कहेस ॥
तिन पिट्ठ सूर सुभटह हजार । रिन जुड्ड करंतह मार मार ॥
छं० ॥ ९६९ ॥

सामंत एक बुंदह सु अत्त । उठ्ठंत बीर घरि एक सत्त ॥

जुध करहि सूर धड़ मचहि सार। मत्तकहि पिट्ठ करै मार मार ॥
छं० ॥ ६७० ॥

पंगुरै देषि चित चक्कित नाथ। असमान सीस लगि ढिल्ल नाथ ॥
डेरौ सुदीन चयकोस माहि। जे लिए रखत उत्तंग साह ॥
छं० ॥ ६७१ ॥

अनेक कमल अनेक रूप। रह वास थान तल उंच रूप ॥
कनवज्जराय तब उट्ठि चल्लि। रायान राय साषा न हल्लि ॥छं०॥६७२॥
दस लष्ष रष्षि चौकी भुआल। इंद्र रूप दरस सेवंत काल ॥
प्रथिराज प्रात कीनौ पयान। दस लाष वींटि परि परस [1]भान ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

जैचन्द का हुक्म देना कि पड़ाव घेर लिया जाय, पृथ्वीराज जाने न पावे।

कवित्त ॥ कहि सब कनवज राइ। भज्जि प्रथिराज जाइ जिन ॥
असिय लष्ष हय दलह। षबरि किज्जै सु पिन्नपिन ॥
हसिय सव्व सामंत। रोस प्रथिराज उहासै ॥
मिलिय सेन रघुवंस। चंद तब भट्ट प्रगासै ॥
इह दैत्य रूप जुध मंगिहै। भाज नीक परतह वहै ॥
कनवज्ज नाथ मन चिंत इह। जुध अनेक बल संग्रहै ॥छं०॥६७४॥
पहचान्यौ जयचंद। इहत दिल्ली सुर लिष्यौ ॥
नहिय चंड उनिहार। दुसह दारुन तन दिष्यौ ॥
कर संज्यौ करिवार। कहै कनवज्ज मुकुटमनि ॥
हय गय दल पष्षरहु। भाजि प्रथिराज जाइ जिन ॥
इत्तनौ सोच भुअपति उठ्यौ। सुनि नरिंद किन्नौ न भौ ॥
सामंत सूर हसि राज सौं। कहै भलौ रजपूत भौ ॥ छं० ॥ ६७५ ॥

इधर सामंतों सहित पृथ्वीराज का कमरें कस कर तैयार होना।

---

(१) ए. कृ. को.-पसिमान।

धनि धनि धनि सामंत। सूर कहि राज इंद बर॥
निरषि हरषि कर करषि। परषि कनवज्ज नाथ तर॥
निरभै सोम सिंगार। करन कलहंत मंत मन॥
नरनि नाह कन्हह कमंध। उच्चर्यौ बीर तन॥
आभासि अवर आनन सुभट। बट्ट मंति चहुं चलन॥
करि साथ तुरंगम सथ्थ भर। कसि ठट्ट अप अप बलन॥
छं०॥ ९७६॥

दोनों ओर के वीरों की तैयारियां करना।

रसावला॥ उठ्यौ पंग राजी, रवी तेज साजी। उठे बीर सूरं, छछोह सभीरं॥
छं०॥ ९७७॥
भृंगीराज राजी, सुराजी विराजी। चिह्नं पास साजी, अरीदोस गाजी॥
छं०॥ ९७८॥
दोऊ रोस जग्गी, प्रलै जानि अग्गी। .... ।छं०॥९७९॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तैयारियां और उनका उत्तेज।

कवित्त॥ कंठ सूर दाहिम्म। अंग लज्जी सुवास तन॥
लष्ष मद्धि दुह प्रगटि। अग्गि उट्ठी सूरं घन॥
चंद बीय ज्यों बहु। अग्गि लग्गी दरसानी॥
हय [1]हय हय उचार। गहग्गह सुनिये बानी॥
लंगरीराव [2]लोहा लहारी। चावौगौ चहुआन दल॥
वर भरी बीर जित्तन अरिय। [3]मुगति पंथ पुच्छिय सु बिल॥
छं०॥ ९८०॥

कवित्त॥ पञ्चैसर प्रथिराज। राज सोमेसर संभरि॥
संगी लंगरराइ। राय संजम सुष अंबरि॥
वारा हाथह भुल्लि। बध्ध उठ्यौ लोहानह॥
पारद्धी भुलि धार। मूल चंप्यौ चहुआनह॥
वर बीर बराहां उप्परैं। केहरि बहुारी बढन॥
इक चष्प क्रम्म कर पग्ग इक। सावक मुष लग्गा रहन॥छं०॥९८१॥

(१) मो. गय। (२) ए. कृ. को.-लोहो। (३) ए. कृ. को.-मुकाते।

अज्ञा आसन अड्ड । राज अज्ञा तंमूलं ॥
अज्ञा देस सुवेस । एक आदर संमूलं ॥
पंगानै दीवान । रहै न रष्यौ चलि सथ्यह ॥
काया तुंग सु कन्ह । देव साध्यौ भुज बथ्थह ॥
गुरवार रत्ति गोचर कियौ । प्रात प्रगट्टत छुट्टयौ ॥
दरबार राव पहुपंग दल । चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥ छं० ॥ ९८२ ॥

पंग दल की तैय्यारी और लंगरीराय का पंगदल को परास्त करके राजमहल में पैठ पड़ना ।

पद्धरी ॥ जुध जुटन लंग उठ्ठयौ भीम । मानों कि पथ्थ गो ग्रहन सीम ॥
संभरिय राज सों करि जुहार । चय सहस सुभट सजि लोह सार ॥
छं० ॥ ९८३ ॥
मद गंध करी च्यालीस सोह । गज फूल कनक रूप्पह करोह ॥
मानेज सहसमल सथ्थ व्योम । धुंधरिग भान इह दिग्ग धोम ॥
छं० ॥ ९८४ ॥
हम्मीर कनक राठौर वंस । चाल्यौ कि कृष्ण मारनह कंस ॥
हरि सिद्ध आइ कीनों प्रनाम । दुअ सहस महुर दुज दिन्न दाम ॥
छं० ॥ ९८५ ॥
दरबार आइ दरवान रुक्कि । सत सहस पौरि दरवान मुक्कि ॥
लष तीन महल चौकीन हल्लि । परधान सुमित्त नव तेग झल्लि ॥
छं० ॥ ९८६ ॥
हहकारि सीस दर गयौ लंग । हल हलिय सुभट देषंत पंग ॥
उंचे अवास जाली सु भंति । दस पंच महल मंडी जु पंत ॥
छं० ॥ ९८७ ॥
तिन मद्धि पंग देषै सु भट्ट । अनेक अवर मिलि एक थट्ट ॥
घम घम निसान चय लष्य बज्जि । सिंधूर राग करनाल सज्जि ॥
छं० ॥ ९८८ ॥
गुजरत्त सह अंगी तवल्ल । मानो कि भृम्म करिहै जु मल्ल ॥

(१) मो.-वांम ।

अन्नेक गिद्धि परि ठौर ठौर। जंबुक कुलाह जिय नह सोर॥
छं० ॥ ६८६ ॥

चौसट्ठि रुद तुंबर [1]अनेय। रंजि रंभ रही ठगठगी लेय॥
संजोगि मात पुच्छै सु जोइ। आचिज्ज एह यह कवन लोइ॥
छं० ॥ ६६० ॥

अद्धा सु अंग इह कहां दिट्ठ। तरवारि झपट पारंत रिट्ठ॥
मुह मुह चमक्कि दामिनि झपट्टि। जय लष्ष घटा लीनी लपट्टि॥
छं० ॥ ६६१ ॥

लंगरीराय के आधे धड़ का पराक्रम वर्णन और उसका शान्त होना।

अन्नेक छिंछ आकास उट्ठि। जैचंद यट्ट रहे निट्ठ निट्ठ॥
विहथंत तेग [2]वाहत अछेग। उड्डंत सीस धर परत वेग॥छं०॥६६२॥
निरषंत सीस धर सद्धि पंग। दुअ लष्ष सेन करि मान भंग॥
हल हले सहर दुनियां अकंप। वाडलिय लग्गि [3]उड्डंत लंप॥
छं० ॥ ६६३ ॥

जयचंद घरनि सब निरषि व्योम। धुंधरिग धराधर उड्डि धोम॥
उड्डंत बीर झपटंत सेन। लरथरहि परहि उड्डंत तेन॥
छं० ॥ ६६४ ॥

निकल्यौ महोदधि जन्र बीर। मुह लेय चिन्न उतर्यौ नीर॥
लेयंत सीस हर हार कौन। बरयौ सु मिच अपछरन लीन॥
छं० ॥ ६६५ ॥

किलकंत सट्ठि रुधि पीय पूर। सम्हौ जु जुद्ध जे किये सूर॥
अंतह अलुभिझ पग बेरि बाढ़ि। धर झारि धार भर पारि याढ़ि॥
छं० ॥ ६६६ ॥

षहचर उड्डंत पल धापि लेय। आवंत रथ्थ अन्नेक केय॥
चालंत रुधिर सलिता प्रवेन। तिन मध्य चली अन्नेक सेन॥
छं० ॥ ६६७॥

(१) ए. कृ. को.-अनेक। (२) ए. कृ. को.-चाहत। (३) को.-उड्डंत।

पट्टनह रुट्ठ बिच चलिय मह। मारीय सु करि बहता सु मह ॥
चौसट्ठि पच बुदबुदा चल्लि। अंगुली झिंग सल सलत सल्ल ॥
छं० ॥ ९९८ ॥

भरसुंड करी मग रहवि बुद्धि। कमलन्नि सुभंत सर मद्धि रुद्धि ॥
उप्परह भौंह सो भंवर तुंड। अपछर अनेक तट जानि झुंड ॥
छं० ॥ ९९९ ॥

षुप्परिय कछ सेवाल केस। लंगरिय किद्ध क्रीड़ा नरेस ॥
ऐसौ सु जुद्ध करिहै न कोउ। चय लष्य मान आवट्ट सोउ ॥
छं० ॥ १००० ॥

घर मद्धि रुधिर पलचर अमेय। घर छोड़ि सरन हर सिद्धि लेय ॥
तुट्टौ अकास धरनिय पलट्टि। गिद्धनी सलिल उप्पर झपट्टि ॥
छं० ॥ १००१ ॥

संभले राज प्रथिराज सेन। करि है न जुद्ध करुना सु केन ॥
संजम्मराय सुत सकल संभ। गम्मयौ दरिद्र रुद्र तनौ रंभ ॥
छं० ॥ १००२ ॥

किलकिका नाल छुट्टी अग्राज। लै चली लंग पर महल साज ॥
दस कोस परे गोला रनक्कि। परि महल कोट गज्जी धनक्कि ॥
छं० ॥ १००३ ॥

संजमह सुअन लै चली रंभ। सब लोक मद्धि हूऔ अचंभ ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १००४ ॥

जैचन्द के तीन हजार मुख्य योद्धा, मंत्री पुत्र भानेज और भाई आदि का मारा जाना।

कवित्त ॥ परे तुरिय सत सहस। परे मदगंध सहस्सह ॥
परे षेत षंगार। पर्यौ मंत्री सु धरंमह ॥
परे सुभट चय लष्य। परे लंगा चहुआनह ॥
परि सहसो भानेज। परे चय सहस सवामह ॥
परि धनी सेन किय उद्ध गति। रुधिर कम्मित कनवज बही ॥
पर मद्धि परी गिद्धनि अछरि। सु कविचंद ऐसी कही॥छं०॥१००५॥

लंगरीराय का पराक्रम वर्णन ।

इह जुद्ध लंगरिय । आय चौकी सम जुथ्यौ ॥
एक अंग लंगरिय । तीन लष्यह स्रम मुथ्यौ ॥
सार सार उछरंत । परी गिद्धा रव भष्षन ॥
गज बाजिन निहाय । बज्जि उत्तराधि दष्षिन ॥
इम भिन्यौ लंग पंगह अनी । हाय हाय मुष फट्टयौ ॥
हल हलत सेन असि लष्ष दल । चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥
छं० ॥ १००६ ॥

मंची राव सुमंत । हथ्य विंटचौ सचलंतौ ॥
दुज्जाई दिल्लीप कोप । ओप कुंजरनि बढ़ंतौ ॥
हालो हल कनवज्ज । मंझ केहरि कूकंदा ॥
संजमराव कुमोर । लोह लग्गा लूसंदा ॥
चहुआन महोवै जुद्ध हुअ । ग्रेहा गिद्ध उडाइयां ॥
रन भंग रावनै वर विरद । लंगै लोह उचाइयां ॥
छं० ॥ १००७ ॥

एक कहै अप्पान । एक कहि बंधि दिवाना ॥
बंधौ बंधन हार । मार लद्धी सिर कन्हा ॥
बाबारौ बर तुंग । षग्ग [1]साहै विरुझाना ॥
लंगी लंगरराव । अद्ध राजी चहुआना ॥
उरतान ढंकि कमधज्ज दल । संजम राव समुह हुअ ॥
प्रारंभ जुद्ध जुद्धे सबल । चलि चलि बीर भुजंग [2]भुअ ॥
छं० ॥ १००८ ॥

पृथ्वीराज का धैर्य्य ।

जौ पच्छिम दिसि उयै । पुब्ब अंथवै दिनंकर ॥
धर भर फनि फन मुरहि । गवरि परहरै जु संकर ॥
ब्रह्म वेद नह चवै । चन्नित जुधिष्ठिर औ बुल्लय ॥
जौ सायर जल छिलै । मेर [3]मरयादह डुल्लय ॥

(१) ए. कृ. को.-सोहै । (२) ए. कृ. को.-हुअ । (३) मो.-मरयादा ।

इतनीय होय कविचंद कहि। इह इत्तौ चिन में करहि ॥
तुम हीन दीन सब चक्कवै। प्रथीराज उर नहिं डरहि॥
छं० ॥ १००९ ॥

जौ संजोगि न्नप षेत। जाइ ठट्ठौ एकत बर ॥
तब लगि पंग कनवज्ज। वीर चट्टै संमुह धर ॥
रावन रन [1]उत्तऱ्यौ। सामि फौजह अधिकारिय ॥
मीर कटक मोकलहु। ताम रुक्यौ झुकि भारिय ॥
बनबीर रान सिंहा सुभर। मुकल्यौ बेगि चतुरंग दल ॥
सज्जे सुबंध चहुआन भर। .... ॥ छं० ॥ १०१० ॥

अपनी सब सेना के सहित रावण का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ॥

तब झुकि पंग नरिंद। दिट्ठि कीनी झुकि अग्गी ॥
जिम सुकिया दुति बचन। दूत टारिय अँषि अग्गी ॥
ज्यौं जोगिंद सुष इंद। रंभ टारै तप भग्गै ॥
झुकिय किस [2]कुटवार। पंग रावै द्रव मग्गै ॥
भयभीत न्नपति रावन्न तजि। तजै धनज जोगिंद तजि ॥
यों बढ्यौ राज चहुआन पर। अप्प सेन नलवारि रजि ॥
छं० ॥ १०११ ॥

रावण की फौज का चौतरफा नाकेबंदी करना ॥

अप सेन सम नरिंद। लरन धायौ रावन बर ॥
काल जाल जम जाल। हथ्थ कीने जु अग्गि गिरि ॥
[3]सजि सनाह जमदाह। कूह मंची जु अत्ति बर ॥
सुनि सु कान रव पाल। वीर संभरि निसान घुरि ॥
फिरि पऱ्यौ सेन इन उप्परहि। सो ओपम कविचंद कहि ॥
फट्टी फवज्ज चावद्दिसह। गंग कूल बक्कारियहि ॥ छं० ॥ १०१२ ॥

(१) ए. कृ. को.-उच्चऱ्यौ। (२) ए. कृ. को.-कोटवार।
(३) मो.-ससि।

रावण का पराक्रम और उसकी वीरता का वर्णन।

फिर्यौ हथ्थ जमजाल। ग्रहन अति चार पच्छ फिरि ॥
नीर थंभ थइ फिर्यौ। तुट्टि जल फिरै मीन हरि ॥
पवन फेर पित फिरै। बीर ज्यों फिरै हकार्यौ ॥
फिरै हथ्थ बर रोस। पेम ज्यों फिरै संभार्यौ ॥
भज्जई हथ्थ हथ्थीश्र बल। करिस नैंन रत्त रुधिर ॥
जानै कि दड्ढ जम की विसल। चुवै आनि मंगलति भ्रर ॥
छं० ॥ १०१३ ॥

मोरि हथ्थ बिहारि। काल बिहारि भवन कौं ॥
तिरस आनि रस मुट्ठि। चल्यौ मोरन्न पवन कौं ॥
काम अंध दिष्षै न कोइ। सोच सुद्धित मदषानिय ॥
राज मद्द राजनिय। ग्यान सुद्दिन सुर पानिय ॥
करि देषि मंत रावन बलिय। उप्पर हरि धावै लरन ॥
ओपम्म चंद जंपै विसल। तत्त मंत कबहूं करन ॥ छं० ॥ १०१४ ॥

ज्यों कलंक पर हरै। न्हान गंगा तिथ्थइ बग ॥
अध्रम ध्रम्म परहरै। अजस पर हरै सुजस मग ॥
माह चवथ ससि तजै। देवध्रम तजै छुद्र नर ॥
चंप भवर गुन तजै। भोग जिम तजै रिष्य गुर ॥
इम मुक्कि करिय रावन बलिय। राज सेन उप्पर पर्यौ ॥
जमजाल काल हथ्थी सु बर। ता पच्छै क्रम क्रम पर्यौ ॥
छं० ॥ १०१५ ॥

रावण के पीछे जैचन्द का सहायक सेना भेजना और स्वयं अपनी तैयारी करना।

लरत राज रावन्न। पंग पच्छै फवज्ज फटि ॥
सूर किरन फट्टंत। बान छुट्टंत पथ्थ फटि ॥

(१) ए. कृ. को.-बचै। (२) ए. कृ. को.-सोरन्न।

है गै मत्त मतंग। ¹दंद दंतिन धर छाइय ॥
ज्यों बद्दल दल उपरि। छांह चल्लै सो धाइय ॥
ता पछै पंग अप्पन चढ़न। सुनि रावन आहुत अध ॥
जाने कि राज चहुआन को। इसौ दरसि भग्गौ जु बँध ॥
छं० ॥ १०१६ ॥

चांद्रायन ॥ इह ओपम कविचंद। पिष्षि ²तन रज्जियं ॥
सोज राज संमेत। जपेषय तज्जियं ॥ छं० ॥ १०१७ ॥

अरिल्ल ॥ सूर करी मधि डार कइंकइ। कहै प्रथिराजन लेउ गहंगइ ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १०१८ ॥

पंगराज की ओर से मतवाले हाथियों का झुकाया जाना।

दूहा ॥ छूटत दंतिन संकरनि। सो मत मंत उतंग ॥
गात गिरव्वर नाग गति। ³चालत सोभ सुअंग ॥ छं० ॥ १०१९ ॥
सत्त सूर सोभत सजत। अभंग सेन भर राज ॥
गहन राज प्रथिराज कों। सेन सुरंगइ साज ॥ छं० ॥ १०२० ॥

पंगराज और पंगनी सेना का क्रोध।

विअष्षरी ॥ देषियहि राज रस सूर भल्लै। सूर रज बीर सारोस चल्लै ॥
वेंन आकास सर लल्ल कल्लै। देषियहिं पंगुरें नैंन लल्लै ॥
छं० ॥ १०२१ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

कवित्त ॥ मिले सूर बज्जे अघात। ⁴सस्त्र बज्जे अस्त्रन सों ॥
ज्यौं ताल ताल बज्जए। जीभ चिय मग उल्लास सौं ॥
गजर बज्जि घरियार। लोह भय अंति अघानं ॥
बजि न्निघात उतंग। सस्त्र घल्लै सुर पानं ॥

---

(१) ए. कृ. को.- दंत। (२) ऐ. कृ. को.-रन, को.-तर।
(३) ए. कृ. को.-चालति। (४) ए. कृ. को. सस्त्र बज्जे जु सस्त्र सों।

चहुआन आन कमधज्ज करि । पाइ मंडि आघाट दुज ॥
हकै पहक कायर परै । देव रूप आहत्त सुज ॥ छं० ॥ १०२२ ॥
तेग बहत मंडली । रोष जनु करी तुंग बर ॥
पूर जूह आवंत । रुधिर रन लोह लग्गि पर ॥
स्वामिध्रंम सों लच्छि । मेर हथ लच्छि न ग्राहै ॥
रगत पील मझि गिरत । तिनह में मोती बाहै ॥
भेदै न कमल जल सुबर बर । कमल पच छिंटन्न लग ॥
हवि गात तेग आतुर बहै । रुधिर छिंट छुट्टै न जुग ॥ छं० ॥ १०२३ ॥

पंगराज का सेना को प्रगट आदेश देना ।

दूहा ॥ तब हंकारौ कीय न्रप । चढ़ि मच्छर बर जीव ॥
जनु प्रजरंती अग्गि महि । लै करि ढारिय घीव ॥ छं० ॥ १०२४ ॥
मंचिय जुद्ध अनुद्ध सुनि । अरियन ग्रहन न सार ॥
रे चहुआन न जाइ घर । पंग पिटारै मार ॥ छं० ॥ १०२५ ॥
इह कहंत पंगह चल्यौ । आइस ले सब सेन ॥
लेहु लेहु इम उच्चरिय । जन जन मुष मुष बेंन ॥ छं० ॥ १०२६ ॥

पृथ्वीराज का कविचंद से पूछना कि जैचन्द को पंगु क्यों कहते हैं ।

*पुच्छि नरिंद सु चंद सौं । तुम वरदाय कविंद ॥
सब पंगुर किहि विधि कहत । यह जयचंद सु इंद ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

कवि का कहना कि इस का पूरा उपनाम दलपंगुरा है क्यों कि उसका दलवल अचल है ।

कवित्त ॥ जैसे नर पंगुरौ । विनु सु [1]भंगुरी न हल्लहि ॥
आधारित भंगरी । इरू वह वत्त न चल्लहि ॥
तैसे रा जयचंद । असंष दल पार न पायौ ॥

* छन्द १०२७ और १०२८ मो. प्रति में नहीं है । (१) को-टेंगुरी ।

चाल,क इक सर सरित। दलन हरबल अघायौ ॥
दिसि उभय गंग जमुना सु नदि। अड कोस दल तब बढ्यौ ॥
कविचंद कहै जैचंद न्रप। तातें दल पंगुर कह्यौ ॥ छं० ॥ १०२८ ॥

जैचन्द की सेना का मिलना और पृथ्वीराज का पड़ाव पर घेरा जाना।

चंद [1]अप्रित झरि बीर। विषय झाला सु प्रजलि चलि ॥
नैन दंत आरुहिज। मत्त दंती सु दंत घुलि ॥
तम तामस उक्करै। बीर नीसान धुनंके ॥
बीर सद्द सुनि क्रन्न। मद्द गजराज झुनंके ॥
विंटये सूर सामंत न्रप। रावन सब न्रप मग्ग गसि ॥
असि लष्य न्रपति पहुपंग दल। सूर [1]चिंत नन मंत बसि ॥ छं० ॥ १०२९ ॥

दूहा ॥ ग्रसि रावन चिहु मग्ग रहि। सर प्राहार प्रमान ॥
ग्रहन राज चहुआन कौं। पंग वज्जि नीसान ॥ छं० ॥ १०३० ॥
साम सनाह कनंक वर। सलप सु लष्य प्रमान ॥
मग रष्पन रजपूत बट। अरि मुक्यौ न सु थान ॥ छं० ॥ १०३१ ॥

कवित्त ॥ रावन दल दलमलत। हलत भग्गेव सुभर अरि ॥
भग्गे दल बोहिथ्थ। बीर भाटी पहार फिरि ॥
घरी एक आहुत्त। झंझ बज्जी जुध जग्गी ॥
जनु कि महिप मैंमंत। भ्रत्त विभ्रम बल लग्गी ॥
भर सिंघ पंच पचाइनह। तजन राज रज राज भिय ॥
पांवार धन्नि धावर धनी। मग्ग पग्ग मग भीर लिय ॥ छं० ॥ १०३२ ॥

जैचन्द का मुसलमानी सेना को आज्ञा देना कि पृथ्वीराज को पकड़ो।

चौपाई ॥ वज्जे सुनवि पंग सुर रूपं। चक्रित चित्त भूपाल सु भूपं ॥
[2]पुक्कारे बर उन न्रिप अंगं। अरि गौ भंजि षान सुर मंगं ॥
छं० ॥ १०३३ ॥

(१) मो.-चित्त। (२) ए. कृ. को.-पुक्कारी।

पद्धरी ॥ अग्गें सुपंग बज्जीर बीर । फुरमान अप्पि अरि गहन मीर ॥
बंधि सिलह कन्ह उभ्भौ कहूर । मनु धाइ छुट्टि (१)भद्दव तिमूर ॥
छं० ॥ १०३४ ।
सन्नाह सज्जि गोरी पहार । जानियै सूर सायर अपार ॥
हज्जार सित्त सजि सुभर मीर । मिलि पंग हेत बर बीर तीर ॥
छं० ॥ १०३५ ॥
जानियै बीर बीरन्न जूर । कंद्रप्प किति जानीय सूर ॥
मनु हक्क सज्जि सजि सिलह थान । बहकरै बीर दस कंध मान ॥
छं० ॥ १०३६ ॥
हज्जार साठि सजि षरे मीर । कलहंस मान कसि अंग बीर ॥
हय गय पलान पहुपंग षुल्लि । देषंत किरनि बर किरनि डुल्लि ॥
छं० ॥ १०३७ ॥
हलहलत होत गजराज छुट्टि । आयसं आनि धन पंग लुट्टि ॥
सन्नाह सज्जि सोभै सु भूप । द्रप्पन झलक्कि प्रतिब्यंब रूप ॥
छं० ॥ १०३८ ॥
सोभै अनेक आकार बीर । मानो मड्डि इछ सोभै सरीर ॥
पष्षरै भीर हय भीर जंपि । गति डुलै प्रबत प्रब्वत्त सु कंपि ॥
छं० ॥ १०३९ ॥
बर हुकम पंग न्रिप इहय दीन । टिड्डीस अन्न सम गवन कीन ॥
बिछुरे सेन कमधज्ज थान । ग्रहन भौ ग्रहन प्रथिराज भान ॥
छं० ॥ १०४० ॥
उग्रहन बत्त करतार हथ्थ । रूकवन धाइ चहुआन सथ्थ ॥
छं० ॥ १०४१ ॥

युद्ध-रँग राते सेना समूह में कवि का नव रस की सूचना देना ।

कलाकल ॥ नचि नौरस थान अदभ्भुत बीर । भयौ रस रुद्र कवै कवि भीर॥

(१) मो.-भद्दव क्रि ।

भैभ्रंति भयानक कायर कंपि। करुना रस केलि कलामुष झंपि॥
छं० ॥ १०४२ ॥

तहां रस संकर ह्वै अरि संच। उठ्यौ अदबुद्द महारस नंचि॥
लियौ रस निठ्ठुर बीभछ अंग। दिष्यौ चहुआन सु सेनह पंग॥
छं० ॥ १०४३ ॥

हस्यौ रस हास सलष्य पवार। बरं बरझालि सु बीर दुधार॥
भयौ रस संत मुगत्ति य मग्ग। सुधारहि काम चलै जस अग्ग॥
छं० ॥ १०४४ ॥

रचैई सिंगार बरब्बर रंभ। झुल्यौ रस बीर षगं षग अंभ॥
.... । .... छं० ॥ १०४५ ॥

दूहा॥ कल किंचित किंचित करहि। सुरग सुधारहि मग्ग॥
भंजौ लज्ज मुकत्ति बर। ग्रहि भग्गीह न दग्ग॥ छं० ॥ १०४६ ॥

पृथ्वीराज का सामंतों से कहना कि तुम लोग जरा भीर सम्हालो तो तब तक मैं कन्नौज नगर की शोभा भी देख लूं।

सकल सूर सामंत सम। बर बुल्यौ प्रथिराज॥
जौ रुक्कौ षिन षेत में। देषौं नगर विराज॥ छं० ॥ १०४७ ॥

सामंतों का कहना कि हम तो यहां सब कुछ करें परंतु आपको अकेले कैसे छोड़ें।

कवित्त॥ हम रुक्कैं अरि जूह। स्वामि कौ तजै इकल्लै॥
कै रषि दुज्जन पढन। स्वामि मुक्कियै न ढिल्लै॥
नारिंघनि करि देव। ताप तप जांहि देव बर॥
सुनहि राज प्रथिराज। दिठ्ठ बंधीय अप्प कर॥
सो चलै संग छाया रुकिय। कै छांह स्वामि मुक्कौ भिरन॥
चहुआन नयर दिष्षन करै। दुरन देव सोभै किरन॥
छं० ॥ १०४८ ॥

कन्ह का रिस होकर कहना कि यदि तुम्हें ऐसाही कहना था तो हम को साथ ही क्यों लाए।

दूहा ॥ कहै सब्ब सामंत सौं । एकल्लौ बिन दुग्ग ॥
दइ बिधिना फिरि में लई । आय परस्सो गंग ॥ छं० ॥ १०४९ ॥
बोल्यौ कन्ह अयान न्त्रप । रे मत मंद समथ्थ ॥
जो मुक्के सत सथ्थियन । तौ कित लायौ सथ्थ ॥ छं० ॥ १०५० ॥
औ मुक्कौं सत सथ्थियन । तौ संभरि कुल लज्ज ॥
दिष्षन करि कनवज्ज कों । फिर संमुह मरनज्ज ॥ छं० ॥ १०५१ ॥

परन्तु पृथ्वीराज का किसी की बात न मान कर चला जाना।

चल्यौ नयर दिष्षन करन । तजि सामंत सुलच्छि ॥
गौ दिष्षन दिष्षन करन । चित्त मनोरथ बंछि ॥ छं० ॥ १०५२ ॥
कुंभ चित्त चहुआन कौ । चौकट बुंद न अभ्भ ॥
जल भय पंगह ना भिदै । ज्यौं जल चौकट कुंभ ॥ छं० ॥ १०५३ ॥

युद्ध के बाजों की आवाज सुनकर कन्नौज नगर की स्त्रियों का वीर कौतूहल देखने के लिये अटारियों पर आ बैठना।

गाथा ॥ दस सुंदरि गहि बालं । बिसालं सुष्ष अलनि मिलि अलियं ॥
सुनि बज्जे पहुपंग । चरितं सो भुल्लिय बाला ॥ छं० ॥ १०५४ ॥
चढ़ि गवष्षन बाला । सु बिसालं जोइ राजियं राजं ॥
थक्के बिमान सूरं । सुभंतिय वाय कंसजियं ॥ छं० ॥ १०५५ ॥

दूहा ॥ देषन लच्छिन न्त्रपति बर । गो दच्छिन क्रत बेर ॥
अवन राज चहुआन बहि । पंग घरंघर बेर ॥ छं० ॥ १०५६ ॥

जैचन्द का स्वयं चढ़ाई करना।

जो पत्ती पत मरन की । बोलि सहेट प्रमत्त ॥

हम सीवत बंचे सु बट। ब्रिप तिह मिलहि न मत्त ॥छं०॥१०५७॥
दुह कहंत पंगह चल्यौ। बजि निसान सरभेर ॥
सकल सूर सामंत सम। लेहि नरिंदह घेरि ॥ छं० ॥ १०५८ ॥
कवित्त ॥ पलान्यौ जयचंद। जिस्द सुरपति आ कंप्यौ ॥
असिय लष्य तोषार। भार फनपति फन तंप्यौ ॥
सोरह सहस निसान। भयौ कुहराव भूअ भर ॥
घरी मझि तिहुलोक। नाग सुर देव नाम नर ॥
पाइक धनुद्धर को गिनै। असी सहस गेंवर गुरहि ॥
पंगुरौ कहै सामंत सम। लेहु राज जीवत घरहि ॥ छं० ॥ १०५९ ॥
हय गय दल धसमसहि। सेस सलसलहि सलक्कहि ॥
सहस नयन झलझलहि। रैंन पल पूरि पलक्कहि ॥
तरनि किरन मूंदयौ। मान द्रगपाल स छुट्टिहि ॥
वसंत पवन जिम पत्र। अरिय द्रुम होइ सु थट्टहि ॥
पायान राय जैचंद कौ। विगरि पिष्ष्य कुन अंगमै ॥
हय लार बहति भाजंत थल। पंक चहट्टै चक्कवै ॥ छं० ॥ १०६० ॥

जैचन्द की चढ़ाई का ओज वर्णन।

विजय नरिंदह तनौ। रोस करि द्रुम धरि चल्ल्यौ ॥
द्रुम हम षुर षुंदत। एम पायालह (१)डुल्ल्यौ ॥
एम नाद उछ्र्यौ। एम सुर इंद गयंदहि ॥
एम कुलाहल भयौ। एम मुद्दित रवि इंदहि ॥
दल असिय लष्य पष्षर परहि। एम भुअन आकंप भय ॥
पंगुरौ चल्यौ कविचंद कहि। बिन प्रथिराजह को सहय ॥
छं० ॥ १०६१ ॥

एक एक अनुसरिग। अंग दह लच्छि कोटि नर ॥
धानुक धर को गिनै। लष्य पचासक हैवर ॥
सहस हस्ति चवसट्ठि। गरुअ गाजंत महाभर ॥
समुद सयन उलटंत। डरहिं पन्नग सुर आसुर ॥

(१) को. झुल्यौ।

जैचंद राइ चालंत दल । चक्क सूर पुज्जन चलिग ॥
गढ़ गिरिग्ग जलथल मिलिग्ग । इत्त सब दिष्षिय जुरिग ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

पंगराज की सेना के हाथियों का वर्णन ।

मत्त गत्त सन भिरिग । हट्ट पट्टन सद्द तुट्टिग ॥
कच्छि कच्छि जुरि भीर । घंट घंटा हरि फुट्टिग ॥
बाल बाल आलु झिझ । कारन सम कारन लागि धग ॥
मेंगल मदगल चलत । थार हस्ती सन चंपिग ॥
जैचंद राय चालंत दल । गिरिवर कंपहि चंद कहि ॥
देषंत राइ भंभरि रहहि । दंति पंति दस कोस लहि ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

दूहा ॥ जल थल मिलि दुअ कंप हुअ । टुटि तरवर जल मूल ॥
देषि सपन सामंत बल । छलन कि वामन फूल ॥ छं० ॥ १०६४ ॥

दल पंगुरे के दल बद्दल की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

बाघा ॥ दह दिसा थर विथरंत । दिगपाल दसन करंत ॥
उरवी न धारत सेस । ससि होत फेर दिनेस ॥ छं० ॥ १०६५ ॥
धरधुंध रज छदि व्योम । सद नास थिर गहि गोम ॥
कठ कमठ पीठ कमंठ । थल विथल फिरत न कंठ ॥ छं० ॥ १०६६ ॥
धुरि मेर मुरि मुरि जात । सर सूकि सवित उपात ॥
मम चढ़हु पंग नरिंद । हरहरत गगन गुरिंद ॥ छं० ॥ १०६७ ॥
हरि सीस रज बरषंत । द्रिग उरग मद्धि परंत ॥
हुंकार प्रगटित अग्गि । चिय नयन प्रजलि विलग्गि ॥छं०॥ १०६८ ॥
ससि तवैं अमिय पतंत । [1]अवि बुंद सिंह जगंत ॥
बबकारि [2]गज्जत सद्द । विड्डरत धवल दुरद्द ॥ छं० ॥ १०६९ ॥
सिव फिरत तिन सँग जूर । नन चढ़हु पंगह सूर ॥
ब्रह्मंड नष अरु एक । दल मिलत होत समेक ॥ छं० ॥ १०७० ॥

(१) ए. कृ. को.-आप ।　　(२) ए. कृ. को.-सज्जत ।

गन सेंन विथुरित भूमि। घन मिट्टत नासा घूम ॥
जल प्रलय लोपत लीह। धर थिथरि होत अलीह ॥ छं० ॥ १०७१ ॥
भुअ परत अच्छरि व्योम। मीसान गज्जत भोम ॥
तुम चढ़त जैचंद राज। तिहुलोक ढरति अवाज ॥ छं० ॥ १०७२ ॥

कवित्त ॥ डर द्रुग्गम थरहरहि। अढर ढरि परहि गरुअ गिरि ॥
चिन बन घन टूटंत। धरनि धसमसहि हयनि भर ॥
सर समुंद थरभरहि। डिढह डिढ डाह करकहि ॥
कमठ पिट्ठ कलमलहि। पहुमि महि प्रलय पलट्टहिं ॥
जयचंद पयानौ संभरत। फुनि ब्रहमंड विछुट्टि हय ॥
मम चलहि मचलि मम चलि मचलि। चलहित प्रलय पलट्टि हय ॥
छं० ॥ १०७३ ॥

दूहा ॥ साजत पंग नरिंद कहुं। विनय स छोनिय बाग ॥
मुगता ग्रह सुक कवित कह। [1]जलथल थग्ग अमाग ॥छं०॥१०७४॥

कवित्त ॥ दल राजन मिलि विभजि। अट्ठ दिग्गं [2]करवर कर ॥
कर धरंत द्रिग अट्ठ। [3]डट्ठ वाराह मुरहि हरि ॥
हरि वराह दिढ दट्ठ। करतु फनवै फन टारहि ॥
फनिवै फनह टरंत। कमठ थोपरि जल भारहि ॥
भारहि सुजल्ल पुप्फरि उछरि। उच्छरि है पायाल जल ॥
जल होत होय जगतै प्रलौ। समु चढ़ि चढ़ि जैचंद दल ॥
छं० ॥ १०७५ ॥

समस्त सेना में पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये हल्ला होना।

दूहा ॥ मढरि मढरि छोनी सु चिय। सत करि छिनक सवल्ल ॥
छत्रपति करि जीरन भषिग। तूं नित नितह नवल्ल ॥छं०॥१०७६॥
धम धमंकि धुकि निष्प महि। रमहि न गंग सु तट्ट ॥
गहहि चंपि चहुआन कों। भव भरि मुहित सु वट्ट ॥छं०॥१०७७॥

---

(१) ए. कृ. को.-"जल थल मग्ग अमग्ग"।
(२) ए. कृ. को.-करु। (३) मो. मट्ठ, को. भट्ट।

भौ टामंक दिसि विदिस बहु। बहु बब्बर बहु राव ॥
मनु अकाल ऋिज्जिय सघन। पब्बय छुट्टि पहाव ॥छं०॥ १०७८॥

कन्नौज सेना के अश्वारोहियों का तेज और ओज वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत ताजी न [1]लज्जीय हारे। मानौं रब्बि रथ्थं सु आने प्रहारे॥
जिके स्वामि संग्राम झल्ले दुधारं। तिनं ओपमा कौं बदी जै छिकारे॥
छं० ॥ १०७९ ॥

तिनं सोहियं बग्ग गह्रै न लारा। मनों आवधं हथ्थ वज्जंत तारा॥
हयं छट्टियं तेज ठट्टै जिकारा। सयं सज्जियं सूर सब्बै [2]करारा॥
छं० ॥ १०८० ॥

सरे पाषरे प्रान जे मार वारा। तिके कंध नामै नहीं लोह भारा॥
तहां घाट औघट्ट फंदै निनारा। तिनं कंठ झूमंत गज गाह भारा॥
छं० ॥ १०८१ ॥

दिसा राह लाहौर बज्जै तुरक्की। तिनं धावतें धूर दीसै धुरक्की॥
दिसं पच्छिमं भूमि जानै न थक्की। तिनं साथ [3]सिंधी चलै नाव जक्की॥
छं० ॥ १०८२ ॥

पवंनं न पंषी न अंषी मनक्की। तिके सास कट्टै न चंपै न नक्की॥
तिनं राग चंपै न सुद्धी डरक्की। मनों ओपमा उंच आरं धरक्की॥
छं० ॥ १०८३ ॥

अरब्बी विदेसी लरै लोह लच्छी। गनै कौनं कंठील कंठील कच्छी॥
धरं षेत षुंदंत रुंदंत बाजी। [4]हरंवी हए एक तत्तार ताजी॥
छं० ॥ १०८४ ॥

तिके पंडु ए पंगुरे राइ साजे। मनों दुब्भन दल तुच्छ देषंत लाजे॥
इसौ रह आपुब्ब कविचंद पिष्यौ। तिनं रब्बि दुजराज सम तेज दिष्यौ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

डरं डंबरी रेन अप्पै न पारं। अषीनं [5]पषीनं सषीनं निहारं॥

(१) ए. कृ. को.-लजी अहारे।
(२) ए. कृ. को.-तुषारा।
(३) ए. कृ. को.-सिंधं।
(४) ए. कृ.-हरेवी हए एक ताजी तत्तारी।
(५) ए. कृ. को.-अषीनं।

तहां कोन सामंत राजं न [1]ठट्टै। मनों मेर उत्तंग हस्ती न चट्टै॥
छं० ॥ १०८६ ॥

मुषं ओव जोबं भरं भूप भारे। [2]तिनं काम कनवज्ज मभ्भं पधारे॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दूहा ॥ भर हय गय नीसान बहु। इह दिष्षिय सह थान ॥
जौ चढ़िजै हूर [3]दिष्षियै। चिहु दिसि समुद प्रमान ॥
छं० ॥ १०८८ ॥

वृद्धनाराज। जहां तहां हयग्गयं निसान घान घुंमरे।
मनों कि मेघ भद्दवा दिसा दिसान धुंमरे॥
चमक्कती सनाह संग वीज तेज विप्फुरै।
मनो कि गंग न्हाय कै किरन्न भान निक्करै॥ छं० ॥ १०८९ ॥
सपष्षरं प्रमान राज बाज राज सोभई।
मनो कि पंष प्रब्बतं सुफेरि इंद लोभई॥
गहग्गहं जु वाजि नाद तेज हथ्थ विथ्थुरे॥
सुने सबद्द तेज हूर कायरं स विद्दुरे॥ छं० ॥ १०९० ॥

इतनें बड़े भारी दलबल का साम्हना करने के लिये पृथ्वीराज की ओर से लंगरी राय का आगे होना।

दूहा ॥ सुनिय सबर दल गंग हिन। लंगा लोह उचाय॥
पंग सेन सम्हौ [4]फिरिय। बोलि बज्ज विरुझाइ॥ छं० ॥ १०९१ ॥

लंगरी राय का साथ देने वाले अन्य सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ लंगा लोह उचाइ। जूह झल्लिय संमुह भिरि॥
दुज्जन सलष पुंडीर। धरै बंधव उप्पर करि॥
तूंअर तमकि ततार। तेग लीनी गढ़ तत्तौ॥
बर पुच मिच अचान। भान कूरंभ सुभत्तौ॥
सांषुला हूर बंकट भिरं। मोरी केहरि हूर भर॥

(१) ए.-डट्टै। (२) ए. कृ. को.-फिनं।
(३) मो. दिष्षिकै। (४) ए मो. परिय।

बहु पंग सेन सम्हौ भिरिग। सु बजि बीर बर विप्पहर ॥
छं० ॥ १०९२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे को प्रचार कर परस्पर मार मचाना।

रसावला ॥ पंग सेनं भिरं। षग्ग षोलं झरं ॥ बीर हकं वियं। लोह लंगी लियं॥
छं० ॥ १०९३ ॥

षग्ग लग्गे झलं। भिन्न रत्तं पलं ॥ बीर हक्के अरी। घाय बज्जं घरी॥
छं० ॥ १०९४ ॥

तुंग बाहं बरं। नंषि बहुप्फरं ॥ बीर लग्गे भरं। कालते संघरं ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

ट्रोन नंचं धरी। मार हकं परी ॥ कूक बीरं करी। गिद्ध उड्डे डरी॥
छं० ॥ १०९६ ॥

टूक पावं बटं। षग्ग ठेके ठटं ॥ घाइ घुम्मे घनं। मत्तवारे मनं ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

कंधनं बंधरं। जंमुषं विड्डुरं ॥ रंभ तारी चली। सूर पानं हली॥
छं० ॥ १०९८ ॥

घाव वज्जे घटं। पाइ कै सुब्बटं ॥ अंत तुट्टै बरं। पाइ आलुझ्झरं ॥
छं० ॥ १०९९ ॥

भट्ट ऐसे रजं। तंति बंधे गजं। मुगति मग्गे अरी। षग्ग षोली दरी॥
छं० ॥ ११०० ॥

कवित्त ॥ घरी एक आवत्त। पंग संघार अरिय पर ॥
लुथ्यि लुथ्य आहुट्टि। रुद्र रस भयत बीर बर ॥
हय गय नर भर भरिय। पऱ्यौ रन रुद्धि प्रतापं ॥
षग्ग मग्ग अरि हलिय। चलिय धारनि धर आपं ॥
दुअ जन्न भट्ट हकारि करि। कमल सेन जिन चिंत परि ॥
उच्चरे ब्रह्म ब्रहमंड सों। गोटन कोट गहुन फिरि ॥छं०॥११०१॥

चौपाई ॥ धाए न्त्रिपत न लोह अघानं। छुट्टक सिद्ध किद्ध विरुझानं ॥
संझ किधौं घरियारन घाई। चच्चर सी चुतुरंग बजाई ॥
छं० ॥ ११०२ ॥

सायंकाल होना और सामंतों के स्वामिधर्म की प्रशंसा।

दूहा ॥ भंजन भीरन ओ न्रपति। करिभन भौंर परंच ॥
सांई बिन जीवन कों। षोहनि करन ऊ पंच ॥ छं० ११०३ ॥
भान न भग्गौ भान षलि। भान भिरंतह भान ॥
अत्ति समंपिय भान कों। दै सिर संकर दान ॥ छं० ॥ ११०४ ॥

युद्ध भूमि की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पंग बसंत सो सिग सु। गंध गज मद भरि दानं ॥
सो कायर पत पीप। पत्त भर भर कर पानं ॥
प्रसव चंद सिर आन। मान भिरि भिरि अग्गह हर ॥
लज्जा ओह सुरंग। रंग रंग्यौ सु सुरंग बर ॥
बोलंत घाव भवरिय भवर। कूक कूह कोकिल कलह ॥
फूलिग्ग सुभर अंजह सुरन। पवन त्रिविध सेना सुलह ॥
छं० ॥ ११०५ ॥

अट्ठ अट्ठ अरु अ[१]। एक आगरे पंच बर ॥
षग्ग मग्ग रित पत्त। भरें भर धज्जि जित्त भर ॥
धर पलचर हर रंभ। नंद नरिंदह आघाई ॥
सुगति त्रिपंग मन मज्जि। अंत्र पौवन जिहि आई ॥
गोरष्ष कित्ति जित्ती सपन। मात पित्त गुर बंध [२]रन ॥
दई साम सुधारन सकल कौं। इन समान कीरति मयन ॥
छं० ॥ ११०६ ॥

अरिल्ल ॥ ठठ्ठ के सुसेन पह्लपंग अग्गं। छिले लोह सूरं मनं जंग भग्गं ॥
सबै धाय बीरं रहै बीर पासं। न को कंध कट्टै ठढे पास वासं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

पंगराज का पुत्र के तरफ देखना।

दूहा ॥ पंग प्रपत्ती पुत्र दिषि। भुकि किय [२]मुष दिसि वाम ॥
बीर मत्त रत्त नयन। उत्तर सु किय प्रनाम ॥ छं० ॥ ११०८ ॥

(१) मो.-रत। (२) ए. कृ. को.-सुख।

पंग पुत्र के बचन ।

कवित्त ॥ जोरि हथ्थ फिरि तथ्थ । राज संमुह उच्चारिय ॥
असुर ससुर नर नाग । जुड्ड दिष्यौ न संभारिय ॥
अप्प सथ्थ [1]मुनि सामि । अरिन सन्हौ हक्कारिय ॥
भय भारथ्थ सु जुद्ध । जोह आवै न प्रकारिय ॥
धनि हथ्थ सूर सामंत के । धनि सु हथ्थ पहुपंग भर ॥
धरि तीन मोहि सुझयौ न कछु । सार अगनि अग्गैं सु नर ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

तन जित्यौ दल अप्प । दल न भग्गौ चहुआनं ॥
द्वादस हथ्थिन बीच । लुथ्थि पर लुथ्थि समानं ॥
पच्छै दल सुनि स्वामि । लोह छीनं अनलोपं ॥
राज कहन मुकलीय । सामि अवगुन सुनि कोपं ॥
अरि अरिय हथ्थ दह छंडि रन । रन में ढुंढिय पंग बर ॥
हज्जार उभै अप सेन परि । तुच्छ सु परि चहुआन भर ॥ छं० ॥ १११० ॥

पंगराज का क्रोध करके मुसल्मानों को युद्ध करने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ तुच्छ तुच्छ अरि पंग भर । चित्त सपच्छ हस हथ्थ ॥
यों चल्ले चहुआन दल । लच्छि गमाई हथ्थ ॥ छं० ॥ ११११ ॥
[2]झकि पंग दिय हुकम सह । गहन मीर चहुआन ॥
प्रात सु डंबर मझ्झतं । किरन सु छुट्टिय भान ॥ छं० ॥ १११२ ॥

पंगसेना का क्रोध करके पसर करना, उधर पृथ्वीराज का मीन चरित्र में लवलीन होना ।

पद्धरी ॥ बर हुकुम पंग दुअ दीन दीन । मंची सुमंचि सजि सिलह लीन ॥
अप्पें तुरंग पहुपंग फेरि । भर सुभर लेत घन मझ्झ हेरि ॥
छं० ॥ १११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनि । (२) ए. सुकवि; कृ. को.-झुकावि ।

गजराज पंच आकास अन्न ॥ सोभै सु पंग रत्तै नयन्न ॥
चिहु मग्ग फट्टि फौजै सु लीन । चहुआन भूलि वर चरित मीन ॥
छं० ॥ १११४ ॥

दूहा ॥ पिथ्थ चरित्त जु भुल्लि बहु । नट नाटक बहु भूप ॥
दूहा दासि संयोग की । हरि चित रत्तौ रूप ॥ छं० १११५ ॥
भर भुल्लिय सह चित भुलि । अरि रहि अनि तजि क्रोध ॥
बढि ढिल्ली पहुपंग कौ । छुट्टि सु मंची सोध ॥ १११६ ॥

घोर घमसान युद्ध होना।

रसावला ॥ सुधं मंच बानं। कलं भूर गानं । रसं वट्ट जानं। लहू कूट मानं ॥
छं० ॥ १११७ ॥
लषै चढ्ढि चन्नं। बरं रत्त रन्नं ॥ हयं उट्टि तिन्नं। तुलं वज्र छिन्नं ॥
छं० ॥ १११८ ॥
सुरं लोभ घन्नं। दिवं आस मंनं ॥ हयं बीब तानं। बनं नष्षि धानं ॥
छं० ॥ १११९ ॥
रतं कंध हीनं। षचौ विब्भरीनं ॥ रठं रंक धन्नं। सुनी सुद्ध मन्नं ॥
छं० ॥ ११२० ॥
उभं झेलि फिन्नं। दतं कट्टि लिन्नं ॥ अवं जानि तीनं। जुधं जीत बीनं॥
छं० ॥ ११२१ ॥
लजं मेर जंनं। सदाहत्त पंनं ॥ धरं दुद्द रानं। ससी झल्लि फानं ॥
छं० ॥ ११२२ ॥
सुधं मंच सूरं। भुअं नंषि पूरं ॥ जहं जं पियारी। हके पार सारी ॥
छं० ॥ ११२३ ॥

लंगरीराय के तलवार चलाने की प्रशंसा।

दूहा ॥ पारस फिरि पहुपंग दल । दई समानति हक्कि ॥
जंघारो जोगी बली । बाबारो पग धुक्कि ॥ छं० ॥ ११२४ ॥
पग धुक्किय मुक्किय न पग । लंगा लोह उचाय ॥

(१) मो.-टरं । (२) ए. कृ. को.-बजं ।

पंग समुह संमुह पऱ्यौ। हर बडवा नल धाइ ॥ छं० ॥ ११२५ ॥

जैचंद के मंत्री के हाथ से लंगरी राय का मारा जाना।

भुजंगी ॥ [1]परे धाइ सोमंच मद्देक वारं। बहै षग्ग [2]सोरं गुरज्जं निनारं ॥
हयं नारि सोवान कौहक फुट्टै। करै हथ्थ छत्तीस आवद्ध छुट्टै ॥
छं० ॥ ११२६ ॥

बरं बीर बीरं तथा बिद्ध पारं। [3]पगं बाजि सो षग्ग झामं किसारं ॥
सइनाइ में सिंधुश्रौ राग बज्यौ। लगी लोह [4]में जुद्ध आजुद्ध गज्यौ ॥
छं० ॥ ११२७ ॥

गयं मुष्प हाकी हहाकी करारी। [5]बरं बीर सोमचियं जुद्ध भारी ॥
बढ़ी बाजि सो मुक्कि प्राधान बीरं। लगी धायसो लंगरी बद्ध पीरं ॥
छं० ॥ ११२८ ॥

पलं पंचकं लोकलं किति भुल्लौ। बरं भारथं लग्गि सो तुंग हल्लौ ॥
बरं लंगरी राइ प्राधान बीरं। भगी सार मा भग्गियं हूर नीरं ॥
छं० ॥ ११२९ ॥

तुटी रंच कीरच्च कीरच भयन्नं। तुटी षग्ग सोवं गिनं उड्डि गेनं ॥
इकं पंच तें पंचकं बिद्ध नचं। हके तिन्न के सीस सारं सु नचं ॥
छं० ॥ ११३० ॥

बरी लंगरी बीर प्राधान बारे। भयौ भार उत्तारनं बंग धारे ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

दूहा ॥ पऱ्यौ बीर लंगरि सु बर। जंघारो घन घाइ ॥
सु बर बीर सामंत मिलि। मंचो सोम उपाइ ॥ छं० ॥ ११३२ ॥

कन्ह का गुरुराम को पृथ्वीराज की खोज में भेजना।

कवित्त ॥ राज गुरू दुज कन्ह। कन्ह मोकलि सु लेन नृप ॥
स्वामि मल्हि सह सथ्थ। मंच कारज्ज मंच अप ॥

---

(१) ए. कृ. को.-"परे धाइ सोमंच मत्रीक वारं"।
(२) ए. कृ. को.-गोरं। (३) ए. कृ. को.-षगं।
(४) ए. कृ.-से। (५) ए. कृ. को.-ककारी।

लै आवौ प्रथिराज। पंग है विड्डुर सेनं॥
पष्षवै न पथ आज। भयौ भर अंतर कैनं॥
यौं करिग देव दच्छिन सु दुज। दिषि सामंत षटंग बर॥
संजोग दासि हं देह न्रपति। ठठुकि रह्यौ तजि थान नर॥
छं० ॥ ११३३ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज नगर का निरीक्षण करते हुए गंगा तट पर आना।

दूहा॥ फिरि राजन कनवज्ज महँ। जानि संजोगिह वत्त॥
चढ़ि विमान जै जै करहि। देव सु रंगन कित्ति॥ छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त॥ नगर सकल गुन मय। निहारं लड्डीय सुष न्रपति॥
मंडप सिषर गवष्य। जालि दिट्ठी सु विचित्र अति॥
द्वार उंच पागार। बिपुल अंगन आगारह॥
जह तहं निभ्भर झरंत। निरमल जल धारह॥
नर बाज दुरद बन गेह पसु। भरिय भीर पट्टन परम॥
सुर असुर चमंकत सबद सुनि। सु फिरि समुद मथ्थन भरम॥
छं० ॥ ११३५ ॥

दूहा॥ करिग देव दच्छिन नयर। गंग तरंगह कूल॥
जल छुटै तव इच्छ करि। मीन चरिषन भूल॥ ११३६ ॥

पृथ्वीराज का गंगा किनारे संयोगिता के महल के नीचे आना।

भुजंगी॥ रची चित्र सारी त्रिषंडी अटारी। नकस लाजे वर्दं सुवंनं सु ढारी॥
जरे तथ्थ जारी नही राजु वन्ने। रही फैलि रवि इंद मानों किरन्नं॥
छं० ॥ ११३७ ॥

हसी ष्याल षेलै तहां म्रग्ग नैंनी। भरें माग मुत्ती गुहै बैठि बैंनी॥
सजै छत्र आचार आनंद भीनै। तिनं सीस भोरानि आहत कीनें॥
छं० ॥ ११३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेहि।

सुभं रूप सोभा तिनं अंग वेसं। तनं चीर सारी पटं कूल नेसं ॥
चमक्कंत चौकी कनै फूल झब्बी। गरै पौति पुंजं रिदै हार फब्बी ॥
छं० ॥ ११३९ ॥

कटिं छुद्रघंटा बंधी जे बनीयं। पयं झंझनं सद्द श्रवने सुनीयं ॥
इदं रूप हंसाय गंमाय तेनं। लजै कोकिला कान सुनतें सुरेनं ॥
छं० ॥ ११४० ॥

बनी निकट नारी सुगंधाय बासै। सबै चंद बदनी तहां चंद भासै ॥
तहां संभरी नाथ लागै तमासै। लरै मीन हय फौन, तिन देषि हासै ॥
छं० ॥ ११४१ ॥

कुंडलिया ॥ मीन चरित्र सु भुल्लि न्रप। पंग न भुल्लिय युद्ध ॥
तीन लष्य अग्गों न्रपति। जो भारथ्थ विरुद्ध ॥
जो भारथ्थ विरुद्ध। दई अंगमै सु सब्बल ॥
दई बन लाई कलिय। जुपिय रक्कियै सवद्दल ॥
वल अभंग अरिभंग। पंग सिर पान सु लिन्नौ ॥
कहर कन्ह साहस्स। सिंघ सो दिल्ल समिन्नौ ॥ छं० ॥ ११४२ ॥

दूहा ॥ इतें सेन चढ़ि पंग बर। है गै दिसा दिसान ॥
दछिन नैर नरिंद करि। गंग सु पत्तौ ध्यान ॥ छं० ॥ ११४३ ॥

पृथ्वीराज का गले की माला के मोतियों को मछलियों को चुनाना।

चन्द्रायना ॥ भूलौ न्रप इह रंगहि जुद्ध विरुद्ध सह ।
नंषहि मीननि मुत्ति लहै जुअ लष्य दह ॥
होड़ तुछ तुच्छ सु मुत्ति मरं तन कंठ लह ॥
पंक प्रवेस हसंत झरंत न कंठ मह ॥ छं० ॥ ११४४ ॥

संयोगिता और उसकी सखी का पृथ्वीराज को गौख में से देखना।

कवित्त ॥ सुनि बज्जन संजोग। सुनिय आवन्न न्रपति बर ॥
भयौ चित्त चर चित्त। मित्त संभरि सु रंग नर ॥

बल बौंटिय राज नइ। लाज रष्षी मत किन्नौ॥
मौष कुंअरि सिर रही। उठ्ठि सुंदरि बर चिन्हौ॥
दिसि पुव्व देखि चहुआन न्टप। बर लोचन मन षग्ग मग॥
उपम्म बाल चिंतै सु चल। पुव्व दिसा दौ रवि सु उग॥
छं० ॥ ११४५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को देखना।

कुंजर उप्पर सिंघ। सिंह उप्पर दोय पव्वय॥
पव्वय उप्पर भ्रंग। भ्रंग उप्पर ससि सुभ्भय॥
ससि उप्पर इक कीर। कीर उप्पर म्टग दिट्ठौ॥
म्टग उप्पर कोवंड। संध कंद्रप्प बयट्ठौ॥
अहि मयूर महि उप्परइ। हीर सरस हेम न जऱ्यौ॥
सुर भुअन छंडि कविचंद कहि। तिहि धोषै राजन पऱ्यौ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

दूहा॥ भूल्यौ न्टप इन रंग महि। पंग चल्यो हय पुट्ठि॥
सुनि सुंदर बर बज्जने। अई अपुब्ब कोइ [1]दिट्ठ॥ छं० ॥ ११४७ ॥
देषत सुंदरि दल मिलनि। चमकि [2]चढ़ौ मन आस॥
नर कि देव किधौं नाग हर। गंगह संत निवास॥ छं० ॥ ११४८ ॥

अरिल्ल॥ बजि बीर निसान दिसान बजी। सु किधौं फिरि भद्दव मास गजी॥
सह नाइन फेरि अनेक [3]सजी। सुनि सोर संजोग सु गौष रजी॥
छं० ॥ ११४९ ॥

चौपाई॥ सुनि सुंदरि बर बज्जन चल्ली। षिन अलपह तलयह मुष भल्ली॥
देषि रंजि संजोगि सु भल्ली। फूलि वाह मुष कुमुदह कल्ली॥
छं० ॥ ११५० ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता दोनों की देखा देखी होने पर दोनों का अचल चित्त हो जाना॥

स्लोक॥ दिष्टा सा चहुआनं। संमरं कामं संमायते॥

---

(१) ए. कृ. को.- हुट्टि। (२) ए. कृ. को.-बढ़ी। (३) ए. कृ. को.-बजी।

कामधुज्जं बर वीरं। विगलति भीवीवनं वसति ॥ छं० ॥ ११५१ ॥
मुरिल्ल ॥ उर संजोइ साल घन मंडं। श्रवन श्रोतान जु लागि पिकंडं ॥
फरन फराक भये षग भग्गे। जनु चंमक लोहान सु लग्गे॥छं० ॥११५२॥

संयोगिता का चित्रसारी में जा कर पृथ्वीराज के चित्र को जांचना और मिलान करना।

मोतीदाम ॥ प्रति बिंब निरष्षि हरष्षिय बाल। लई सषि सथ्थ चढ़ी चित्रसाल॥
साइक समान न प्रौढन मूढ़। समान सु केलि सिंगार सु घोढ़ ॥
छं० ॥ ११५३ ॥
स बुद्धि स बुद्ध अबुद्धि न बुद्ध। चलं चल नैंन सु मैंन निबद्ध ॥
षिनं षिन रूप सरूप प्रसन्न। पुजै किम कोकिल जास रसन्न ॥
छं० ॥ ११५४ ॥
लगी बर आलि न गौषन नाय। लिषी दषि पुत्तलि चित्र समाइ ॥
रही बर देषि टगं टग चाहि। मनों चित्र पास न वै दिन जाहि ॥
छं० ॥ ११५५ ॥
कहै इक नारि संयोगि दिषाई। धरै अंग अंग अनंग जु साई ॥
किधों दिसि प्राचिय भान प्रकार। किधों मन मध्य कै काम अकार॥
छं० ॥ ११५६ ॥
कि इंद फुनिंद नरिंदह कोइ। किधों इत लीन संयोगिय सोइ ॥
छं० ॥ ११५७ ॥

संयोगिता की सहेलियों का परस्पर वार्त्तालाप।

दूहा ॥ इक कहै दनु देव इह। इक कहै इंद फुनिंद ॥
इक कहै अस कोटि नर। इक प्रथिराज नरिंद ॥ छं ॥ ११५८ ॥
सुनि बर सुंदरि उभै तन। उभै रोम तन अंग ॥
स्वेद कंप सुर भंग भौ। नैंन पिषत प्रथुरंग ॥ छं० ॥ ११५९ ॥

संयोगिता के चिबुक बिंदु की शोभा।

त्रोटक ॥ हिय कंप विकंप विपथ्थ पथं। मनु मंत विराजत काम रथं ॥
कल कंपित कंप कपोल सुभं। अलकावलि पानि उचंत उभं ॥
छं० ॥ ११६० ॥

निज निंदति मंथुर पंथनियं। धब धक्क धकं धक अस्ति हियं॥
सुर भंग विभंग उमंग पियं। रद मंडल खंडल चंपि लियं॥
छं० ॥ ११६१ ॥

निज नूपुर भारि नितंब छियं। रिजु नेह दुनेह त्रिभंग चियं॥
चिबुकं चिकु उद्दिम बिंदु धुअं। कटि मंडल हार बिहार सुअं॥
छं० ॥ ११६२ ॥

अध दिष्ट उनष्टि कतं तिलकं। बरुनी बर भंगत पौ पलकं॥
सत भाव सतं [1]तिल की कथयं। निज सोजि विलोकि तयं पथयं
छं० ॥ ११६३ ॥

हँसि हँसिह रम्य करी करयं। सषि साषि परष्षि हँसी हरयं॥
छं० ॥ ११६४ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज को पहिचान कर लज्जित होना।

गाथा ॥ पिय नेहं विलवंती, अबली अलि [2]गुज नेन दिट्ठाया।
परसान सह हीनं, भिन्नं की माधुरी माध ॥ छं० ॥ ११६५ ॥

चन्द्रायन ॥ दुलह जानि अनराइ सु हाइ सुषं अली।
लज्जा गरुअ समुंद अबुड्डन यह कली॥
मरन सरन संजोगि विहत बरनं सचिय।
सहि चहुआन सु बुझिझय पेम सु मंझ चिय॥ छं० ॥ ११६६ ॥

संयोगिता का संकुचित होते हुए ईश्वर को धन्यवाद देना और पृथ्वीराज की परीक्षा के लिये एक दासी को थाल में मोती देकर भेजना।

अरिल्ल ॥ सारति संकुल सांवर वीरं। सषि संकुचि भौ लोचन नीरं॥
[1]परसपर संपर भीरन भीरं। कामातुर निट्ठर लगि तीरं॥
छं० ॥ ११६७ ॥

गुरु जन गुर निंदरियं सुंदरि। राज पुत्ति पुच्छियै न दुरि दुरि॥
अमहि पुच्छि तौ दुत्ति पठावहि। कुन अच्छै पुच्छ विकारि आवहि॥
छं० ॥ ११६८ ॥

---

(१) ए. कृ. को. तिक। (२) ए. कृ. को. गुंजनेव।

चोटक ॥ मन षंचिय सौजुग यौ जबिषं। सुमरौ मन लज्जिय मात पषं॥
अध दिष्ट करौ चितयौ सु हितं। गुरनौं गुर बंधिव गंठि चितं॥
छं० ॥ ११६६ ॥

चन्द्रायण ॥ अनो गोचर कथ कलंमि कथं कथ अष्यियै।
रस संकहि अंकुरि मान मनं मथ भष्यियै॥
जान इहै परमान बिधानन लष्यियै।
को मिट्टै संजोग संजोगिन अष्यियै॥ छं० ॥ ११७० ॥

तब पंगुर राय सु पुच्छिय मुत्तिय थाल भरि।
जौ हिय इह प्रथिराजह पुच्छहि तोहि फिरि॥
जौ इन लच्छिन सब तत्त विचारि करि।
है व्रत मोहि न्रप जीव तौ लेउं सजीव वरि॥ छं० ॥ ११७१ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट फंद संजोग। दासि पिल वारि हथ्थ दिय॥
म्रग बंधन चहुआन। पुव्व श्रोतान षेद किय॥
पुव्व रूप गिद्धीव। मद्द मन मध्य संभारिय॥
भय म्रग पंग नरिंद। चंद वंधन वन डारिय॥
हकैति हक्क हाका सषिय। मूर गौष अपबंध सिष॥
वेधंत आनि बानह [1]अभुल। षगुक सीस कोमंग इष॥छं०॥११७२॥

दासी का चुप चाप पीछे जाकर खड़े हो जाना।

दूहा ॥ सुंदरि धरि श्रवननि सुन्यौ। गुन कड्ढौ गुनं विद्ध॥
ठग मग प्रत्ति [2]प्रतच्छि पिय। प्रसनह प्रत्ति प्रसिद्ध॥छं०॥११७३॥

चन्द्रायन ॥ सुंदरि आइस धाइ विचारन बुल्लइय।
ज्यौं जल गंग हिलोर प्रथीति प्रसंग तिय॥
कमलति कोमल पानि केलि कुल अंगुलिय।
मनहु अंध दुज दान सु अप्पत अंगुलिय॥ छं० ॥ ११७४ ॥

पृथ्वीराज का पीछे देखे बिना थाल में से मोती ले ले कर मछलियों को चुनाना।

(१) ए.-अभुज। (२) ए. कृ. को.-परष्षि।

दूहा ॥ अंगुलि जल मंडत न्टपति। जव चित्त मलमुत्ति ॥
अलहल भै अंमन कियौ। पम्मीति बाल निपत्ति ॥ छं० ॥ ११७५ ॥
गौष निरष्षहि सुभ्भ चिय। हियै हरष्षहि बाल ॥
उभै पानि एकत करिय। दैषि गुरज्जन हाल ॥ छं० ॥ ११७६ ॥

थाल के मोती चुक जाने पर दासी का गले की पोत पृथ्वीराज के हाथ में देना। यह देखकर पृथ्वीराज का पीछे फिर कर दासी से पूछना कि तू कौन है और दासी का उत्तर देना कि मैं रनवास की दासी हूं।

छन्द नराज ॥ नराज माल छंद ए कहंत कब्बि [१]चंद ए।
अपंत अंगुलीय दान आन सोभ लग्ग ए ॥
मनों अनंग रत्त सेय रंभ इंद पुज्जए।
सु पानि बार थक्कि थाल मुत्ति बित्तए ॥ छं० ॥ ११७७ ॥
पुनेपि हथ्थ कंठ तोरि पोति पुंज अप्पए।
... . ॥
सुटेरि नैन फेरि रेन तानि पत्ति चाहियं।
तरप्पि दासि पास कंपि संकियं न बाहियं ॥ छं० ॥ ११७८ ॥
भयं चक्यौ भयान राज गात अम्म दिष्षयौ।
कै स्वर्ग इंद गंग में तरंग नित्त पिष्षयौ ॥
अनेक संग रूप रंग भूप जानि सुंदरी।
उछंग गंग मझ्झि धुक्कि स्वर्ग पत्त अच्छरी ॥ छं० ॥ ११७९ ॥
हों अच्छरी नरिंद नाहि दासि ग्रेह पंगुरे।
जु तास पुत्ति जम्म छंडि ढिल्लि नाथ अद्दरे ॥
सपन्न सूर चाहुआन मन्न एम जानये।
करी न केहरी न दीप इंद एन थान ए ॥ छं० ॥ ११८० ॥
प्रतष्य हीर जुद्ध धीर जो सुबीर संचही।

(१) मो.-बन्दए।

बरंत प्रान मानि मीच सौ सु देन गंठही ॥
सुनंत सूर अस्व फेरि तेज ताम हंकयं।
मनों दरिद्र रिद्ध पाइ जाय कंठ लग्गयं ॥ छं० ॥ ११८१ ॥
कनक कोटि अंग धात रास बास मालची।
रहंत भौंर झोर स्याम छब तच कामचीं ॥
सुधा सरोज मौजयं अलक अल्लि हल्लियं।
मनों मयन्न रत्ति रन्न काम पास घल्लियं ॥ छं० ॥ ११८२ ॥
करस्सि काम कंकनं जु पानि फंद माजए।
जु भावरी सषी सु लाज झुंड सो बिराज ए ॥
अनेक संग डोर रंब रत्त मत्त सस्सियं।
जु संगही सरोज सोभ होत कंत तस्सियं ॥ छं० ॥ ११८३ ॥
अचार चारु देव सब्ब दोउ पष्ष जंपियं ॥
सु गंठि दिट्ठ एक चित्त लोक लीक चंपियं ॥
सु इंद्रनी जु इंद्र जानि गंध्रवी विवाहयं।
मुसक्कि मंद हासयं समुष्ष दिष्षि नाहयं ॥ छं० ॥ ११८४ ॥
सु अंगुली उचक्कि एक देवतानि सुंदरी।
मिलंत होय कथ्थ मोहि स्वर्ग वास [1]मंदरी ॥
अनेक सुष्ष मुष्ष सास जुद्ध साध लग्गियं।
सुकंत कंति अष्षिता तमोरि मोरि अष्षियं ॥ छं० ॥ ११८५ ॥
दूहा ॥ इहि विध [2]धिरताई कहत। विद्धिय विद्धि निषद्ध ॥
सुष्ष सु विद्धय जान सें। मुष्षह विद्धि निषिद्धि ॥ छं० ॥ ११८६ ॥
दिषन सासु सहस वलिय। अरि बल सिंघनि डार ॥
कानिन गन अनभंग है। मत्ति तेन दह च्यार ॥ छं० ॥ ११८७ ॥
चक्कित चित्त चहुआन हुअ। दरसि दासि तन चंद ॥
तन कलंक कट्टन मिसह। जहां रन्न विष बद ॥ छं० ॥ ११८८ ॥

दासी का हाथ से ऊपर को इशारा करना और पृथ्वीराज का संयोगिता को देख कर वेदिल होजाना।

(१) ए. कृ. को.-संगरी। (२) ए. धिरसाई कृ. को.-धिरताई कहै।

मुरिल्ल ॥ दरसि दासि तन रूप बर ठड्डी । भेद बांध मंडुर तन चड्डी ॥
उष्ट कंप जल नेंन जंभाई । प्रात सेज ससि रोहिनी आई ॥
छं० ॥ ११८९ ॥

दासि दिष्ट चहुआन सु जोरी । रूप निहारि उभै दिसि मोरी ॥
इंद्र इंद्र रस भरि ढरि चीनौ । मनो मुष रोष वारुनी पीनो ॥
छं० ॥ ११९० ॥

करिवर दासि संजोगि दिषाई । दिष्षत न्रिप दुरि तन भय गाई ॥
झंकत तुछ तन सब्ब न सारन । सुकल ससि रवि हस्सै पारन ॥
छं० ॥ ११९१ ॥

दूहा॥ चंद चमक झंषिम गवष । चंद्र पत्ति दुति मार ॥
मनों बदन चहुआन कौ । बंधति बंदर वार ॥ छं० ॥ ११९२ ॥

संयोगिता का इच्छा करना कि इस समय गठ बंधन हो जाय तो अच्छा हो ।

मुरिल्ल ॥ कुसल जोग[1] राजन चित हट किय । जनम पुब्ब प्रथिराज षट्ट किय ॥
बर बिचार बर बाल बुलाइय । गंठ जोरि ग्रह बर चल्लाइय ॥
छं० ॥ ११९३ ॥

संयोगिता का संकुचित चित्त होना ।

दूहा ॥ जौ जंपौ तौ [2]जित्त हर । अनजंपै बिहरंत ॥
अहि डट्ठै छच्छुंदरी । हियै बिलग्गी बंति ॥ छं० ॥ ११९४ ॥

ऊपर से दस दासियों का आकर पृथ्वीराज को घेर लेना ।

चन्द्रायन ॥ उतर देन संजोगिय धाइय दासि दस ।
चावद्दिसि चहुआन सु बिट्टिय कीय बस ॥
नही कोट दै ओट सु गट्टिय काम कस ।
मनुं दह रुद्र न बिंटि करै मन मध्य बस ॥ छं० ॥ ११९५ ॥

दासियों का पृथ्वीराज पर अपनी इच्छा प्रगट करना ।

(१) मो. रोग । (२) ए. कृ. को-चित्त ।

दूहा ॥ सुक्कि सुबर चहुआंन को । अली सु कहिय जु बत्त ॥
पुब्ब अंक विधि बर लियौ । को मेटे विधि पत्त ॥ छं० ॥ ११९६ ॥
पानि ग्रहन संजोगि कौ । जोइ सु देवनि ग्रेह ॥
यों नथि भाविति भाव गति । मनु पुच पंग सु एह ॥छं०॥ ११९७ ॥

संयोगिता की भावपूर्ण छवि देख कर पृथ्वीराज का भी बेबस होना ।

कवित्त ॥ देषि तथ्य संजोगि । नेह जल काम करारे ॥
हाय भाय विभ्रम । कटाच्छ दुज बहु भंति निनारे ॥
रचित रंग झंकोर । [1]वयन अंदोल कसय सब ॥
हरन दुष्य द्रुम रुम मिवाल । कुच चक्र वाक सोदि सब ॥
द्रिग भवर मकर बिंबर परत । [2]भरत मनोरथ सकल सुनि ॥
[3]बर बिहुर न्रपति म्रनाल नें । नन जानो किहि घटिय गुनि ॥
छं० ॥ ११९८ ॥

सखियों की परस्पर शंका कि व्याह कैसे होगा ।

दूहा ॥ मंगल कढि पानि ग्ग्रहन । सुष्य संजोग सु बंक ॥
दिषि विवाह सुभ्यौ वदन । ज्यौं सुंदरि ससि पंक ॥ छं० ॥ ११९९ ॥

अन्य सखी का उत्तर कि जिनका पूर्व संयोग जाग्रत है उनके लिये नवीन संबंध विधि की क्या आवश्यकता ।

कवित्त ॥ सुनि सषि सषि उच्चरिय । कोन बंध्यौ अकास मज ॥
अमर न देषे देव । बेद गंध्रब्ब रिषिय सुज ॥
रुषमनि अरु गोविंद । वेद गंध्रब सुष किन्नौ ॥
दमयंतीं नल व्रत्त । पन्न अग्गं तिन लिन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वैन अंदोल कसय सव ।
(२) ए. कृ. को.- भरत मनों मुनि सकल अंग ।
(३) ए. कृ. को.-वर विदुर नृपति मूनालते तत जानो केहि दाहि लागि ।

यों हृत्त लीन सुंदरति पन । भावि अगें सो सुन्नही ॥
संजोगि अंग जो विहि लिष्षौ । सो मिटे न सिर नन धुन्नही ॥
छं० ॥ १२०० ॥

दूती का पृथ्वीराज और संयोगिता को मिलाना ।

दूहा ॥ कहि करि न्रप संजोगि फुनि । दिसि सुहथ्य बहु लाइ ॥
झिलि कमोद सत पत्त रवि । दूती दूह न माइ ॥ छं० ॥ १२०१ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ गंधर्व विवाह होना ।

हनूफाल ॥ संजोगि गहि न्रप हथ्थ । मनों सरज जोरित नथ्थ ॥
संजोगि न्रप बर राज । उप्पंम कवि बर साज ॥ छं० ॥ १२०२ ॥
पद्मिनिय पत्त प्रमान । हुत्त अंपिआन अधान ॥
सषि बिंट दंपति सोभ । कविराज ओपम लोभ ॥ छं० ॥ १२०३ ॥
दिषि चंद रोहिनि लास । गइ लास कुमुदनी पास ॥
फिरि रंभ आरंभ कीय । न्रप वाम वाम सुलीय ॥ छं० ॥ १२०४ ॥
मन बंध मन दै दान । न्रप छोरि गंठ [1]प्रवान ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १२०५ ॥

दूहा ॥ वरि चल्यौ ढीली न्रपति । सुत जयचंद कुमारि ॥
गंठ छोर दच्छिन फिरिग । प्रान करिग मनुहार ॥ छं० ॥ १२०६ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता से दिल्ली चलने को कहना ।

कहि चल्यौ चहुआन चित । उरझे चित्त सु [2]पथ्थ ॥
[3]बद चल्ले प्रथिराज न्रप । हठ संजोगि सु तथ्थ ॥ छं० ॥ १२०७ ॥

श्लोक ॥ प्रयाने पंगपुत्री च । जैतिकं जोगिनीपुरं ॥
विधि सर्व निषेधाय । तांबूलं ददतं न्रपं ॥ छं० ॥ १२०८ ॥

संयोगिता का क्षण मात्र के लिये विकल होकर स्त्रीजीवन पर पश्चाताप करना ।

गाथा ॥ सुनि इंदो अनुराओ । दिट्ठौ रिझाइ सब्ब सो अप्पं ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रमांन । (२) मो.-तथ्थ । (३) ए. कृ. को.-बदालि चले ।

ई इष्यं इवि छुट्टा । हाइं जे बज्जनो हिययौ ॥ छं० ॥ १२०९ ॥
इंजेइ आइ नंषी । कंपौ तन्नपाइं काम संजोइ ॥
निरधा अधार विनसं । या [1]बाला जीवनं कुच ॥ छं० ॥ १२१० ॥
दूहा ॥ नर आसुर सु रंम मन । [2]सबल बंध अबलेह ॥
यान लाज चहुआन कौं । टुट्टिय संकर नेह ॥ छं० ॥ १२११ ॥

दंपतिसंयोग वर्णन ।

चौपाई ॥ रति संजोगि जगि उप्पम नेनं । रखौ विचारि कवि वर मेनं ॥
जोग ग्यान द्रिग पुच्छि उचारै । तौ दंपति रति ओपम मारै ॥
छं० ॥ १२१२ ॥
मेर जेम मो. मन सा आनं । जो इत लीय जिही चहुआनं ॥
सुष भरि बेंन नेंन अवलोकं । गंठि बंधि पुब्बह परलोकं ॥
छं० ॥ १२१३ ॥
कछुं कंति धर मुछि बल बुझी । पीन देहु दुति छुट्टी लझी ॥
कल अधकी अध छिप्पत मग्गं । हकि चतुरथ्थि सुकल ससि अग्गं ॥
छं० ॥ १२१४ ॥
मुच्छि परंत प्रजंक प्रसंसी । [3]माइस अद्ध घरी घट चंसी ॥
षोडस आदि कलंकल कंपी । रष्षि सषी सषि सौं सषि जंपी ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता प्रति दक्षिण से अनुकूल होजाना।

दूहा ॥ [4]सुनि अंदोअन राव दिठ । रिझझाए सब सोइ ॥
फंदह मांहि विछुट्टही । देह जे बज्ज न होइ ॥ छं० ॥ १२१६ ॥
वर दच्छिन पुब्बह न्टपनि । भौ अनकूल प्रमान ॥
कंक कन्ह अष्यन कवन । पन्न सु धन परिमान ॥ छं० ॥ १२१७ ॥
मुरिल्ल ॥ मन रूषी तन पिंजर पीरे । दंपति दुष जंपलि तन तीरे ॥
हरष दुष्य सुष सषी प्रगासी । परमहंस गुर वैन सन्यासी ॥ छं० ॥ १२१८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-बाके । (२) ए.-सषल ।
(३) ए. कृ. को.-माहस अद्ध घरी घर संसी ।
(४) ए. कृ. को.-सुनि इन्द्रानव रावदित ।

संयोगिता का दिल खोल कर अपने मन की बातें करना, प्रातः काल दोनों का बिलग होना।

कवित्त ॥ दच्छिन बर चहुआन। कीय अनुकूल पिम्म तन ॥
बिरह बाल द्रग उमगि। अंषि कनक क्रप नंधन ॥
न्रप मन धन दभ्भिय सनेह। देह दुष काम वाम अगि ॥
ज्यों कुलाल घट अग्गि। पचषयौं उमझ्झि उद्दि लगि ॥
दंपत्ति नेह दुष दुहुन कहि। बिछुरि साथ चक्रवाक जिम ॥
ज्यों सहै दुहन जिहि कुल बधू। कहत साष पंजर सु तिम ॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गुरुराम का गंगा तीर पर आ पहुंचना।

दूहा ॥ पहुंचायौ दस दासि न्रप। गंग सपत्तौ ताम ॥
वह दिष्यौ गुरु राज नै। ज्यौं रति बिछुरति काम ॥ छं० ॥ १२२० ॥
चौपाई ॥ दिसि गुर राज राज तन चाहं। मनो गजिय उर उज्जल गाहं ॥
दिष्षि सु छबि ढिल्ली चहुआनं। जानै कन्ह सु लछियं जानं ॥
छं० ॥ १२२१ ॥

पृथ्वीराज का गुरुराम को पास बुलाना।

दूहा ॥ बर दंपति दस दासि ढिग। दंद जुदो अनु व्याह ॥
दुहु दिसि मंगल बज्जिहै। बिच मंगल बरधाह ॥ छं० ॥ १२२२ ॥
तब देषिय गुर राज न्रप। चलि आइय तिहिं पास ॥
मन देषत सीतल भयौ। बढिय राज उर आस ॥ छं० ॥ १२२३ ॥

गुरुराम का आशीर्वाद देकर सब बीतक सुनाना।

दै असीस उच्चारि अज। संभरि संभरि वार ॥
सुभर सूर सामंत सों। पंग सु जुद्ध प्रहार ॥ छं० ॥ १२२४ ॥
कवित्त ॥ बीर हेम झुझ्झयौ। वाम जग्गयौ जु कंक अगि ॥
बर दंपति हथ लेव। बधि बंदी उपंम मनगि ॥
बरसै सब उतरंत। चढ़त सम राज पाज बंधि ॥

कै भगि मगि भल्लि पाल । मंगि बाला जोवन संधि ॥
आचार चार दुहु पष्य बर । देव देव मिलि जंपइय ॥
भांवरिय लाज सषि ज्यों जुरिय । धीर बीर [1]मिलि बज्जइय ॥
छं० ॥ १२२५ ॥

पऱ्यौ राव लंगरी । पंग भंजे परधानं ॥
इर्द दमन कूरंभ । परे दुरजन [2]सलषानं ॥
सिंघ मिले संमरह । सिंह न्त्रिबान सभानं ॥
बर प्रताप तूँवर ततार । सकति सुनि न्त्रिप कानं ॥
रघुबंस भीम जै सिंघ दिनि । भान भष्य गौ झुल्लयौ ॥
इन परत पंग ढिल्ली बहुअ । न्त्रिप ढिल्लीस न ढिल्लयौ ॥
छं० ॥ १२२६ ।

गुरुराम का कहना कि सामंतों के पास शीघ्र चलिए ।

दूहा ॥ ढिल्ली वै संभरि न्त्रपति । बल कहंतह बेर ॥
फिरि सामंतन स्हूर मिलि । करहि न न्त्रपति अबेर ॥छं० ॥ १२२७
दुज दासी संयोग पै । कहन सोभ कलिरीय ॥
दे सुराज चहुआन चित । ओडन मुक्किय जीय ॥ छं० ॥१२२८॥

कवित्त ॥ इह सर सुनि सजोगि । जोग पायौ न देव मुनि ॥
तिहि सर सुष्य न दुष्य । जीत भौटरै जम्म फुनि ॥
रंभा भर जुग्गिनी । गिद्ध बेताल सु कंपी ॥
हंस हंस उड़ि चले । रह्हि जल कमल नियंपी ॥
रस बीर विचे सेवाल कच । किंत्ति भवर तिहि गंजइय ॥
[3]रत्तय म्रनाल किंत्तिय अथय । स्हूर सुतन मन रंजइय ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

दूहा ॥ सुनिय बयन संजोगि कहि । लिषि दिय पट्ट प्रमान ॥
दई करै सो न्त्रिम्मयौ । मिलन तेहु चहुआन ॥ छं० ॥ १२३० ॥

कन्ह का पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का चलना और संयोगिता का दुखी होना ।

(१) ए. कृ. को.-मिसि । (२) ए. कृ. को.सलयानं । (३) ए. को.-इत्तह ।

चौपाई ॥ लै पटि बंधि कन्ह गिरि संगं। चल्यौ न्रपति [1]जुद्ध रस अंगं॥
जिम जिम बर चलै चहुआनं। तिम तिम बाल प्रमुक्कै प्रानं॥
छं० ॥ १२३१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज। पास गुर कन्ह मन ॥
चिंति स सूर सँजोग। चल्यौ चहुआन राइ पन ॥
सौ क्रंम दस ता अग्ग। पंग दल रुक्कि जुद्ध बल ॥
इक कहै [2]प्रिथु पथ्थ। इक तप जुत्त जुधिष्ठल ॥
रुक्कयौ रतन सा निद्धि पत। रतन सौंह चिढ़ मग्गि गसि ॥
हंकारि सूर सम्हौ फिरिय। संभरि वै कट्टीति असि ॥छं॥१२३२॥

पृथ्वीराज का घोड़ा फटकार कर अपनी फौज में जा मिलना।

नंचिहै भान नरिंद। बज्जि घुरतार कंपि भुअ।
बज्रघात न्रिघघात। बज्र संपत्त कंपि ध्रुअ॥
अष्ट सु चल दह विचल। उड्डि बंबर धर धुम्मर॥
बजी सद्द पर सद्द। महतजि रह्हिग मद्द करि॥
भै चक्क सुभर न्रप बीर बर। लष्षि बीर चहुआन बर॥
[3]बर नचे बीर सुनि कम हंसे। जियत बत्त प्रथिराज नर॥
छं० ॥ १२३३ ॥

मुसल्मान सेना का पृथ्वीराज को घेरना पर कन्ह का आड़ करना।

रसावला ॥ राजरुक्के अरी, सिंघ रोहं परी। पंजरं षोलियं, बीर सा बोलियं॥
छं० ॥ १२३४ ॥
षग्ग बंकी कढ़ी, तेज बीयं बढी। बाल नष्षं भरं, मोह [4]मंमं भरं॥
छं० ॥ १२३५ ॥
राज विष सारयं, पंच हज्जारयं। बंक धंकं डनी, बीर नंषे धुनी॥
छं० ॥ १२३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दुद्ध। (२) मो.-प्रथिराज।
(३) ए. कृ. को.-बरनचे। (४) ए. कृ. को.-मत्तं भरं।

राषि सज्ज धनं, बोलि पत्त मनं। फौज फट्टी फिरी, कन्ह रक्के अरी॥
छं० ॥ १२३७ ॥

सामि कहु बलं, काज रव्व षलं। ...., ... ॥
छं० ॥ १२३८ ॥

सात मीरों का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और पृथ्वीराज का सब को मार गिराना।

कवित्त ॥ सत्त मीर जम सम सरीर। अड़ रक्यौ न्रप अग्गा॥
राज कन्ह दुज गुरू। सार छल सूरह लग्गा॥
नग सम सत्त पुरष्ष। पूर मंचह असि बर पढ़ि॥
होम जाप जुथ्यौ सु। बीर सरसं प्रहार चढ़ि॥
सम सेवग सेव सु स्वामि ध्रत। किम्मि देव संतोष बलि॥
षँड अग्ग भाग प्रथिराज कौ। देव भ्रम्म उग्गारि बल॥
छं० ॥ १२३९ ॥

फिरि पच्छौ चहुआन। बान आरोह प्रथम करि॥
षां बहिरम बरजही। फुटि टट्टर टरिग्ग धर॥
बीय बान संधान। षान पीरोज सु भग्गा॥
पष्षर अस्व पलान। मीर सहितं धर लग्गा॥
त्रय बान कमान सु संधि करि। मुगति मग्ग गुन चंद कहि॥
जल्लाल मीर सम बल प्रचंड। बालि प्रान संमह सढहि॥
छं० ॥ १२४० ॥

बान चवथ्थै राज। तूटि कंमान पनक्की॥
उडि गासी छुटि तीर। (१)पंच बहु सह भनक्की॥
इति उत्तरि चहुआन। षग्ग कढि बज्ज कि पायौ॥
दुति उप्पम कविचंद। तीय विक्रम असहायौ॥
नषि राज बाज उप्पर वसिस। सक्क मीर अवसान चुकि॥
षग मीर ताप तप्यौ नही। मुक्कि अस हिसि बाम धुकि॥
छं० ॥ १२४१ ॥

(१) मो.-पंच।

दूहा ॥ हय गय बर गंभीर चढ़ि। नर भर दिसन दिसान ॥
पंग राव कोपिय सुबर। गहन मेछ चहुआन ॥ छं० ॥ १२४२ ॥
रैन परै सिर उप्परै। हय गय [1]गतर उछार ॥
मनहु ठग्ग ठग मूरि लै। रहिग सबैं मुंछार ॥ छं॰ ॥ १२४३ ॥

पृथ्वीराज को सकुशल देख कर सब सामंतों का प्रसन्न होना।

मनहु बंध अनभूति धर। है तिन आनत थट्ट ॥
बचन स्वामि भंग न करहि। सह देषहि न्रप बट्ट ॥छं०॥१२४४ ॥
अवलोकति तन स्वामि मन। भौ सामंतनि सुष्ष ॥
हँसहि सूर सामंत सुष। कायर मानहि दुष्ष ॥ छं० ॥ १२४५ ॥
धीरत धरि ढिल्लेस बर। बहु दंती उभ [2]रोभ ॥
न्रपति नयन तन अंकुरे। मनहु मद्द गज सोभ ॥ छं० ॥ १२४६ ॥

सामंतों की प्रतिज्ञाएं।

कुंडलिया ॥ देषि सुभर न्रप नेन। आनि भौ आनंद चंद ॥
अरि गंजे रुप न्रिप्प। बीर हक्के ग्रह दंद ॥
बीर हक्के ग्रह दंद। मुकति लुट्टे कर रसी ॥
आज सामि रन देहि। बरै अच्छरि कुल लस्सी ॥
काम तेज संभरी। देव कंदल जुध पिष्षे ॥
गुरु गल्ह उद्धरै। टुट्टि धारा रवि दिष्षै ॥ छं० ॥ १२४७ ॥

कन्ह का पृथ्वीराज के हाथ में कंकन देख कर कहना यह क्या है।

दूहा ॥ हरषवंत न्रप भत्त हुअ। मन मझ्झह जुध चाव ॥
मिलत हथ्थ कंकन लष्यौ। कह्यौ कन्ह इह काव ॥छं०॥१२४८ ॥
गगन रेन रवि मुंदि लिय। धर भर छंडि फनिंद ॥
इह अपुब्ब धीरत्त तुहि। कंकन हथ्थ नरिंद ॥ छं० ॥ १२४९ ॥

(१) ए. कृ. को.-गज। (२) मो.-रोस।

हथ्थह कंकन सिर तिलक । अच्छित लगे लिलार ॥
कंठ माल तुअ कंठ नहि । कहि न्रप कवन विचार ॥छं०॥१२५०॥

पृथ्वीराज का लज्जित होकर कहना कि मैं अपना पण पूरा कर चुका ।

चौपाई ॥ सुनि सुनि बचन भुमि सिर नायौ । क्रपन दान ज्यौं बंजि दुरायौ॥
पंच पंच अब लीन क चिंतर । छंडित बहि दियौ तव उत्तर ॥
छं० ॥ १२५१ ॥

बरिय बाल सुत पंगह राय । वह व्रत भंग मोहि हुत जाइ ॥
तिहि मुंधहि अब जुद्ध सुहाई । अछ्थि अवासह देउं बताई ॥
छं० ॥ १२५२ ॥

कन्ह का कहना कि संयोगिता को कहां छोड़ा ।

तिहि तजि चित्त कियौ तुम पासं । छंडिय कन्ह रुदंत अवासं ॥
सौ सुभट्ट महि एक भट होइ । तौ नृप धनहि न मुक्कै कोइ ॥
छं० ॥१२५३ ॥

जौ अरि थाट कोरि दल साज । तौ दिल्लिय तषत दै हि प्रथिराज॥
इतनौ नृपति पुच्छियै ताहि । परनि मुक्कि सुंदरि इह होइ ॥
छं० ॥१२५४ ॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि युद्ध में स्त्री का क्या काम ।

श्लोक ॥ जज्ञकालेषु धर्मेषु । कामकालेषु शोभिता ॥
सर्वंच वल्लभा बाला । संग्रामे नन गेहिनी ॥ छं० ॥१२५५ ॥

कन्ह का कहना कि धिक्कार है हमारे तलवार बांधने को यदि संयोगिता सकुशल दिल्ली न पहुंचे ।

चौपाई ॥ हम सौ रजपूत रु सुंदरि एक । मुक्कि जांहि ग्रह बंधहि तेक ॥
जौ अरियन थट कोरि दल साजहि । तौ दिल्लिय तषत दंहि प्रथिराजहि॥
छं० ॥१२५६ ॥

कवित्त ॥ महि मंडन महिलान। अंग मंडन सुष मंडन ॥
दुष बंटन श्रम चसन। नेह पूषनि मन षंडन ॥
काम बंत सोभाय। पूर चित समर विमत्तन ॥
भय मुष दिष्षत मोह। लीन भौ अनुरत रत्तन ॥
संसार सुबरनी सरम रूष। करहि सरन अनमुष्ष रुष ॥
अरि धरनि मुक्कि धारन न्रपत। चलहि कित्त जुग एक मुष ॥
छं० ॥१२५७॥

पुनः कन्ह के वचन कि उसे यहां छोड़ चलना उचित नहीं है।

दूहा ॥ जग्गि काल धूम काल कौ। सब्ब काल सोभित्त ॥
पूरन सब सारथ्थ लग। मोकिल ना मोहित्त ॥ छं० ॥ १२५८ ॥
भर बंकै अच्छरि बरन। रस बंके दिसि बाल ॥
दुहु बंके पारस करन। चहि सूरत्तन साल ॥ छं० ॥ १२५९ ॥

पृथ्वीराज के चले आने पर संयोगिता का अचेत होजाना।

चलि चलि सूरति सथ्थ हुअ। [१]रन निसंक मन भौन ॥
सह अचार मुष मंगलह। मनहुं करहि फिरि गौन ॥
छं० ॥ १२६० ॥
पति अंतर बिछुरन विपति। न्रपति सनेह संजोग ॥
सुनत भयौ सुष कौन विधि। दैव जिवावन जोग ॥ छं० ॥ १२६१॥
सुरिल्ल ॥ पानि परस अरु दिट्ठ विलग्गिय। सा सुंदरि कामागिन जग्गिय ॥
[२]षिन तलपह अलपह मन कीनौं। ज्यौं वर वारि गये तन मीनौ ॥
छं० ॥ १२६२ ॥
अंगन अंग सु चंदन लावहि। अरु राजन लाजन समुझावहि ॥
दै अंचल चंचल द्रिग मूंदहि। विरहायन दाहन रवि उदहि ॥
छं० ॥ १२६३ ॥
फिरि फिरि बाल गवष्षनि अष्षिय। तासिष दैन बैन वर सष्षिय॥
विन उत्तर सु मौन मन रष्षिय। मन बच क्रम प्रीतम रस कष्षिय॥
छं० ॥ १२६४ ॥

---

(१) ए. कृ.-को.-नर (२) मो.-षिन तष्षन तलपह।

सखियों की उसे सचेत करने की चेष्टा करना ।

कवित्त ॥ बाली बिजन फिरन । चंद चारौ कितम रस ॥
　　के घन सार सुधारि । चंद चंदन सो भति लस ॥
　　बहु उपाय बल करत । बाल चेतै न चित्त मय ॥
　　है उच्चार उचार । सरवी बुझयति हयति हय ॥
　　श्रवनें सु नाइ जंपै सु अलि । नाम मंच प्रथिराज बर ॥
　　आवस निवत्त अगाद भय । तं निबलह द्रिग छिनक कर ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १२६५ ॥

संयोगिता का मरने को तैयार होना, सखियों का उसे समझा कर संतोष देना ।

दूहा ॥ तन तज्जै संजोगि पिय । गहि रष्षी फिरि बाल ॥
　　जानि नछचिन परि गिरी । चंद सरद्दति काल ॥ छं० ॥ १२६६ ॥
अरिल्ल ॥ बहुत जतन संजोगि समाए । सोम कमल दिनयर दरसाए ॥
　　उझकि झंकि दिष्यो प्रन पत्तिय । पति दिष्षत मन महि अलि [1]रत्तिय॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १२६७ ॥
　　व्याह नाथ संजोगि सु लच्छन । जिहि तुम कर साह्यौ बर दच्छिन॥
　　सा तुम्र तात भए दल तत्तौ । सरन तोहि सुंदरि संपत्तौ ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १२६८ ॥

संयोगिता का वचन ।

दूहा ॥ ता मुष मुंदिन मोद किय । अलियन जंपहु आलि ॥
　　दाधेऊ पर लवन रस । म्रतक न दिज्जै गारि ॥ छं० ॥ १२६९ ॥
　　अंध न द्रप्पन दिष्षिहै । गुंग न जंपहि गल्ह ॥
　　अश्रुत नर गान न लहै । अवल न [2]करै सवल्ल ॥ छं० ॥ १२७० ॥
　　मैं निषेद किन्नौ जु कथ । दुज अरु दुजिय प्रमान ॥
　　टरै न गंभ्रव गंभ्रविय । विधि कौनौव प्रमान ॥ छं० ॥ १२७१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-राज्जिय ।　　(२) ए. कृ. को.-करै ।

श्लोक ॥ गुरजनं मनो नास्ति। तात आज्ञा [1]विवर्जितं ॥
तस्य कार्यं विनश्यंति। यावत् चंद्रदिवाकरौ ॥ छं० ॥ १२७२ ॥

दूहा ॥ इह कहि सिर धुनि सषिनि सों। दिषि संजोगिय राज ॥
जिहि प्रिय जन अंगुलि करै। तिहि प्रिय जन किहि काज ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

इह चिंतित बत्ती सु सुनि। क्रोध ज्वाल सरि अंव ॥
रही जु लिषिये चित्त मैं। ज्यों सरद प्रतिव्यंब ॥ छं० ॥ १२७४ ॥

संयोगिता का झरोखे में झांकना और पृथ्वीराज का दर्शन होना।

कुंडलिया ॥ धुनत गवष्पन सिर लष्यौ। अंबुज मुष ससि अंब ॥
अनिल तेज झलहल कंपै। सरद इंद्र प्रतिव्यंब ॥
सरद इंद्र प्रतिव्यंब। चिंति चतुरानन आनन ॥
निरषि राज प्रथिराज। साज सुंदरि अपकानन ॥
हय सत भट्ट सु भूप। मग्ग भोहैं न गनंतन ॥
मानि विसव्वा वीस। सीस धुनि धुनि न धुनंतह ॥छं०॥१२७५॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को मूर्छा से जगाकर कहना कि मेरे साथ चलो।

चौपाई ॥ झंकत न्रप दष्पी बर बुल्लै। गंग निकट प्रतिव्यंब सो हल्लै ॥
चिहलै पच्यौ चंद तरपीनौ। कै म्रग तिन्न देषि मन मीनौ ॥
छं० ॥ १२७६ ॥

मुच्छि बाल संजोगि उठाई। देवर तर दिसि दिसि पट्ठाई ॥
कै ओतान सूर सुनि झूठे। कै कातर अवही न्रिप दीठे ॥
छं० ॥ १२७७ ॥

दूहा ॥ ए सामंत जु सत्त कहि। पंग पुत्ति घटि मंत ॥
एक लष्ष भर लष्षियै। जौ कढ्ढै गज दंत ॥ छं० ॥ १२७८ ॥

---

(१) मो.-नर्जितं।

गाथा ॥ मदनं सरा लति विविहा। जिन्हा रटयोति प्रान [1]प्रानेसं ॥
नयन प्रवाहति विवहा। अह बांमा कंत कथ्थायं ॥छं०॥१२७९॥

आर्या ॥ कहु लीभा सो चंद लासौ। मन मध्थं पहु पांजलि ॥
वरन मान निसा दिवसे। धुनयं सीस जो मम ॥ छं० ॥ १२८० ॥

संयोगिता का कहना कि मैं कैसे चलूं यदि लड़ाई में मैं लूट गई तो कहीं की न रही।

दूहा ॥ किम हय [2]पुट्टहि आरुहौं। घटि दल संगह राज ॥
भीर परत [3]जो तजि [4]चल्यौ। तब मो आवै लाज ॥छं०॥१२८१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मेरे सामंत समस्त पंग दल का संहार कर सकते हैं।

तब हँसि जंप्यौ न्रप बयन। गहर न करियै अब्ब ॥
सब्ब पंग दल संहरों। सुंदरि लाज न तब्ब ॥ छं० ॥ १२८२ ॥

संयोगिता का कहना कि जैसा आप जाने पर मैं तो आपको नहीं छोड़ सकती।

कवित्त ॥ सुंदर जंपै बैंन। ढीठ दिल्लिय नरेस सुनि ॥
कहहि सूर सामंत। पवन हल्लहि पहार फुनि ॥
अजहौं अलियों चवै। गंठि दैहै [5]सु जंम कहु ॥
जो सद्द सुरलोक। लहहि अच्छरि मन संकहु ॥
इह चित्त कंत इच्छहिं बहुल। बहु समूह भुज बल कहहि ॥
संदेह सास संभरि धनी। पलन प्रान पच्छै लहहि ॥
छं० ॥ १२८३ ॥

---

(१) मो.-प्रानेव।
(२) ए. कृ. कौ.-पुट्ठे। (३) ए. कृ. को.-मुहि। (४) मो.-चलों।
(५) ए.-दास।

गाथा ॥ अवलोकित न्रप नयनं। वचनं जिवहा सु कातरा सामी ॥
निंदा सह स्तुत माने। घोरं संसार पातकी ॥ छं० ॥ १२८४ ॥

संयोगिता का जैचन्द का बल प्रताप वर्णन करना।

कवित्त ॥ सिंगारिय सुंदरिय। हास उपजत वर सहह ॥
करुना वृत्ति इहि बीत। रुद्र कामिनि कथ बहह ॥
बीर कहत गंध्रब्ब। भयो भामिनी भयानक ॥
बीभच्छिय संग्राम। मनहि आचिज्ज सथानक ॥
छिन संत मंत इय कंत तुम्म। पिय बिलास दिन करि करिय ॥
इम कहै चंद बरदाय वर। कलहकंत तुम्म तौ डरिय ॥ छं० ॥ १२८५ ॥
जे पङ्गुरी बिमान। तेह पङ्गुरी बिमानह ॥
जे सारंग करार। तेह सारंग करारह ॥
जिहि कित्तिय गय कोस। तेह कित्ती गय कोसह ॥
जिहि गय सघन सरोस। तेह गय मघन सरोसह ॥
बिल्लोर पयोहर गै मलन। मलन बिलोर पयोहरह ॥
जयचंद पयानौ परठयौ। भा भुम्म हुअह बसंत रह ॥ छं० ॥ १२८६ ॥
करत पंग पायान। षेह उड्डत रवि लुक्कै ॥
महुरै जल पुट्टै सु। पंक सरिता सर सुक्कै ॥
पानी ठाहर षेह। एह उड्डतौ बिराजै ॥
वर पयान छावंत। भान [1]सिर पट्ट कविज्जै ॥
दिगपाल कंपि हल्लि दसो दिस। सेसपयानौ नहि सहै ॥
वर न्रपति सीस ईसं सु सुनि। भौ पंगुर तातें कहै ॥ छं० ॥ १२८७ ॥

संयोगिता प्रति गोइन्दराय का बचन।

हे कमधज्ज कुमारि। कहै गोयंद राज वर ॥
जे भर पंग नरिंद। सबैं भंजों अभंग [2]षर ॥
सम सामंत सहित्त। जंग जैचंदह मंडौं ॥
जब कोपै चहुआन। षग्ग मैमत्त बिहंडौं ॥

---

(१) चारों प्रतियों में "कूट" पाठ अधिक है। (२) ए. कृ. को.-षल।

जदपि बहुत्त गोमाय गन । तदपि म्रग्गपति नह डरै ॥
ममसंकि चित्त चिंता न करि । पहुचाऊं दिल्ली घरै ॥छं०॥१२८८॥
चढ़त पंग बर बीर । नाग बर बीर दढिय अहि ॥
जिहि कर करिवर धरिय । धरिय ते भार विदुष महि ॥
चित्त करिग कुंडली । अप्प पोषंन बाय बर ॥
कर कढ्ढिह कब्बिवान । नाहि धारंत इक्क कर ॥
जिनि पहुमि मनी मनि सहस फन । सो फनि फुनि फुनि फनि धरिय ॥
जानें कि हथ्थ तत्त कि चिय । सुबर भाजि कर कर करिय ॥
छं० ॥ १२८९ ॥

हाहुलिराय हम्मीर का बचन ।

दूहा ॥ हाहुलि राव हमीर कहि । सुनि पंगानी बत्त ॥
एक भिरै असि लष्ष सों । सो भर किमि भाजंत ॥छं०॥१२९०॥

संयोगिता का बचन ।

कवित्त ॥ कोरि एक चंचल । चलंत हवर बर पष्षर ॥
ता उप्पर दस सहस । वालि जिसे असि होइ जलधर ॥
सोलह सहस निसान । सहस सत्तरि गैवर घन ॥
तीस लष्ष गेंवर प्रचंड । षग्ग फारक्क त्रभै तन ॥
चालंत सेन विजपाल सुअ । पहुमि भार फनयति मुरिय ॥
कह होइ सूर सामंत हो । पंग सु दल बल उप्परिय॥छं०॥१२९१॥

चंदपुंडीर का कहना कि सब कथा जाने दो यज्ञ विध्वंस करने वाले हमी लोग हैं या कोई और ।

चवै चंद पुंडीर इम । कह बल कथ्थह पुब्ब ॥
पंग पंग पग नरिंद कौ । जग्य बिधवंस्यौ सब्ब ॥ छं० ॥ १२९२ ॥

यह सुनते ही संयोगिता का हठ छोड़ना ।

सुनत बाल छंड्यौ सु हठ । बर [1]चढ्ढी द्रिग बंक ॥

(१) ए. कृ. को.-उट्ठरी ।

किधौं बाल मन मोहिनी। कै बिय उदित मयंक ॥ छं० ॥ १२९३॥

कन्ह वचन कि स्वामी की निंदा सुनना पाप है, हे पंग पुत्री सुन।

कवित्त ॥ सुनिय बचन बर कन्ह। सीस धुनि धुनि फुनि जंपिय ॥
भग्ग जियन म्रत सव्व। पिंड बेचिय उर थप्पिय ॥
मन्न बचन तन रत्त। ध्रम्म छुट्टै सुष भग्गा ॥
गरुअ पान जो जियन। जूह जीयन तुछ लग्गा ॥
सो ध्रम्म छचि रष्यन [1]सु तन। जो सामि निंद कानन सुनैं ॥
कातर वचन संजोग सुनि। जौ परन आन रष्षै [2]ननैं ॥छं०॥१२९४॥

कन्ह का बचन कि मैं अपने भुजबल से ही तुझे दिल्ली तक सकुशल भेज सकता हूं।

हे प्रथिराज वामंग। संग जौ कन्ह नन्ह दल ॥
हो चहुआन समथ्थ। हरू [3]रिपु राय भुजन बल ॥
मोहि विरद नर नाह। दंद को करै भुअन बर ॥
मो कंपहि सुरलोक। पंति पन गरू भूमि नर ॥
मम कंपि चंपि सुंदरि सु पहु। चढ़िग कोटि कायर रषत ॥
इन भुजन ठेलि कनवज्ज कों। तों अप्पों ढिल्ली तपत ॥छं०॥१२९५॥
तेग छोरि जद्दवन। सौंह सिर धरि करि कथ्थिय ॥
इहै सत्त सामंत। भूमि स्रृंगार भरथ्थिय ॥
अतुलित बल अतुलित प्रमान। अतुलित बलदेवह ॥
अतुलित छिति छचि न गियान। स्वामित्त सु सेवह ॥
देषहि न राज बंसहि विलगि। कलह केलि कलहंत पिय ॥
अबलत्त छंडि मन सबल करि। बिघर राग [4]सिधूव किय॥छं०॥१२९६॥
सुनि उच्चरि गोयंद। गरुअ गहिलौत राज बर ॥

(१) मो.-सुथन। (२) ए. कृ. को.-तनै। (३) ए. कृ. को.-हरो।
(४) मो.-भुजन।

बीर पंग लगि धीर। लग्गि को छरन छिन्न कर ॥
जुद्ध जूह पहु पंग। करिग गौ पैज सूर सर ॥
सबर सेन भर अग्ग। धाय दुअ लग्गि सेन धर ॥
जद्दपि सु रहि रष्षै अलष। अरकु तदपि रहि इन सरै ॥
जद्दपि अगनि सम्ही बलै। जौरन अग उंछौ'परै ॥छं०।१२६७

चंदपुंडीर का कहना जिस पृथ्वीराज के साथ में निढ्ढुरराय सा सामंत है उसके साथ तुझे चिंता कैसी।

कहै चंद पुंडीर। सूर नहि सूर घरघर ॥
घास लगै नन सस्त्र। भजै आभंग मंच बर ॥
पंग पान बुट्टंत। तन्न भज्जैन ज्वाल पर ॥
प्रथी जेम बल अवृन। संग चतुरंगो निढ्ढुर ॥
निमषेक निकष बर ब्रह्म कौ। दौरि जुगो बहुतें जुषल ॥
असि प्रान मान सामंत कौ। न्त्रिप सुंदरि नन चिंति बल ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

राम राय बड़गुज्जर का बचन।

प्रति सुंदरि न्त्रप काज। कनक बोल्यौ बड़ गुज्जर ॥
हरि चक्रह सहज वत्। जाल नन रहै बुद्धिबल ॥
कोट क्रम्म संजवत। अंति भज्जै हरि नामं ॥
नीर परस संजवत। मैल नन रहै बिरामं ॥
नन रहै गुनौ अग्गै अवधि। सिध अग्गै सिद्धि न रहै ॥
संजोग जोग भंजन क्रम। राइ सूर चंपिरु ग्रहै ॥ छं० ॥ १२६९ ॥

आल्हन कुमार का बचन।

तब बोलै अल्हन कुमार। सब्ब व्रहमंड बीर बर।
जिहि मिलंत भर सुभर। होहि तन मत्त बीर सर ॥
मिलै सरित सब गंग। होइ गंगा सब अंगा॥

(१) मो.-आंछौ।

भग्गै सब परपंच। मिलै ब्रह्म ब्रह्मह मग्गा॥
ऐसे सुबीर सामंत सौ। ढील बोल बोलै बदन॥
जानै न बत्त बर बंध की। पहुंचावै ढिल्ली सुधन॥छं०॥१३००॥

सलष पँवार का बचन।

बोलि सलष पांवार। पार लभ्भौ न सत्तबल॥
ब्रह्म पार पायौ न। रूप अवरेष रूप कल॥
मेघ सोय आग्राज। पार वायन में धारिय॥
सो कहि असति चरित्त। ब्रत पाषँड अधिकारिय॥
सौ जुभ्भ पार धारइ धनी। जुद्ध पार लभ्भौ न दोउ॥
तिहि सत संजोगि सुहै प्रलै। प्रलै राज ढिल्लीव सोउ॥छं०॥१३०१॥

देवराज बग्गरी और रामरघुवंस के बचन।

देवराज बग्गरी। बीर बाल्यौ विह से बर॥
* .... ॥छं०॥१३०२॥
कहै राम रघुवंस। सुनहि संजोगि बाल बर॥
पंग प्रलै संमूह। जगत बुभ्भन न्टप कग्गर॥
बरष सात सामंत। सोभ पत्तिन पररुष्षं॥
बर दंपती [1]निसंक। सत्त भग्गा न विसुष्षं॥
नल कमल मांहि कंद्रप रहै। पति रष्षै चहुआन इम॥
दिषि बत्त सति संयोग इह। तब सु प्रलै सासहित क्रम॥
छं०॥१३०३॥

पुनः आल्हन कुमार का बचन।

फुनि जंप्यौ अल्हन कुमार। सुनि सुंदरी सूर बल॥
बर अगनित अंजुली। पंग सो सै समुंद दल॥
सार मेघ बुट्ठतैं। बीर टट्टी विच्छोरै॥
बर दंपति संयोगि। बंधि दल गौत न जोरै॥

---

* छं: १३०२ की चारों प्रतियों में केवल एक ही पंक्ति है शेष पंक्तियां हैं ही नहीं।
(१) ए. कृ. कों.-न सकं।

उप्पारि सरुब गो ब्रह्मनह । न्रिप रषि वज्री जेम कल ॥
कमधज्ज इंद बुट्टै म्र पुनि । सुमन संच जानैं अकल ॥छं०॥१३०४

पल्हन देव कच्छावत का बचन।

पल्हनदे कूरंभ । लाज बड पन बड बीरं ॥
न्रिप लग्गै नन अंच । पंच औ पंच सरीरं ॥
सोम नंद संभरी । छूर सो भ्रम्म न छाई ॥
सौ मे एकज होइ । तेज मुक्कै ग्रह ओई ॥
इक अग्ग पंच औ सत्त है । सत्त मेर सत जौन तजि ॥
नन डरहि चलहि प्रथिराज संग । रषत काटि कायरह सजि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

संयोगिता का बचन कि यह सब है पर दैव गति कौन जानता है।

तब कहंत संजोगि । इक बन मझ्झ सरोवर ॥
तहं पंकज्ज प्रफुल्लि । सरस मकरंद समोभर ॥
आय इक मधु करह । तथ्थ विस्रामिंगु जा रत ॥
रैंनि प्रपत्तिय ताम । रह्यौ मधि भंवर विचारत ॥
ह्वैहै विनित जामनि सबै । तबै गमन इह बुद्ध किय ॥
बिन प्रात होत बिधि इह करिय । से कलिका गजराज लिय ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

दाहिमा नरसिंह के बचन कि सुन्दरी वृथा हमलोगों का क्रोध क्यों बढ़ाती है। कहते हैं कि सकुशल दिल्ली पहुचावेंगे।

तब दाहिम नरसिंघ । सिंघ बुल्ल्यौ बंचाइन ॥
सुनिय बचन सुंदरी । अत्ताल उट्ठी लगि पाइन ॥
इन दष्षित संजोगि । जोग जिन मग्ग प्रहारै ॥
इन पच्छै बलदेव । जम्म गति दिष्षि निहारै ॥

(१) ए. कृ. को.-गुंजारं ।　　　　(२) ए. कृ. को.-करै ।

उद्धरों बीर दंपति दुहुनि। सरस सदहम मधियल्लै॥
चलि सथ्थ राज प्रथिराज कै। मुकति भुगति हम हथ्थल्लै॥
छं०॥ १३०७॥

पुनः सलष का वचन।

सु बर बीर पामार। सलष बुल्ल्यौ प्रति धारं॥
अग्गि जलनि कमधज्ज। जोग जीवन जुग तारं॥
ए अमंत सामंत। भज्जि जानै न अभंग अपु॥
वज्र सार झल्लै प्रहार। निश्चलित सार वपु॥
जं करै गहर संजोगि सुनि। मुगति गहर बित्तिय घरिय॥
'जग्गाय पंग दिष्षै दलं। रषित कुंअर केअरि फिरिय॥
छं०॥ १३०८॥

सारंगदेव का बचन।

सारंग सारंग बीर। बीर चालुक्क उचारिय॥
षग्ग मग्ग बो हिथ्थ। मरन जिहि तत्त बिचारिय॥
बीच राज प्रथिराज। सूर चावहिसि चल्लै॥
ज्यों सिर मग धुअ भाल। भूअ सामंत न डुल्लै॥
संजोगि करिन कायरह तौ। पहुँचावै ढिल्ली घरह॥
प्रथिराज ग्रहै जो पंग बर। तौ पंग सूर एकत धरह॥छं०॥१३०९॥

रामराय रघुवंसी का बचन।

तब रायां रघुवंस। जनक उच्चै उच्चारिय॥
हम निकलंक छत्रीय। जुद्ध बर जुद्ध विचारिय॥
जे मेरें कुल भए। हुए ते षंड तन झुज्झार॥
मत्ति सत्त हनुमंत। बीर जंपिहि बड़ गुज्जर॥
संजोगि बचन कातर कहिग। सहिग प्रान मझ्झह रहिग॥
हम अग्ग पंग कच्छून बर। जम कंपत षग्गह गहिग॥छं०॥१३१०॥

(१) ए. कृ. को.-जग्गवे।

भौंहाराव चंदेल का वचन।

भौंहा राव नरिंद। बीर उच्चरि बीरत्तं॥
पै लच्छिन बतीस। पंग पुच्ची घटि मत्तं॥
तिहि इक लछिन हीन। बही लछिन नन सष्षै॥
एक एक सुरइंद्र। आइ दुज्जन दल भष्षै॥
सत कोस पंच घटि धांन न्रप। हमह सत्त छह अग सुभर॥
इक इक कोस इक इक भर। पहुँचावै संयोगि बर॥ छं०॥१३११॥

चंदपुंडीर का वचन।

तब कहि चंद पुंडीर। मतौ सुनि सस्च सूर बल॥
लष्ष एक लष्षियै। एक भंजैति लष्ष दल॥
बल अगनित अति जुद्ध। पंग जोरन तिन सेनं॥
दावा नल सामंत। सस्त्र मारुत बल देनं॥
ढंढोरि ढाल गजदंत कढि। कवल पीर कन्हहति वर॥
नष्षै सु बाजि गम भीम दुति। पंग सेन प्रथिराज भर॥
छं०॥१३१२॥

निढ्ढुरराय का बचन कि जो करना हो जल्दी करो बातों में समय न बिताओ।

तब निढ्ढुर उच्चरिय। सब्ब सामंत राज प्रति॥
पंग सेंन (१)निरदरहु। ग्रब्ब बोल्यौ सुदेवभ्रित॥
मन मथौ गोंविद चंद। छोड़ न कहि कालं॥
मन पुच्छिहु कहौ जीह। काल घत्ते जिहि जालं॥
जौ करै ढील ढिल्ली धनी। तौ जुग्गिनिपुर जल हथ्थ दै॥
सत षंड जीह जंपत करौ। पै चल्लि राज इह लज्ज दै॥ छं०॥१३१३॥
मानि मत्तौ सब सेन। गरुअ गोयंद कन्ह कहि॥
सुजै अप्प जौ चलै। चलै हम हथ्थ रंभ ग्रहि॥
जो अप्पन आभंज। सबल बंधी अब बंधी॥

(१) ए. कृ. को.-निरदरे।

ढील न करि सुंदरी। लीह अलध्ं कल संधी॥
ढंढोरि ढाल पहुपंग दल। तन अरत्त जिम तोरियै॥
पहुंचाय सांमि ढिल्ली धरा। अम्म अजर तन जोरियै॥छं०॥१३१४॥

संयोगिता के मन में विश्वास हो जाना।

दूहा॥ चाले बल सामंत कलि। देखि सूर सम चित॥
इन जु हीन बल [1]जंपियै। [2]भ्रिकत बुद्धि इन वृत्त॥ छं०॥१३१५॥

संयोगिता का मन में आगा पीछा बिचारना।

चंद्रायना॥ बचन सुनिय कनि बाल बिचारत सोचि मन।
माया गुरजन चित्त बिगोवत बेर तिन॥
* .... ॥ छं०॥१३१६॥
अरिल्ल॥ सुबर चंद औपम लिय कथ्थं। ज्यों कुछ वधु वर इंद्री अपहथ्थं॥
† .... ॥छं०॥१३१७॥

संयोगिता का पश्चाताप करके राजा से कहना कि हा मेरे लिये क्या जघन्य घटना हो रही है।

कबित्त॥ बाल कहिग संजोगि। पुब बंधी सु गंठि बर॥
रिष सराप अरु देव। काज भौ भरन मरन भर॥
स्वरग मग्ग रुक्कयौ। मरन संभरि चहुआनं॥
केवल कित्ति सु कंत। रंभ बर बरनन पानं॥
बंधई गंठि संभरि धनी। अब इत्तिव अंतर रहिय॥
सामंत सूर संभरि सु कथ। न्रिपति सु दंपति इम कहिय॥
छं०॥१३१८॥

राजा का कहना कि इस का विचार न करो यह तो संसार में हुआ ही करता है।

चंद्रायना॥ राज सेन दे नैन समभिझय चंद कबि।

(१) ए. कृ. को.-चंपिये। (२) मो.-भ्रिग्ग बुद्दि दय वृत्त।
* यह छंद चारों प्रतियों में आधा है। † चारों प्रतियों में ऐसा ही है।

सुनि संजोग इह जोग बुझिझ मन दुष्प छवि ॥
आंसू भरि इह [1]सात [2]अगनि भेज पवर पंग।
रहै गल्ह जुगजाइ सब्ब संमूह नर ॥ छं० ॥ १३१९ ॥

संयोगिता का कहना कि होनी तो हुई सो हुई परंतु चहुआन को चित्त से नहीं भुला सकती।

कवित्त ॥ सुंदरि सोचि सु चित। प्रथम व्रत लियौ राज वर ॥
बरजि मंत पित बंध। बरजि गुर जन छोनी धर ॥
तात जग्य बिग्गरि। भ्रम्म लोपे सु लीह कुल ॥
सहस मुष्य अपहास। हीन भय दीन पलति पल ॥
कर तारह जे लिषिय कर। स्वांमि द्रोह बर बिछुरन ॥
मै लीन भाव मावी विगति। नन मुक्कौं चहुआन मन॥छं०॥१३२०॥

पृथ्वीराज का संयोगिता का हाथ पकड़ कर घोड़े पर सवार कराना।

दूहा ॥ परनि राव ढिल्ली मुषहि। ग्रहि लीनी कर वांम ॥
सम संजोगि न्रप सोभियत। मनहु बने रति कांम ॥छं०॥१३२१॥
चंद्रायना ॥ सुंदरि सोचि समुझ्झत गद्द गद्द कंठ भरि।
तबहि पानि प्रथिराज सुषंचिय बाह करि ॥
दिय हय पुट्ठहि भोर सु सब्ब सु लच्छनिय।
करत तुरंग सुरंग सु [3]पुच्छनि वच्छनिय ॥ छं० ॥ १३२२ ॥

अश्वारोही दंपति की छवि का वर्णन।

कवित्त ॥ हय संजोगि आरुहिय। पुट्ठि लग्गौ सु वांम नृप ॥
पति राका पूरन प्रमांन। अरक बैठे सुक्कर विप ॥
काम रित्त रहि चढी। काम रति दंपति राजं ॥
कै विद्रुम हिम संग। वियन ओपम [4]छपि साजं ॥

(१) ए. कृ. को.-बार। (२) मो.-अगनि भेजे जु पंगवर।
(३) ए. कृ. को.-पुछनिय। (४) ए. कृ. को. छिति।

सामंत सूर पारस नृपति । मधि सु राज राजंत बर ॥
ग्रह सत्त भान ससि बिंटिकै । छियत तेज प्रथमी सु पुर ॥छं०॥१३२३॥

संयोगिता सहित पृथ्वीराज का व्यूह बद्ध होकर चलना ।

पंग पुत्ति आरुहिय । सूर चावद्दिसि रष्षे ॥
दिसि ईसान सु कन्ह । पंग षंधार बिलष्षे ॥
केहरि बर कंठेरि । पंग पहुरै सो मुक्यौ ॥
पुब्ब सेन निड्डुर नरिंद । धाराहर रुक्यौ ॥
अगि नेव बीर पहु पंग कौ । धार कोट ओटह सुभर ॥
पांवार धार धारह धनी । सुजस लष्ष लष्षन सुबर ॥छं०॥१३२४॥
दिसि दच्छिन लषन कुआर । सार पाहार पंग छल ॥
भौंहा राव नरिंद । सांमि रष्षे रुकि कंदल ॥
नयन रत्त दल सिघ । रिघ रष्षन कमधज्जी ॥
बर लच्छन बघघेल । मार सारह भुअ छज्जी ॥
दिसि मरुत बीर बर सिघ दै । लष्ष सेन आरुहिय रन ॥
बर बंध बरुन साईं सु पथ । जम बिसाल कंपन डरन ॥छं०॥१३२५॥
दिसि उत्तर गषर गुरेस । रनह रुद्र रावत बर ॥
उभै स्वामि षल और । छंडि मदमुष्प मेघ बर ॥
दिसि पच्छिम बलिभद्र । [1]जांम जद्दव अवरोही ॥
दई दुवाह दो बीर । रंभ रंभन मन मोही ॥
सुरपत्ति समासै नग डुलै । दुन्नं दिसा जै उच्चरिय ॥
सामंत सूर रष्षे नृपति । पंग राय पारस फिरिय ॥छं०॥१३२६॥
कोट पंग आरुहिय । नीम कित्तिय ग्रह मंडिय ॥
थंभ सूर सामंत । अटल जुग ससि सिष छंडिय ॥
बर चिनेत अरु प्रेत । ताल तुंमर नारद पढ़ि ॥
देव रूप प्रथिराज । लच्छि संजोगि वाम गढ़ि ॥
कामना मुकति अप्पै तही । जो बीर रूप संचै धयौ ॥
सेवै जु सूर औ सूर मिलि । पार बरी तारन भयौ॥छं०॥१३२७॥

(१) मो.-भान ।

पंग दल में घिरे हुए पृथ्वीराज की कमल-संपुट भौंरे की सी गति होना।

आर्या ॥ एकथ्थोय संजोई। एकथ्थी होइ समर नियोसौ ॥
अनि लेय यथा पदमं। अंदोलर राज रिदएवं ॥ छं०॥ १३२८ ॥

दूहा ॥ मन अंदोलित चंद मुष। दिषि सामंत सरुष्य ॥
अंदोलित प्रथिराज हुअ। सिर कढ्ढिय सुष दुष्य ॥ छं० ॥ १३२९ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में यौवन और कुल लज्जा का झगड़ा होना।

वय सु लग्गि एकत करइ। कककर लग्गिय लाज ॥
वय जुग्गिनि पुर चलि कहै। लाज कहै भिरि राज ॥छं०॥ १३३० ॥

चौपाई ॥ वै सुष सब्ब संजोगि बतावै। राज मरन दिसि पंथ चलावै ॥
दोई चित्त चढी बर राजं। वै विलास मरनं कहि [1]लाजं ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

वय भाव।

दूहा ॥ मिष्टानं बर पान भय। नव भामिनि रस कोक ॥
अमर राइ [2]इच्छति सबै। लाज सुष्य पर लोक ॥ छं० ॥ १३३२ ॥

लज्जा भाव।

चौपाई॥मो तजि मति चोहान सुजाई। ज्यौं जलबिंदु सब किम्ति समाई ॥
तौ तिय पन वय तज्जि दिषाई। तिन जिय आइ ये लज्जन आई॥
छं० ॥ १३३३ ॥

वय विलासिता भाव।

दूहा ॥ सुनत वचन लज्जिय वयह। उत्तर दीय न लज्ज ॥
वै विलास उत्तर दियौ। अज्जु लज्ज हम कज्ज ॥ छं० ॥ १३३४ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में लज्जा का स्थान पाना।

वै मुष कौपि प्रमान से। मुक्किय जुगति जुगत्ति ॥

(१) ए. कृ. को.- काजं। (२) ए. कृ. को. इच्छैति कै।

ए 'हलका दंतीन के । धार उज्जल कंति ॥ छं० ॥ १३३५ ॥
बैतन कुरषि निरष्षयौ । लाज सु आदर दीन ॥
कलि नारद नीरद कवि । प्रगट करहु हम कौन ॥ छं० ॥ १३३६ ॥

कवि का कहना कि पंग दल अति विषम है।

कहत भट्ट दल विषम है। तुहि दल तुच्छ नरिंद ॥
परनि पुत्ति जैचंद की । करहि आइ ग्रह नंद ॥ छं० ॥ १३३७ ॥

पृथ्वीराज का वचन कि कुछ परवाह नहीं मैं सब को बिदा करूंगा।

भृकुटिल राज उत्तर दियौ । सो सब सत्त सुभट्ट ॥
हूं चहुआन जु संभरी । भुज ठिल्लौ गज थट्ट ॥ छं० ॥ १३३८ ॥

कविचंद का पंग दल में जाकर कहना कि यह पृथ्वीराज नव दुलहिन के सहित हैं।

चल्यौ भट्ट संमुह तहां । जहं दल पंग अरेस ॥
जो इंछै नृप तुझ्झ मन । ठढ्ढौ षेत नरेस ॥ छं० ॥ १३३९ ॥
परनि राइ ढिल्लिय सु मुष । रुष किन्नौ मन आस ॥
कही चंद न्रप पंग दल । जुद्ध जुरै जम दास ॥ छं० ॥ १३४० ॥
चढिग सूर सामंत सह । न्रिप ग्रम्मह कुल लाज ॥
सुहर समुह दिष्षहि नयन । त्रिय जु वरिग प्रथिराज ॥छं०॥१३४१॥
गयौ चंद न्रप बयन सुनि । जहं दल पंग नरिंद ॥
अरि आतुर अरिग्रहन कौ । मनौं राहु अरु चंद ॥ छं० ॥१३४२॥

अंतरिक्ष शब्द (नेपत्थ में) प्रश्न।

श्लोक ॥ कस्य भूपस्य सेनायां । कस्य वाजित्र वाजनं ॥
कस्य राज रिपू अरितं । कस्य संन्नाह पष्परं ॥ छं० १३४३ ॥

उत्तर।

दूहा ॥ ढिल्लि आयौ चहुआन न्रप । भट्ट सथ्थ प्रथिराज ॥
तिहि पर गय हय पष्षरहि । तिहि पर बज्जत बाज ॥छं०॥१३४४॥
गाथा ॥ सा याहि ढिल्लि नाथो । सा यं तु जग्य विध्वंसनौ ॥
परनेवा पंगपुत्री । जुद्ध मांगंत भूषनं ॥ छं० ॥ १३४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-ए हेका देतीर के ।

चहुआन पर पंग सेना का चारों ओर से आक्रमण करना ।

दूहा ॥ सुनि श्रवननि चहुआन को । भयो निसानन घाव ॥
जनु भद्दव रवि अस्त मनि । चंपिय बद्दल बाव ॥ छं० ॥ १३४६ ॥

प्रकोपित पंगदल का विषम आतंक और सामंतों की सजनई ।

भुजंगी ॥ भरं साजतें धोम धुम्मं सुमंतं । तहां कंपियं केवि तिय पुर कंपंतं ॥
तहां डमरु कर डहकियं गवरि कंतं । तिनं जानियं ओज जोगादि अंतं ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

तवं कमक मिरु सेस सिर भार सहियं । तहां किम सु उस्वास रवि रथ्थ सहियं ॥
तहां कमठ सुत कमल नहिं अंबु लहियं । तबैं संकि ब्रह्मान ब्रह्मंड गहियं ॥
छं० ॥ १३४८ ॥

[1]उनं राम रावन्न कवि किन्न कहता । उनं सकति सुर महिष बल धन्न लहिता ॥
मनों कंस ससिपाल जुर जमन प्रभुता । तिनं भक्खियं एम भय लक्खि सुरता ॥
छं० ॥ १३४९ ॥

भरं चढ्ढियं सूर आजान बाहं । तिनं तुट्टि बन सिंघ दीसंत लाहं ॥
तिनं गंग जल मीन धर छलिय ओजैं । भरं पंगुरे राव राठौर भोजैं ॥
छं० ॥ १३५० ॥

तबै उप्परें फौज प्रथिराज राजं । मनों कंद्रा लेन ते लंक गाजं ॥
तवं जग्गियं देव देवं उनिंदं । तिनं चंपियं पाय भारं फुनिंदं ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

तबै चापियं भार पायाल दुंदं । घरां उड्डियं रेन आया समुंदं ॥
गिनै कौन अगनित्त रावत्त रत्ता । तिनं छच छिति भार दीसै नपत्ता ॥
छं० ॥ १३५२ ॥

जु आरंभ चक्को रहै कौन संता । सु बाराह रूपी न कंधै धरंता ॥
जु सेनं सनाहं नवं रूप रंगा । [2]तिनं झिल्ल बैलेन सेचैव गंगा ॥
छं० ॥ १३५३ ॥

तिनं टोप टंकार दीसै उतंगा । मनों बद्दलं पंति बंधी विहंगा ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उचं । (२) ए. कृ. को-तिनं झिल्ल चैचे मते वैच गगा ।

जिरह जंगीन बनि अंग लाई । मनो कट्ठ कंती सुगोरष बनाई ॥
छं० ॥ १३५४ ॥

तिनं हथ्थरै हथ्थ लग्गै सुहाई । तिनं घाइ गंजै न थक्कै थकाई ॥
तिनं राग जरजीव बनि बान अच्छै । भरं दिष्षियै जानु जोगिंद कच्छै ॥
छं० ॥ १३५५ ॥

मनं सस्त्र छत्तीस करि लोह साजै । इसे सूर सामंत सौ राज राजै ॥
छं० ॥ १३५६ ॥

लज्जा भाव कि लज्जा के रहने से संसार में कीर्ति अमर होगी ।

कुंडलिया ॥ बाद बत्तवै कढ्ढि न्रिप । बहु उपाइ तो लाज ॥
में वपु लज्जै सौंपि कर । कै चल्लै प्रथिराज ॥
कै चल्लै प्रथिराज । कित्ति भग्गौं भगि जित्तौ ॥
मरन एक जम हथ्थ । दुरै भज्जिन जम वित्तौ ॥
ते अप्पन तिय राज । लाज इक राग सदेवति ।
गति के प्रान तिन काज । राज इमकहि सु वह ब्रत ॥छं०॥१३५७॥
मुरिल्ल ॥ जब लाज सबै वे कर रस बहै । तब लगि पंग बीर रस सहै ॥
दिसि दिसि दल धाए कविचंद । ज्यौं गाज्यौ बर ससि पाल [1]गुविंद॥
छं० ॥ १३५८ ॥

पृथ्वीराज के मन का लज्जा का अनुयायी होना ।

दूहा ॥ दुह [2] एनौ तन चढ्ढियै । लज्ज प्रसंसत राइ ॥
सत्त सुसत्त प्रनंब चढ़ि । चढ़िय सु उत्तर राई ॥ छं० ॥ १३५९ ॥

पृथ्वीराज का वचन ।

तूं लज्जी तन चढ्ढयौ । लज्ज प्रान संग [3]गथ्थ ॥
अब कित्ती वत्तीय लगि । [4]अब सन चूक न तथ्थ ॥छं०॥१३६०॥

---

(१) ए. कृ. का.-गुव्यंद । (२) ए. कृ. को. एतौ । (३) मो. सथ्थ ।
(४) ए. कृ. को. अबसन सूक न नथ्थं ।

पंग सेना के रण वाद्यों का भीषण रव ।

मुरिल्ल ॥ बाजि न्त्रपत्र विचित्र सु बाजिग । मेघ कला दल बद्दल साजिग॥
बंबरि चौर दिसान दिसानं । दस दिसि 'रत्त घोर निसानं ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

भुजंगी ॥ निसानं दिसानंति बाजे सुचंगा । दिसा दच्छिनं देस लीनौ उपंगा॥
तबल्लं तिदूरं मुजंगी म्रदंगा । मनों न्त्रत्य नारद्द कद्दै प्रसंगा ॥
छं० ॥ १३६२ ॥

बजै बंस विसतार बहु रंग रंगा । तिनं मोहियं सध्थ लग्गे कुरंगा॥
बरं बीर गुंडीर संसे ससंगा । तिनं नच्चई ईस ते सीस गंगा ॥
छं० ॥ १३६३ ॥

सुनै अच्छरी अच्छ मंजै सु अंगा। सिरं सिंधु सद्दनाद्द श्रवनै उतंगा॥
रसे सूर सामंत सुनि जंग रंगा । .... ⋮ ॥ छं० ॥ १३६४ ॥
नफेरो नवं रंग सारंग भेरी । मनों न्त्रत्यनी इंद्र आरंभ केरी ॥
सुने सिंगि सावद्द नंगी न नेरी । मनों झिंझ आवद्ध हथ्थैं करेरी ॥
छं० ॥ १३६५ ॥

करी उच्छरी घाव घन घंट टेरी । चितं चिंति तन हीन बाढी कुबेरी॥
अन्यं ओपमा षंड नैने निभग्गी । मनो राम रावन्न हथ्थें विलग्गी॥
छं० ॥ १३६६ ॥

पंगराज की ओर से एक हजार संख धुनियों का शब्द करना ।

दूहा ॥ सुनि बज्जन रज्जन चढ़िग । सहस संष धुनि चाइ ॥
मनों लंक विग्रह करन । चढ्यौ रघुप्पति राइ ॥ छं० ॥ १३६७ ॥
राम दलह बंदर विषम । रष्षस रावन वृंद ॥
असी लष्य सौं सौ जुरिग । धनि प्रथिराज नरिंद ॥छं०॥१३६८॥

सेना के अग्रभाग में हाथियों की वीड़ बढ़ना ।

दल संमुह दंतिय सघन । गनत न बनि अगनित्त ॥

(१) ए. कृ को.-अोरत ।

मनों[1] पब्बय विधि चरन किव। लह दिग्विय मय मत्त ॥छं०॥१३६९॥

मतवारे हाथियों की ओजमय शोभा वर्णन।

मद मंता दँत उज्जला। मय कपोल मकरंद ॥
दुहुं दिसि भवर गुंजार करि। [2]छुटि अंदून गयंद ॥ छं० ॥ १३७० ॥

भुजंगी ॥ देषियहि मंत मैमत्त मंता। छष छहरंग चौरं ढुरंता ॥
छके जेह अंदून छुट्टै जुरंता। बाय बहु वेग झटकंत दंता ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

जिते सिंघली सिंघ सुंडी प्रहारे। तिते सार संमूह धावै हकारे ॥
उज्जर बान आवै [3]वकारे। अंकुसं कोस तेनं चिकारे ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मीठ मंगोल चिहु कोद बंके। इसे भूप बाजून बाजून हंके ॥
दंति मनु मुत्ति जरये सुलष्षी। मनों बीज झमकंत जलमेघ पष्षी ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

घटं घेन घोरं न सोरं समानं। हलं हाल ए मंत लागे विमानं ॥
बिरद बरदाइ आगे वृदंगा। स्वर्ग संगीत [4]करि रंभ संगा ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

तेह तर ओर पट्टब झिल्लैं। चंपियं पान ते मेर ढिल्लैं ॥
रेसमी रेसना रीति भल्ली। सिरी सीस सिंदूर सोभा सु मिल्ली ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

रेष वैरष्ष पति पात वल्ली। मनहु बन राइ द्रुम डाल हल्ली ॥
सीस सिंदूर गज जंप झंपे। देषि सुरलोक सहदेव कंपे ॥
छं० १३७६ ॥

इत्तनिय आस धरि मध्य रहियं। कहहि प्रथिराज गहियं सु गहियं॥
.... । .... छं० ॥ १३७७ ॥

दूहा ॥ गहि गहि कहि सेना सकल। हय गय बन उठि गब्ब ॥
जनु पावस पुब्बहु अनिल। इलि गति बहल सब्ब ॥छं०॥१३७८ ॥

---

(१) मो.-पव्वन। (२) ए. कृ. को.-छुट्टिय अंद्दन।
(३) ए. कृ. को.-हकारे। (४) ए. कृ. को. डरि।

सुसज्जित सेना समूह की रात्रि से उपमा वर्णन ॥

लघुनराज ॥ हयं गयं नरं भरं । [1]उनम्मियं अलङ्करं ॥
दिसा दिसानं बज्जये । समुद्द सद्द लज्जए ॥ छं० ॥ १३७९ ॥
रजोद मोद उब्भली । सव्योम पंक संकुली ॥
तटाक बाल रींगनीं । सु चक्कयो वियोगिनी ॥ छं० ॥ १३८० ॥
पयाल पाल पल्लए । द्रगंत मंत हल्लए ॥
प्रवृत्ति छवि छज्जए । सरोज मौज लज्जए ॥ छं० ॥ १३८१ ॥
अनंदिते निसाचरे । कु कंपि तुंड साचरे ॥
भगंत [2]गंग कूल ए । समुद्र ह्वन फूल ए ॥ छं० ॥ १३८२ ॥
अघंड रेन मंडयौ । डरप्पि इंद्र छंडयौ ॥
कमट्ठ पिट्ठ निट्ठुरं । प्रसाल भाल विघ्थुरं ॥ छं० ॥ १३८३ ॥
छिपान हंस मग्ग ए । समाधि आधि जग्ग ए ॥
अपूर पूर बड्डए । जटाल काल लुड्ड ए ॥ छं० ॥ १३८४ ॥
नरिंद पंग पायसं । सु छवि मंगि आयसं ॥
गहन्न जोगिनी तुरे । सु अप्प अप्प विप्फुरे ॥ छं० ॥ १३८५ ॥

पंग सेना का अनी वद्द होना और जैचन्द का मीर जमाम को पृथ्वीराज को पकड़ने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ अप्प अप्प दल विप्फुरे । दिल्ली गहन नरिंद ॥
* मीर जमांम हमांम कौ । दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १३८६ ॥
दिसि दिसि अग्गै सज्जि वर । चतुरंगिनि पंग राइ ॥
चक्की चक्क वियोगइन । अनंद कमोद कंदाइ ॥ छं० ॥ १३८७ ॥

जंगी हाथियों की तैयारी वर्णन ।

भुजंगी॥चढी पंग फौजं चवं कोद लोकं । दिठी जानि कालं चली जोध होकं ॥
बंधे बैरषं रत्न[3]हल्लै प्रकारं । मनों [4]नौकरी नौत सोभै सहारं ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

(१) ए. कृ. को.-उनविवयं । (२) ए. कृ. को.-नंग । * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।
(३) मो.-सोभै । (४) ए. कृ.को.-निक्करी ।

बजे तब्बलं मद्द बंदी निनारे। मनों भृत्त बीरंद हथ्थं संवारे॥
सिरी पष्षरं लोह गज्जं बनाई। नगं रत्त मझ्झै झमकंत झांई॥
छं०॥ १३८९॥

सुती बैठियं लाल माला प्रकारं। मनों बेलही 'पारसं कन्ह भारं॥
गजं सज्जयं हेम ओपं विराजे। तिनं अग्र सोहै सितं चौर साजे॥
छं०॥ १३९०॥

तिनं की उपम्मा कबी का विचारं। मनों हेम कूटं बहै गंग धारं॥
सिरी उज्जलं लोह है सीस राजं। तहां चौरं ठट्टं सु सीसं बिराजं॥
छं०॥ १३९१॥

तहां चंद कब्बी उपम्मा विचारी। मनों राह कूटं टटं भान मारी॥
सजी पंग सेनं रसं 'लोह बीरं। तिनं मोकले गइन प्रथिराज मीरं॥
छं०॥ १३९२॥

रावण कोतवाल का सब सेना में पंगराज का हुक्म सुनाकर कहना कि पृथ्वीराज संयोगिता को हर लाया है।

दूहा॥ सजत सेन पहुपंग घन। आय स पत्ते तीर॥
बर रावन कुटवार तब। पुक्कारे बर बीर॥ छं०॥ १३९३॥

पद्धरी॥ धर पथ्थराइ बरनौ सुबीर। विश्राम राइ मन मथ सरीर॥
रइबान सिंघ न्रप भेद दीन। चहुआन हरन संजोगि कीन॥
छं०॥ १३९४॥

दरबार जैत मिल्लाइ आइ। संजोगि हरन न्रप सध्य जाइ॥
घरि एक एक घरियार बज्जि। पुकार लग्गि मारूफ सज्जि॥
छं०॥ १३९५॥

जैचन्द का रावण और सुमंत से सलाह पूछना।

दूहा॥ परी भीर बर द्रिग्ग बर। द्रिष्ट संजोइय कंत॥
तब तराल रावन कहै। पंग राइ सोमंत॥ छं०॥ १३९६॥

---

(१) ए. कृ.-को.-पीर सं। (२) ए. कृ. को.-रोस।

सुमंत का कहना कि बनसिंह और केहर कंठीर को आज्ञा दी जाय ।

कवित्त ॥ मोहि मत्त बुझै नरिंद । तौ चहुआन गहन गुन ॥
दल बल अरि अरि दहि । ठट्ट ठेलै दुज्जन दुव ॥
प्रथम राव बन सिंघ । राव बन बीर अग्गि करि ॥
[1]हेत सुमन्त अग्गौन । उबै पहुपंग पूरि परि ॥
केहरि कंठीर मढौ सु न्रप । इन समान छिचौ न छिति ॥
अड्डौ सु भरो झिभ्भार घन । रावन रित सिष ईय पति ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज मय सामंतों के जीता पकड़ा जाव ।

तब नरिंद रा पंग । सु मुष बोल्यौ रावन प्रति ॥
आज गिद्ध ननि जौग । इनै घन स्याम भूप प्रति ॥
अति अयान अनबुझ्झ । अग्गि आगम्म प्रगट्टिय ॥
अप्प अप्प जस हीन । दीन दुनिया दल छुट्टिय ॥
अवरज्ज सेन लष्षा चढी । कढौ तेग बंधे दिवन ॥
बहु लाभ होइ जो षेम बिन । जु कछु काम कीजै सु चन ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

बघेलो बर सिंघ । राव केहरि कंठेरिय ॥
कालिंजर कोलिया । राय बंधिय बरजोरिय ॥
[2]रन रावन तलियार । बग्घ कह्री मुष जंपौ ॥
रवि जैपाल नरिंद । काम कारन हूं अप्पौ ॥
बर गहन चंपि चहुआन कौ । [3]सत्त घत्त सामंत मह ॥
सम समथ सथ्थ भारथ भिरहि । सहस दिये कमधज्ज दह ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. हेत सुमत जग्गौन ।   (२) ए. कृ. को.-नर ।
(३) मो.-मन्त ।

रावण का कहना कि यह असंभव है। इस समय मोह करने से आपकी बात नहीं रह सकती।

तब रावन उच्चरै। न्रिपति इह मत्ति सु भुट्टी॥
दोन होइ रापंग। सरित डंडी गुर मिट्टी॥
इह जोगिनि पुर इंद। गंजि गोरी गज बंधन॥
इन सु सथ्थ सामंत। सूर अति रन मद मद्दन॥
इह मद्दन दहन इच्छै न्टपति। भर समूह मोहन करै॥
नव अश्व बाज नव नव न्रपति। नव सु जोरि जग्गह धरै॥
छं०॥ १४००॥

रावण के कथनानुसार जैचन्द का मीर जमाम को भी पसर करने का हुक्म देना।

दूहा॥ सहस मान सह छत्रपति। सह सम जुड्ड स जुड्ड॥
गहन मीर बंदन कहै। तिहि लग्गै लहु बड्ड॥ छं०॥ १४०१॥
मीर बंद बाहन बलिय। सक सामंत नरिंद॥
मंच घात सक सूरिमा। विष मुत्तरै फुनिंद॥ छं०॥ १४०२॥
अप्प अप्प दल विप्फुर्यो। दिल्ली गहन नरिंद॥
मीर जमाम हमाम कों। दिय आयस जैचंद॥ छं०॥ १४०३॥
तुम बिन जग्य न न्रिब्बहै। तुम बिन राज न धाम॥
सुक्क कट्ठ कट्ठन समुह। जरि जरि अंब बुझान॥ छं०॥ १४०४॥

रावण का कहना कि आप स्वयं चढ़ाई कीजिए तब ठीक हो।

फिरि रावन न्रप सौं कह्यौ। तात पर्यौ तुहि काम॥
जब लगि अप्प न नांचियै। काम न होइ सु ताम॥ छं०॥१४०५॥

पंगराज का कहना कि चोरों को पकड़ने में क्यो जाऊं।

कवित्त॥ तब भुकि पंग नरिंद। ढीठ कुटवार हट्ट पर॥
बाट घाट तस कारन। चास बसि कारन प्रज्ज धर॥
रस अदभुत संग्राम। मझि रष्षत धरि छंडी॥

न कछु मभझ्ञ माजनौ। बाद राजन सों मंडौ॥
अति ग्रब्ब अरब बज्जे सिरह। नरनि नीर उत्तरि रह्यौ॥
जानहि न जुद्ध अविरुद्ध गति। किम सु बचन राजन कह्यौ॥
छं०॥ १४०६॥

दूहा॥ अरे ढीठ रावन्न सुनि। जितहि न डट्टो अप्प॥
जो अलभ्भ लोकनि कह्यौ। जिहि मरि मारिय अप्प॥
छं०॥ १४०७॥

पुनः रावण का प्रत्युत्तर की आपने अपने हठ से सब काम किए।

कवित्त॥ फिरि रावन उच्चर्‍यौ। जग्य मंडि रुकुमनि किय॥
जैन जग्य आरंभ। प्रथम चहुआन बंध लिय॥
बहुत मत्त चुक्कए। अबहि तुम मंत सुमंत्ते॥
संदेसै व्यौहार। कहौ किन होतै भंत्ते॥
बंचहु बवंच मंचिय मरन। चाहुआन गहियन गहिय॥
संबरे आय कन्या (१)रवन। जुगति जग्य पसरिय रहिय॥छं०॥१४०८

कुतवाल का बचन कि जिसका पालन करना हो उसे प्राण समान माने परंतु संग्राम में सबको कष्ट जाने।

स्लोक॥ अप्प प्रानं समानस्य। लालना पालनादपि॥
प्रापते तु युद्धकालस्य। शुष्ककाष्ठं हुताशनं॥ १४०९॥

दूहा॥ कै प्रारंभन प्रिय भरन। मरन सु अग्गर राइ॥
जग्य विगारन जुद्ध चढ़ि। लियें सु कन्या जाइ॥ छं०॥१४१०॥
मुष म्रजाद बुल्ल्यौ बयन। नयर कंध कुटवार॥
सु विधि मौर संग्राम भर। तुम रष्षहु हटवार॥ छं०॥१४११॥
हट्ट नाम कुटवार सुनि। परि सामंतन जंग॥
सबन निरष्षत पंग दल। पर पति दीप पतंग॥ छं०॥१४१२॥

(१) ए कृ को. बरन

मुसल्मानी सेना नायक का सेना सहित हरावल में होकर आगे बढ़ना।

भुजंगी ॥ तबें पठ्ठियं पंग रायं सु हीसं। मषै दोइ द्रुम्मीन हीनै न दीसं॥
किय नीच कंधं तुछं रोम सीसं। परी उप्परैं फौज प्रथिराज ईसं॥
छं०॥१४१३॥

रसावला ॥ [1]कोल पल्लं लषी। मंस स्त्रवं भषी॥
रोम राइं नषी। बेयजे बिद्रुषी॥ छं० ॥ १४१४ ॥
बीर बाहू पषी। सुम्मरे नां लषी॥
बिज्जि सा बद्दषी। टंक अट्टुरषी॥ छं० ॥ १४१५ ॥
षंचि बिब्भारषी। लोह नारंजषी॥
कोल षाहै [2]चषी। बाज बाहै लषी॥ छं० ॥ १४१६ ॥
दुम्म साहै मुषी। बोल तें ना लषी॥
पारसी पारषी। बान बाहं पषी॥ छं० ॥ १४१७ ॥
प्रान तिन्नं तषी। पंग पारठ्ठषी॥
स्वांमिता चित्तषी। ढिल्लि ढाइंभषी॥ छं० ॥ १४१८ ॥
बीच रत्तं सुषी। सट्टि हज्जारषी॥
पवंगे पारषी। .... छं० ॥१४१९॥

पंगदल को आते देख कर पृथ्वीराज का फिर कर खड़ा होना।

भुजंगी। हयं सेन पय सेन अग्गै सुंडारै। त्रिपत्ती नछषी न लभ्भै नपारै॥
तिनं सूर सामंत मध्यं हजारे। मनों विटियं कोट मंझे मुनारे॥
छं० ॥ १४२० ॥
तबै मोरियं राज प्रथिराज बग्गं। बरं उट्ठियं रोस आयास लग्गं॥
मनों पथ्य पारथ्य हरि होम जग्गं। मनों षोलियं षग्ग षंडून लग्गं॥
छं० ॥ १४२१ ॥
बरं उठ्ठियं सूर सामंत तज्जै। तबें षोलिबं षग्ग साहथ्य रज्जै॥
सुरं बाजनै पंग रा बीर बज्जै। मनों आगमं मेघ आषाढ़ गज्जै॥
छं० ॥ १४२२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-"कोल पल अभर्ष्या." (२) ए.-षषी।

पृथ्वीराज की ओर से बाघ राज बघेले का तलवार खींच कर साम्हने होना।

कवित्त ॥ बग्घराव बग्घेल । हेल मुग्गल निद्दल्ल किय ॥
मेघ सिंघ विछ्छुलिय । आनि झंमूर झलक्किय ॥
बे गयंद बारुन बहंत । बारत्तन वारिय ॥
मीर पुट्ठि आरुट्ठि । सेन गहि गहि अप्फारिय ॥
आवृत्त बत्त सामंत रन । अमर मेछ संमुह मिलिय ॥
अष्टमी चष्य दुक्कह सु ग्रह । प्रथम रोस दुअ दल मिलिय॥छं०१४२३॥

सौ सामंत और असंख्य पंग दल में संग्राम शुरू होना।

दूहा ॥ जोध जोध आयरु मिले । एक इक्क सौं लष्य ॥
नारद तुंबर सिव सकति । सौ सामंतां पष्य ॥ छं० ॥ १४२४ ॥

पुनः रावण का वचन कि पृथ्वीराज को पकड़ने में सब सेना का नाश होगा।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चरिय । सुनौ कमधज्ज [1]इला बर ॥
अरि बंधन इंछियै । सु तन बंछियै मरन भर ॥
प्रथम मूल दिज्जियै । व्याज आवै धुर अब्बौ ॥
इन कज्जैं इल भार । देव [2]करयौ छिति लिब्बौ ॥
छिति ग्रीषम बुठ पावसह । बैंन पहु जु पंगह सुनिय ॥
[3]कायर सु भीर भंजै न भर । भर भंजै संभरि धनिय॥छं०॥१४२५॥

केहर कंठेर का कहना कि रावण का कथन यथार्थ है।

केहरि बर कंठेर । पंग सम्हौ उच्चारिय ॥
मत्त सु मत उच्चरिय । बीर रावन अधिकारिय ॥
जंघ जोर जो बजै । सार तंची मिलि जंची ॥
जंघि जोर जो [4]चलै । सार बंधी अनु तंची ॥

---

(१) मो.-इलावर । (२) मो.-करयौ
(३) ए. कृ. को.-कायरन भीर भंजै सुभर । (४) मो. बजै ।

भंजौ जु बीर चहुआन दल। दइ दुबाह सम्है भिरै॥
भारथ्थ बीर मंडन सहै। अरी जीत कायर मुरै॥ छं०॥ १४२६॥

पंग का उत्तर देना कि सेवक का धर्म स्वामी की आज्ञापालन करना है।

सुनि केहरि बर बेंन। कोंन उच्चरै जुद्ध यथ॥
धर संग्रह गो ग्रहन। सामि संकट जु बीर तथ॥
साम दान अरु भेद। सोइ चुक्कै बर साईं॥
नरक निवास प्रमान। सुश्रित किती निधि पाई॥
जंकरै मंत्त उत्तरि परै। सामि अग्गि मंगै सुभर॥
यौं हंसन केलि घर घर करै। इकत पच्छ बहु सुभर॥
छं०॥ १४२७॥

पंग को प्रणाम करके केहर कंठेर और रावण का बढ़ना।

दूहा॥ केहरि कन्ह सु गत्तमी। करि जुहार न्नप भार॥
हस्ति काल जम जाल लै। चलि अग्गें कुटवार॥ छं०॥ १४२८॥

उनके पीछे जैचन्द का चलना।

कवित्त॥ केहरि बर कंठीर। कन्ह कमधज्ज सु रावन॥
हस्ति काल जम जाल। [1]अग्गि नग चासति धावन॥
ता पच्छै कमधज्ज। सेन चतुरंगी चल्लिय॥
हसम हयग्गय सुभर। भूमि चावद्दिसि हल्लिय॥
कंद्रप्प केत पहुपंग सँग। बजि निसान अप्पन चढ़िय॥
घन अँगम्यौ सेन चहुआन बर। पवन सेन टिड्डी बढ़िय॥
छं०॥ १४२९॥

जैचन्द के सहायक राजा रावतों के नाम।

भुजंगी॥ तिकें चढ्ढियं पंग अज्ञान बाहं। बचं उच्चरें सेनं चौहान साहं॥
सुतं चढ्ढियं [2]सेर कंद्रप्प केतं। मनों बंधियं काम बे बीर नेतं॥
छं०॥ १४३०॥

(१) ए. कृ. को.-अगिन, अगिनिग। (२) ए. कृ. को. बीर।

चढै प्रव्रतं बीर बीरं प्रमानं। कहै पंग अप्पं बंधे चाहुआनं॥
चढे चंचलं चंपि चंदेर राई। जिनैं पुव्र बैरं रनंथंभ पाई॥
छं० ॥ १४३१ ॥

चढ़े किल्हनं कन्ह क्रन्नाट राजी। उठौ बंक मुंछं ससी बीय लाजी॥
चढ्यौ दच्छ भानं सुभानं प्रमानं। चढे कन्ह चंदेल भौधू समानं॥
छं० ॥ १४३२ ॥

चढ्यौ बग्गरी बीर तत्तौ [1]तुरीसं। लरैं सामि कामं असम्मानं सीसं॥
चढ्यौ इंद्र राजं असप्पति बीरं। महा तेज जाजुल्य बीरं सरीरं॥
छं० ॥ १४३३ ॥

चढ्यौ मालवौ बीर वर सिंह नद्दं। भजै तेज जाजुल्य देष्यौ [2]फुनिंदं॥
चढ्यौ पंच पंचाइनं बीर मोरी। चढै बारु रंजैत पावंग जोरी॥
चढ्यौ दाहिमौ देव देवत्त गत्तौ। चढ़े मीर बीरं षुरासान तत्तौ॥
छं० ॥ १४३४ ॥

असी लष्य सेना चिह्नं मग्ग धाई। मनौं भूमि बाराह कंधै उठाई॥
कमठ्ठंति पिट्ठंति ठौसौ समालं। कंपी सेन मुक्कै कुवे हथ्य [3]झालं॥
छं० ॥ १४३५ ॥

पंग की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ [4]वजत धरद्धर सीस। धार धरनीय सेस कहि।
कुंडलेस कुंडलिय। कहय पन्न गति अरुल रहि॥
[5]अहि अहि कहि अहि नाम। संकभौ सीस सेस वर॥
गहिन परै तिहि नाग। चित्त विभ्रम चिचक पर॥
कंपेस नाम कंपत भयौ। बहुत नाम तहिन लहिय॥
जिन जिन उपाय रष्यिय इला। [6]पंग पयानह तिहि कहिय॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ फन फन पर मुक्कत जु इल। तत्त बसत दृग्नि हथ्य॥

(१) ए. कृ. को.-तिरांसं। (२) ए. कृ. को.-दुनिंद।
(३) ए. कृ. को.-जालं। (४) ए. कृ. को.-जत्त।
(५) ए. कृ. को.-अहि अहि अहि कहि नाम। (६) ए. कृ. को.-पंग पयानन होत वाहि।

अट्ठ कंपि दो अट्ठ डरि । रवि सुझ्झै नह पथ्थ ॥छं०॥१४३७॥

क्षत्री धर्म की प्रभुता ।

कवित्त ॥ मिलि गरूर सामंत । विपथ अरु सुपथ उचारं ॥
विपथ जु बंध्यौ मोह । सुपथ पति रषि पति वारं ॥
रहै विपथ रजपूत । मझ्झि अनि रषि चित भारथ ॥
इह सु पथ्थ रजतीय । सामि प्रेमह होइ सारथ ॥
सह किति कर्लं कल वाथ्थयौ । काल सु पंग कलंतरै ॥
कस भ्रम्म भ्रम्म छत्री तनौ । मवन मत्त [१]चुकहि नरै ॥छं०॥१४३८॥

दूहा ॥ निसि भै भै काइर भजिग । [२]तमस भज्ज गनि सूर ॥
भय भयान रन उदित बर । अद्ध निसा अध पूर ॥ छं० ॥ १४३९ ॥

प्रफुल्ल मन वीरों के मुखारविंद की शोभा वर्णन ।

भुजंगी ॥ परी अद्ध निस्सा अमं छिद्र कारी । ठठुक्के सुरं देखि बरसे न पारी॥
फिरी पंति चावद्दिसं पंग सूरं । महा तेज आजुल्य दिट्ठी करूरं ॥
छं० ॥ १४४० ॥

सपत्तेज सूरं तहां युद्ध तूरं । दिषे सूर प्रतिबिंब तो सुझ्झ नूरं ॥
महा तेज सूरं समुद्दं जु प्रीतं । बड़े कव्वि रावन्न उप्पम दीतं ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

करे सिद्धि अेमन्न सकारंन नाई । अपे सिद्धि मानं वियं सिद्धि पाई॥
[३]सतं पत्तयं मुद्दि फुल्ले कमोदं । मनो बालवै संधि दो संधि जदं॥
छं० ॥ १४४२ ॥

तरें को तरं उड्डि पंखं प्रमानं । बसे भौर भोरं सतं पत्त थानं ॥
[४]मिलं दंपती भौर ओगं सरंगी । खलं बेस सोसी जु मुकरंद पंगी ॥
छं० ॥ १४४३ ॥

चले लोइ आनं मनं मथ्थ वीरं । सजै कुट्टि लै रथ्थ भुअनं सरीरं॥
डगे उड्डि गेनं द्रुकं दुत्ति मानं। रगं रत्त सुझ्झै अभै आसमानं॥
छं० ॥ १४४४ ॥

(५) ए. कृ. को.-चक्कहि ।
(२) ए. कृ. को. संत पत्र जा
(१) ए. कृ. को—तम सभजग्गनि सूर ।
(३) मो.-मिले दंपती मोरे ज्यौं गंस रंती ।

पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये पांच लाख सेना के साथ रूमीखां और बहराम खां दो यवन योद्धाओं का बीड़ा उठाना ॥

दूहा ॥ षां मारुफ मव रत्ति षां । रुषमीं षां बहराम ॥
　　पान मंडि लीनौ सुकर । सामि सपत्त काम ॥ छं० ॥ १४४५ ॥
　　पंच लष्य तिन सथ्थ किय । अनी बंधि न्रप राज ॥
　　गुन गोरी नन जानई । सामि ध्रम्म सौं काज ॥ छं० ॥ १४४६ ॥

मोतीदाम ॥ बजे बर चंग निसाननि नद्द । सिरं सहनाय नफेरिन सद्द ॥
　　बजंत निसान सुरंभ रिझंत । सुने सद ईस [1]पलक्क षुलंत ॥
　　　　छं० ॥ १४४७ ॥
　　बजै घट घुघघर घोरनि भार । कै इंद्र अरंभ करै बिबिषार ॥
　　बजै रंग जोज जलज जल घंट । हरै ग्रब संभरि नारद कंठ ॥
　　　　छं० ॥ १४४८ ॥
　　बजै सद बंस मछिष्यत सिंघ । मनों कन नंकन आरँभ रंग ॥
　　तवल्ल टँकार निसानन हल्ल । किधों गज मेघ अषाढ़ सु कल्ल ॥
　　　　छं० ॥ १४४९ ॥

आगे रावण तिस पीछे जैचन्द का अग्रसर होना और इस आतंक से सब को भाषित होना कि चौहान अवश्य पकड़ा जायगा ॥

दूहा ॥ रावन न्रप बद्दत सुबर । षिजि बंधव बर बीर ॥
　　आदि बैर चहुआन सौं । चढ़ि फवज्ज भर भीर ॥ छं० ॥ १४५० ॥
　　फटिय फौज पहुपंग बर । मत मंची न्रिप चिंति ॥
　　अप्प चढ़न बद्दन अरी । नीर फौज छबि किति ॥ छं० ॥ १४५१ ॥

कवित्त ॥ करि रावन न्रप अग्ग । पंग चहु बर नागर ॥
　　[2]धरनि धाय सननंति । रंग दुस्सह जुग सागर ॥

---

(१) मो.-सु पल्ल सजंत ।　　(२) मो.-धरति ।

भुगति दान अप्पनइ। अंम जीवन उच्चप्पन ॥
फल किती भोगवन। क्रम भंजन अघ कप्पन ॥
आजुल्य दैव दैवान भर। दिषि नरिंद तोमर तरसि ॥
डगमगे भग्गि द्रुगपाल बर। बीर भुगति तुंमर परसि ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

दूहा ॥ तरसि तुंग बहलति दल। घल भल बिजय निसान ॥
बाल छह दुभ उच्चरै। गहै पंग चहुआन ॥ छं० ॥ १४५३ ॥

हरावल के हाथियों की प्रभुति।

बर सोहै बहलति दल। बर उतंग गज रत्त ॥
काज न सज्जल रष्षई। कौन गंग उर गत्त ॥ १४५४ ॥
हलि गज दंतिन सघन घन। गति को कहै गनित्त ॥
मनों प्रब्बत बिधि चरन कै। फौज अगें मैंमत्त ॥ छं० ॥ १४५५ ॥

पंग दल को बढ़ता देख कर संयोगिता सहित पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना और चारों ओर पकड़ो पकड़ो का शोर मचना।

पद्धरी ॥ पूरन्न राव चालुक्क बंभ। हम्मीर राव पामार थंभ ॥
गोयंद राव बग्घेल सूर। अंगमी सेन घन ज्यों लंगूर ॥
छं० ॥ १४५६ ॥
पहुपंग गोपि प्रविकास राज। दिष्षै कमंध दल करिय साज ॥
बाजिच ताम बज्जे गुहीर। हय गय सु ताम सज्जे ति बीर ॥
छं० ॥ १४५७ ॥
न्रिप नाइ सीस मिलि राज सब्व। दिष्षेव पंग गुर तेज ग्रब्ब ॥
दल सजे साजि सब देषि पंग। उच्चर्यौ गरुअ चहुआन अंग ॥
छं० ॥ १४५८ ॥
सिर धारि बोलि (१)असराज सामि। बंधें अवन्नि गुरु तेज ताम ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गत्ति। निज स्वामि काम (२)गुभ्भे गुरत्ति ॥
छं० ॥ १४५९ ॥

(१) मो.-सज। (२) मो.-गुंभे।

आवंत सेन प्रथिराज आनि। उट्ठेव सूर सामंत तानि॥
सामंत सूर सजि चढ़े जाम। हय मंगि चढ़न चहुआन ताम॥
छं०॥ १४६०॥
संजोगि पुट्ठि ¹आरोहि बंधि। अट्ठौ सु राज सज्झाह संधि॥
छं०॥ १४६१॥
दूहा॥ गहि गहि गहि मुष बेंन कहि। भग्गि न पावै जान॥
श्रवन सबद न संचरिय। मनों गुंग करि सान॥ छं०॥ १४६२॥

लोहाना आजान वाहु का मुकाबला करना और वीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त॥ दल समंद पहुपंग। गज्जि लग्गौ चावद्दिसि॥
लोहानौ बर बीर। पारि मंडौ अड्डिय असि॥
लोह लहरि ढिल्लई। फिरिव बज्जे दल षग्गह॥
हं हं हं आरुहिय। गजति गज्जन नर लग्गह॥
पारथ्थ बीर बर बार हर। बहु क्रूर कट्टी विहर॥
रघुबीर तरंग तुरंग जल। कमल जानि नंचैति सिर॥छं०॥१४६३॥
मित्त रथ्थ रजि व्योम। मद्धि अट्टई असुर गुर॥
रसह रौद्र विथ्थुऱ्यौ। षिति षिजि लग्गे अमर पुर॥
संकर भरि लगि लोह। धूरि धुंधरि तिनि सा छबि॥
हाजुर मीर हमाम। मीर गिरदान सामि नमि॥
चवदिट्ठ उट्ठि राजन सबद। पारसि गहन गहन्न किय॥
है छंडि मंडि असिबर दुकर। जंपत आतुर जीह लिय॥
छं०॥ १४६४॥

लोहाना के मरने पर गोयंदराय गहलौत का अग्रसर होना और कई एक मीर वीरों को मार कर उसका भी काम आना।

भुजंगी॥ तबै हक्कि गहिलौत गोयंद राजं। हयं छंडि हरि जेम करि चक्र साजं॥

(१) ए. आरोधि।

लगे [1]सुद्ध धारं सु बाहं सु भारं। मनों झक्कसं तार तुट्टै करारं॥
छं० ॥ १४६५ ॥

वहै षग्ग झट्टं स क्रन्नति सट्टं। विसीसं बिघट्टं मनों नाच्चनट्टं॥
तुटै षग्ग उड्डंत व्योमं विहारं। मनों संभ संक्रंति इव्वाइ आरं॥
छं० ॥ १४६६ ॥

हहक्कार हक्कार हक्कै सुमीरं। षवं राहि बीरं बजे जुद्ध धीरं॥
समुष्षं हमामं सु मीरं मिलंदे। मनों राह ग्राहं कुटं बेस इंदे॥
छं० ॥ १४६७ ॥

हए तोमरं हीय फेरे फरक्के। मनो नट्ट वेसं सु भूमं तरक्के॥
तबै षंपि गिरियं सु गोयंद राजं। हये संगिनौ छुट्टि सीसं सु गाजं॥
छं० ॥ १४६८ ॥

फटे तोमरं पुट्ठि उट्टंति रंगे। धमक्के धरा नाग नागं सिरंगे।
षवै दीन दीनं गिरंदी गुमानं। कियं आय पाहार नाविक्क बानं॥
छं० ॥ १४६९ ॥

चंपै षंप बर बेग गोयंद राजं। मृगी जेम मृगराज षपि पंषि बाजं॥
हए ताम नेजानि छूटंति धायं। कियं कंत प्राहार गोयंद रायं॥
छं० ॥ १४७० ॥

हए षग्ग सीसं परे रंभ थंभं। मनों कोपिनं षत्ति घंटंति ईभं॥
बियं लग्गि बथ्थं बलं बाहु बाहं। जमं दड्ड षंपे डरं मेछ गाहं॥
छं० ॥ १४७१ ॥

उठे हक्कि करि भारि कोपेज डालं। हए च्यार मीरं दुबाहंड ढालं॥
उरं लग्गि जंबूर आरास षानं। पऱ्यो राव गोयंद दिल्ली भुजानं॥
छं० ॥ १४७२ ॥

गोयंदराय की वीरता और उसके मरने पर पज्जूनराय का हथियार करना।

दूहा ॥ पहर एक असिवर सुभर। आरिसि बुट्ठी सार॥
गिनै कौन गोयंद सिर। जे षग तुट्टिय धार॥ छं० १४७३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुद्ध।

कवित्त ॥ तब गरज्यौ गहिलौत। पत्ति पाहार धार चढ़ि ॥
बड़वा नल असि तेज। पंग पारस संमुह चढ़ि ॥
अरि अबुझ्झ सिध्धवै। मत्त बज्जी तन भिल्लै ॥
अंकै मरन समूह। सस्त्र बर ¹सस्त्रन छिल्लै ॥
आहत्त घाय तन झंझरिय। मन अच्छरि तिन तन वरिय ॥
गोयंदराय आहुट्ठ पति। सुगति मग्ग षुल्लिय द्वरिय ॥

छं० ॥ १४७४ ॥

परत धरनि गहिलौत। सेन नच्चिय असुरायन ॥
चितिय भांम अह सुक्क। रस्स मत्तौ रुद्रायन ॥
गयत प्रान गोयंद। मीर इति मित्ति सुपिल्लिय ॥
पिख्खे राज पज्जून। सुधर कम्मार सु ढिल्लिय ॥
हहकारि सीस साजे गयन। किहय कंध असि भारि कर ॥
धर पर्‍यौ दंत ग्रत मित्त परि। उठ्यौ हक्कि हरि जेम अरि ॥

छं० ॥ १४७५ ॥

पज्जूनराय पर पांच सौ मीरों का पैदल होकर धावा करना और इधर से पांच सौ सामंतों का उसकी मदद करना॥

इत मित्तह उपारह। ²मीर सो पंच छंडि हय ॥
है है है जंपै जुवान। उथ्थान थान भय ॥
तिन रोहिग पज्जून। राय केहरि करि जुथ्थह ॥
देषि सिंघ पामार। पीप परिहार सु पथ्थह ॥
चंदेल भूप भौंहा सुभर। दाहिम्मौ नरसिंघ बर ॥
कचरा राइ चालुक पहु। मिलिय पंच उप्पर समर ॥

छं० ॥ १४७६ ॥

नरसिंहराय का वीरता के साथ मारा जाना।

मोतीदाम॥मिलि हक्किय हक्क सु भीर गंभीर। गुमान दुमान सु चंपिय पीर॥
महाभर सूरसामंत सु धीर। सु न्त्रिम्मल नेम रजे रज नीर ॥

छं० ॥ १४७७ ॥

(१) ए. कृ. को. सत्रुन । (२) ए. कृ. को. सीर ।

हबकि सु धकि मनो अनि षंग। लगे जम दड्ढ सु सेलह संग॥
छुरिक्कइ घाइ सु तुट्टहि सीस। षिलंत कमंध उठै भर रीस॥
छं० ॥ १४७८ ॥

चलै घर पूर रुहीर प्रवाह। सबै मिलि घुंटि सकंति सु राह॥
न्त्रिपति करूर [1]निझारत पन्न। मनों नटिनी मुष जक्क अगन्नि॥
छं० १४७९॥

मिले इत मित्त पजून सु थाइ। हयौ हिय नेज कुरंमह राइ॥
चले सम नेज हयौ असि झार। पन्यौ इत मित्त मनों तरतार॥
छं० १४८०॥

पन्यौ धर राइ पजून समुच्छि। हयौ असि सेर न सीसं उच्छि॥
चंप्यौ नरसिंघ मनों करि सिंघ। महातन मंडिग सेन कुंलिग॥
छं० १४८१॥

लग्यौ दल सिंघ करष्षि सु तीर। चंपे चव सिंघ सु भग्गिय मीर॥
पन्यौ नरसिंघ नरव्वर सूर। तुटे सिर आवध जाम करूर॥
छं० १४८२॥

नरसिंह राय की वीरता और उसका मोक्ष पद पाना।

कवित्त। दाहिम्मै नर सिंघ। रिंघ रष्षी रावत पन॥
सिर तुट्टै कर कट्टि। चट्टि धायौ धर हर घन॥
मार मार उचरंत। राव बज्जे धारा हर॥
देव स्तुति करि चार। रंभ झग्गरी कहिरु बर॥
संकरह सीस लीन्यो जु कर। दई दरिद्री ज्यौं गहिय॥
कविचंद निरषि सुभ्भै सिरह। जुगति उगति कवियन कहिय॥
छं० ॥ १४८३॥

मुसलमान सेना का जोर पकड़ना और पज्जूनराय का तीसरे प्रहर पर्य्यंत लड़ना।

पंग हुकम परमान। अग्र चौकी षुरसानिय॥
प्रथम जुद्ध किय [2]मीर। हारि जिनही नह मानिय॥

(१) ए. कृ. को.-झारत। (२) ए. कृ. को.-मार।

परे मीर पथ्थार । धार असिवर सिर झारं ॥
सामंतनि लंगरिय । घाइ उट्ठी ग्रह सारं ॥
सम सथ्थ बाघ बघ्घेल न्रिप । जंग ओट कोटह अकल ॥
टारै न मुष्ष सांईय छल । लोह लहरि बाजंत झल ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

मुसलमान सेना के क्षित विक्षित होने पर उधर से बाघराज बघेले का वसर करना और इधर से चंदपुंडीर का मौका रोकना ।

परत राइ पज्जून । वित्तचय जाम सु बासुर ॥
विषम रुद्र बिथ्थऱ्यौ । भार लग्गै भर सुब्भर ॥
बघ्घराव बघ्घेल । मार कामोद सेन सम ॥
मिलि चंपिय चहुआन । सूर सुझ्झै न अगम गम ॥
षह धूरि उड्डि धुंधरि धरनि । किलक हक्क बज्जिय विषम ॥
पुंडीर राइ राजह तनौ । समर बार सज्यौ असम ॥ छं० ॥ १४८५॥
बीर मंच उच्चार । धार धाराहर बज्जिय ॥
तिमर तेग निव्वरिय । गुडिल गयनं लफि गज्जिय ॥
उड़पति कमल अलोइ । तेज मंजिय तारा अरि ॥
[1]अनौ भोर अर अकल । सयर लोग उप्पर परि ॥
धर धार धार धुक्किय धरनि । करिय अरिय किननंत धर ॥
पुंडीर राइ चंदह सुचित । [2]अरिन नट्ठ नच्चै सु नर ॥ छं० ॥१४८६॥

मीर कमोद और पुंडीर का युद्ध और पुंडीर का माराजाना ।

बीर मीर कामोद । आय जब पुंडिर उप्पर ॥
बिहथ नेज उब्भारि । बाहि निझ्झाहि चंद उर ॥
सेल सैल संमुहिय । हड्ड भंजिय हिय चंपिय ॥
सुधर ढार निझ्झार । बाहि असुराइन कंपिय ॥
पुंडीर राइ आसर सयन । मूत जिम नंचिय समर ॥
दलभंति पंग पुंडीर परि । जय जय सुर सद्दे अमर ॥छं०॥१४८७॥

(१) ए. कृ. को.-अनी मोरं अरि कमल । (२) ए. कृ. को.-अरिय ।

चंद पुंडीर की वीरता।

दूहा ॥ परत राइ पुंडीर धर । तरनि सरन गय सिंधु ॥
गनै जु को पुंडीर सिर । जे धर तुट्टि अनिंधु ॥ छं० ॥ १४८८ ॥

चंदपुंडीर के मरने पर कूरंभराय का धावा करना और बाघ राज और कूरंभराय दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर । गहिव कूरम षग धायौ ॥
बाघ राइ बघ्घेल । उहित [1]असिवर करि साह्यौ ॥
त्रिभै त्रिभ्भै त्रिम्मरिग । तेग झारिय टट्टर पर ॥
मनहु बेद दुअहीन । पिट्टि झल्लरि अग्गै हर ॥
गल बांह लग्गि गट्ठी पिसुन । मीत भेट मंहा विच्छुरिय ॥
उर चंपि दोइ कट्टारि कर । सुगति मग्ग लभ्भी घरिय॥छं०॥१४८९॥

कूरंभ के मरने पर उसके भाई पल्हनराय का मोरचे पर आना।

कूरंभह उप्परह । [2]बंधु पाल्हनह आयौ ॥
सिंघ छुट्टि संकलनि । देषि कुंजर घट धायौ ॥
कुंतन तरनि सु मंजि । दट्ठ जम दट्ठ विकस्से ॥
भाला षग्गन छुट्टि । पंग सेना परिनस्से ॥
गजबाज जुह्न घन नर परिग । पहु कारन दिय प्रान जुअ ॥
सुरनरह नाग अस्तुति करै । बलि बलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ १४९० ॥

पाल्हन की वीरता और दोपहर के समय उसका खेत रहना।

मध्य टरत दिप्पहर । सार बज्यौ प्रहार भर ॥
मेघ पंग उन्नयौ । मार मंडीय अपार सर ॥
भय कूरंभ टट्टीव ।छार भीजै तहां दिज्जै ॥
बर ओडन प्रथिराज । बीर बीरां रस लिज्जै ॥
तन तमकि तमकि असि बर कढ्यौ । असि प्रहार धारह चढ्यौ ॥
पज्जून बंध अरु पुत्र बर । कारन जेम हथ्थह बढ्यौ ॥ छं०॥१४९१॥

(१) ए. कृ. को-असिमर । । (२) मो.-पाल्हनराय ।

पाल्हन और कूरंभ की उदंड बीरता और दोनों का मोक्ष पद पाना।

परे मध्य विप्पहर । पल्ह पज्जून बंध बर ॥
रज रज तन किय हटकि । कटक कमधज्ज कोटि भर ॥
ईस सीस संहऱ्यौ । हथ्य सों हथ्य न मुक्कयौ ॥
सूर मुख्यौ सुख हथ्यौ । बीर बीरा रस तक्क्यौ ॥
मारत अरिन कूरंभ भुकि । तै रवि मंडल भेदियै ॥
डोल्यौ न रथ्थ संमुष चल्यौ । किति कला नह टेषियै ॥
छं०॥ १४९२ ॥

गंग डोलि ससि डोलि । डोलि ब्रह्मंड सक्क डुल ॥
अष्ट थान दिगपाल । चाल चंचाल विचल थल ॥
फिरि रुक्यौ प्रथिराज । सबर पारस पहु पंगिय ॥
च्यारि च्यारि तरवारि । बीर कूरंभति सज्जिय ॥
नंषिय पहुप्प इक चंदनै । एक किति जंपत बयन ॥
बे हथ्य दरिद्री द्रव्य ज्यौं । रहे सूर निरषत नयन ॥छं० ॥ १४९३ ॥

पज्जूनराय का निपट निराश होकर युद्ध करना।

दूहा ॥ भीर परी पहुपंग दल । भये चतिय पहुराम ॥
तब पजून संमुह करन । मरन कृत्य किय काम ॥छं० ॥ १४९४ ॥

भुजंगी ॥ भिरें बीर पज्जून यों पंग जानं । बहै षग्ग अग्घाइ अग्घाइ बानं ॥
करी छिन्न भिन्नं सनाहं तिजीनं । हयं अंस बंसं द्रुमं बीर कीनं ॥
छं० ॥ १४९५ ॥

महा सूर बीरं बुलै कूर बानी । चल्यौ धार पज्जून संसार जानी ॥
करी अग्ग पच्छं सु टूनं दिषंबे । भयौ स्वामि सन्नाह बैरी छुडंबे ॥
छं० ॥ १४९६ ॥

पहू पंग राइं लग्यौ भान राजं । भुजा दान दीनौ षगं मग्ग साजं ॥
बुलै मुष्ष कूरंभ सो हन्न राई । मिले हथ्य बथ्यं रुपे सेस पाई ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

कवी जोह जंपै सु पज्जून हथ्थं। इकं भारि उभ्भारि हथ्थं समथ्थं॥
बदे अग्र पज्जून ओपंम पाई। कु कुब्बी कला जे नहिंदू सभाई॥
छं० ॥ १४९८ ॥

गये तथ्थ नाहो तुरी तत्त मत्ते। रह्यौ कूहरं मध्य ज्यों जुद्ध रत्ते॥
दिष्यौ सामलं सिंह पुत्तं चरित्तं। वदे बांन ज्यौं पथ्यदानं सु रथ्यं॥
छं० ॥ १४९९ ॥

दिषै यों पजूनं मिल्यौ सिंह रुथ्यं। भिरंतं बसंतं भयौ ज्यों विरथ्यं॥
भई पंच आए प्रथीराज कामं। भए एक घट्टं भिरे तीन जामं॥
छं० ॥ १५०० ॥

पज्जूनराय के पुत्र मलैसी के वीरता और ज्ञान मय वचन।

दूहा ॥ है हम मंगल अब जियौ। मरन सुमंगल काज॥
मरे पुत्र कों विप्र सुनि। भंजों तामस राज॥ छं० ॥ १५०१ ॥
हम रत्ते क्रूरंभ रन। मरन सुमंगल होइ॥
पंच पंचीस संवच्छरन। आहु सु जीवन जोइ॥ छं० १५०२ ॥

कवित ॥ आवरदा सत बरष। अद्ध तामें निसि छिन्निय॥
अद्ध तास बै वृद्ध। बाल मझ्झै होइ हन्निय॥
सुतह सोक संकट प्रताप। प्रिय त्रिय नित संग्रह॥
वट्टि छोह रस कोह। वृद्ध दारुन दुष दुग्रह॥
यौं सनों सकल हिंदू तुरक। कौंन पुत्र को तात बर॥
करतार हथ्थ तरवार दिय। इह सु तत्त रजपूत कर॥छं०॥१५०३॥

मलैसिंह का वीरता और पराक्रम से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं तात पुत्तं चरित्तं। मनों पिष्षियं बाह आयास मित्तं॥
घल्यौ हथ्थ बथ्थं दुहथ्थं तनथ्थौ। भिर्‍यौ हथ्थ बथ्थं रसं बीर धथ्थौ॥
छं० ॥ १५०४ ॥

दिष्यौ एक एकं अनेकं प्रकारं। मनों ब्रह्म माया सु सोयं अपारं॥
कथ्यौ कंध हीनं कमद्धं कलापं। लगी जुग्गिनी जोग माया अलापं॥
छं० ॥ १५०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुमथ्थं। (२) मो.-तन

तुटै अंत पायं उरभ्भं सरीरं। मनों नाल कट्टै छिनालं गँभीरं।
तुव्यौ बाज राजं विराजै टुकूलं। मधू माध वै जानि केहू सु फूलं॥
छं० ॥ १५०६ ॥

उरं बान मुष्षं अघामं प्रमानं। मनों पत षायै जु धावै क्रिमानं॥
कढ्यौ सह्न सामंत जै जै मलैसी। दुवं बंस तारै सुभ्रं माल तैसी॥
छं० ॥ १५०७ ॥

लगे घाव सट्ठिं परे धीर षेतं। उपार्‍यौ सु विप्रं भयौ सो अचेतं॥
पर्‍यौ यौं पजूनं सुपुत्तं उचार्‍यो। भयो इत्तने भान अस्तमित चार्‍यौ॥
छं० ॥ १५०८ ॥

उधर से रावण का कोप करके अटल रूप से युद्ध करते हुए आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ तव रावन नं टरै। सिर न चंपिय चतुरंगी॥
हस्ति काल जमजाल। उठे गज झंपि मुषंगी॥

पंग सेना की ओर से मतवारे हाथियों का झुकाया जाना।

पीलवान रावन्न। दई अंकुस गज मथ्थं॥
सुभर सीस गज झरी। करी आरूढ़ सु तथ्थं॥
[2]उम्मड़ मीर आयो अगह। क्रूह कहर पच्छै फिरिग॥
मै मत्त कोइ अप्पै अपन। अप्प सेन उप्पर परिग॥छं०॥१५०९॥

सामंतों का हाथियों को विचला देना जिससे पंग सेना की ही हानि होना।

अप्प सेन उप्परै। परे गजराज काज अरि॥
सेन पंग बिध्थुरी। मीर उच्छारि झारि धर॥
सर समूह परि पील। बान मिठ्ठी मंथानी॥
करी सम्ह कर वट्टि। मुष्ष दीनं चहुआनी॥

(१) ए. कृ. को.-सरीरं।　　(२) ए. कृ. को.-उग्गाडे पीर अग्गो अगह।

सं मुद्यौ षग्ग सामंत सब। उररि सेन उप्पर परिय ॥
धनि धनि नरिंद सामंत सह। असी लष्ष सम सों भरिय ॥
छं० ॥ १५१० ॥

सामंतों के कुपित हो कर युद्ध करने से पंग सेना का छिन्न भिन्न होना इतने में सूर्य्यास्त भी हो जाना।

भुजंगी ॥ मिले लोह हथ्थं सुबथ्थं हँकारे। उडै गैन लग्गैं सकं सार झारे ॥
कटै कंध कामंध संधं निनारे। परें जंग रंगं मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १५११ ॥

झरं संभरी राव सो सारझारे। जुरे मल्ल हल्लै नहीं ज्यौं अषारे ॥
जबै हार मन्ने नहीं को पचारे। तबें कोपियं कन्ह मै मत्त वारे ॥
छं० ॥ १५१२ ॥

जबै अप्पियं मार हथ्थं दुधारे। फटै कुंभ झूमंत नीसान भारे ॥
गहे सुंड दंतीन दंती उभारे। मनों कंदला कंदु [1]भील उषारे ॥
छं० ॥ १५१३ ॥

परे पंगुरें पंडुरे मीर सीसं। मनों जोगजोगीय लागंत रीसं ॥
बहै वान कम्मान दीसै न भानं। भ्रमै गिद्धनी गिद्ध पावै न जानं ॥
छं० ॥ १५१४ ॥

लगे रोह रत्ते अरत्ते करारं। मनों गज्जियं मेघ फट्टै पहारं ॥
दई कन्ह चहुआन अरि पील सीसं। करी चंद कब्बी उपम्मा जगीसं ॥
छं० ॥ १५१५ ॥

तिनं संग संधी महा पील मत्तं। मनों षंचियं द्रोन बरवाय पुत्तं ॥
किधों षंचियं राम हथिना पुरेसं। किधों षंचियं मथन गिरिसुर सुरेसं ॥
छं० ॥ १५१६ ॥

किधों षंचियं कन्ह गिरि गोपि काजं। धरी सीस ऐसी सु भद्दं विराजं ॥
[2]रूरै षेत रत्तं सुरत्तं करारं। सुरै कंठ कंठी न लागै उभारं ॥
छं० ॥ १५१७ ॥

मुरं स्रोन रंगं पलं पारि पंकं। बजे बंस नेसं सुबेसं करंकं ॥

(१) ए.-नील। (२) ए० कृ. को.-रूरै

द्रुमं डाल डालं सु लालं सुवेसं । गए हंस नंसी मिले हंस वेसं॥
छं० १५१८ ॥

परे पानि अंघं धरंगं निनारे । मनों मच्छ कच्छा तिरंतं उभारे॥
सिरं सा सरोजं कचं सासि वाली । गहै अंत गिद्धी सु सोहै म्रनाली॥
छं० ॥ १५१९ ॥

तटं रंभ 'थम्भं भरत्तंव चीरं । कितं स्याम सेतं कितं नील पीरं॥
वरै अंग अंगं सुरंगं सु भट्टं । जिते स्वामि काजै समप्पै जु घट्टं॥
छं० ॥ १५२० ॥

तिते काल जम जाल हथ्थी समानं । हुअे इत्तनै जुद्ध अस्तमित भानं॥
छं० ॥ १५२१ ॥

कन्ह के अतुलित पराक्रम की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । गहिय करवान रोस भरि ॥
असिय लष्ष चिन गनिय । हनत हय गय पय निंदरि॥
करत कुंभस्थल घाव । चाव ववगुन धरि धीरह ॥
तुबक तीर तरवार । लगत संक्यौ न सरीरह ॥
कहि चंद पराक्रम कन्ह कौ । दिय ढहाय गेंवर समर ॥
उछरंत छिंछ श्रोनित सिरह । मनहु लाल फरहरि चमर ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

सारंगराय सोलंकी का रावण से मुकाबला करना और मारा जाना ।

सोलंकी सारंग । बीर रावन आरुझिय ॥
दुअ सु हथ्थ उत्तंग । तेग लंबी सा लुझिय ॥
दो मरदह आरुद्ध । रुद्ध भानं झिल्लोरिय ॥
टोप फुट्टि सिर फुट्टि । छिंछ फुट्टिय कविलोरिय ॥
निल वट्टि फुट्टि पलवन्न वन । कै ज्वाल माल पावक पसरि ॥
तन भंग घाय अरि संग करि । पत्ति पहुर चालुक्क परि ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

(१) ए. कृ. को. रथ्थं ।

सोलंकी सारंग की वीरता।

ब्रह्म चालुक ब्रह्म चार। ब्रह्म विद्या वर रष्षिय॥
केस डाभ अरि करिय। रुधिर पन पञ्च विसष्षिय॥
षग्ग गहिग [1]अंजुलिय। नाग गहि नासिक्क तामं॥
धरनि अषर दुहुं श्रवन। जाप जापं मुष रामं॥
सिर फेरि षग्ग सम्हौ धर्‌यौ। दुअन तार मन उल्हसिय॥
अष्टमी जुद्ध सुक्कह अथमि। सुर पुर जा सारँग बसिय॥
छं०॥ १५२४॥

सायंकाल पर्य्यंत पृथ्वीराज के केवल सात सामंत और पंगदल के अगनित बीरों का काम आना।

भुजंगी॥ परे सत्त सामंत सा सत्त कोटं। षलं चंपियं बीर भै सोम ओटं॥
लगी अंग अंगं कहूं षंग [2]मध्यं। किधों वज्र छुट्टै कि वज्जीय हथ्थं॥
छं०॥ १५२५॥

वहै गग्ग मग्गं प्रचारे सु बीरं। झलै षग्ग नीरंजिनें मुष्प नीरं॥
लरै सत्त बीरं दिष्षै सब्ब थट्टं। हरी एक माया करै घट्ट घट्टं॥
छं०॥ १५२६॥

षगं मग्ग सेना जुपंगं हलाई। मनों बोहथी मारुतं कै रुलाई॥
दुती देषते ओपमा कव्वि पाई। मनों बीर चक्कं कुलालं चलाई॥
छं०॥ १५२७॥

भषै काइ पंषी किअग्गी कि दाही। तुटै धार मग्गं लियै अंग लाही॥
वरै काहि दूरं शिवं माल काकी। ढुढै ब्रह्म लोकं सलाकं सुताकी॥
छं०॥ १५२८॥

ननं देव ओपम्म सी धन्नि जाकी। लगी नाहि माया तजे तंत ताकी॥
वजे लोहि आनं फिरी ग्रेह मग्गी। तिनं तेज छुट्टं सुरं ग्रेह भग्गी॥
छं०॥ १५२९॥

---

(१) मो. अंगुरिय। (२) मो.-मध्यं।

दूहा ॥ भान विहान जु देषि कै। पिषि सामंत सु सूर ॥
षिनुकन धीरं तनु धरहि। तीरथ इक्कथौ क्रूर ॥
छं० १५३० ॥

गाथा ॥ निसि गत बंछिय भानं। चक्की चक्काइ मूर साचित्तं ॥
विधु संजोग वियोगी। कुमुद कली कातरां नांचं ॥
छं० १५३१ ॥

प्रथम दिन के युद्ध में पंगदल के मृत मुख्य सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ प्रथम मार सामन्त। सहिय मीरन इत मित्तिय ॥
बाघ राव बघ्घेल। हेल इन उप्पर वित्तिय ॥
उभय उमगि गजराज। काज किन्नौ प्रथिराजह ॥
इकति सुंड आषारि। एक [1]मिंडिग पग पाजह ॥
पुंतार डरह कट्टारि कर। परिग षित्त तेषिन न जिय ॥
इह जुद्ध मचि चहुआन सों। प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

मृत सात सामन्तों के नाम।

दाहिम्मौ नरसिंघ। पर्यौ नागौर जास धर ॥
पर्यौ गंजि गहिलौत। नाम गोयंद राज बर ॥
पर्यौ चंद पुंडीर। चंद पिष्यौ मारंतौ ॥
सोलंकी सारंग। पर्यौ असिवर भारंतौ ॥
कूरंभ राव पाल्हन दे। बंधव तीन सु कट्टिया ॥
कनवज्ज रारि पहिलै दिवस। सौमेसत्त निघट्टिया॥छं०॥१५३३॥

पंगदल के मारे गए हाथी घोड़े और सैनिकों की संख्या।

दूहा ॥ उभै सहस हय गय परिग। निसि निग्रह गत भान ॥
सत्त सहस अम मीर हनि। यल विंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५३४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-टुटै। (२) मो-मांडग।

जैचन्द के चित्त की चिन्ता।

कवित्त ॥ चित्त [1]चिंता कमधज्ज। देषि लग्गी चहुआनं ॥
प्रथम जुद्ध दरबार। सूर मद्धे असमानं ॥
घटिय मत्त दिन उद्ध। जुद्ध लग्गो सु मझाभर ॥
अस्त काल [2]सम मौर। परे धर सूर अप्प धर ॥
सामंत सत्त प्रथिराज परि। करे क्रम्म अतुलित्त सह ॥
प्रथिराज तरनि सामंत किरनि। थपी तेज आरेन यह ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

जैतराव का चामण्डराव के बन्दी होने पर पश्चात्ताप करना।

पज्जूनह उप्परह। राज प्रथिराज सँपतौ ॥
गरुअ राय गोयंद। घाव अघाइ सँसतौ ॥
चाइ चित्त चहुआन। कन्ह किन्नौं कर उभ्भौ ॥
रा रंडी ठिल्लरीय। आज लग्गौ मन दुभ्भौ ॥
धाराधि नाथ धारंग धर। जैत जीत कीनौ रुदन ॥
चामंड डंस मुक्यौ सुग्रह। रष्षन छिति छत्ती हदन ॥छं०॥१५३६॥

अष्टमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

दूहा ॥ जिहि ग्रह निग्रह पथ्थिवर। बँधि सनाह सयन्नि ॥
मन बँधिय अच्छरि बरन। बंधि अंग सँजोगिन्नि ॥
छं० ॥ १५३७ ॥

पद्धरी ॥ बंधे सनाह न्रप सेन कौन। सोगी उपम्म मनु रंभ दीन ॥
आवृत्त पंग बज्जे निसान। भै चितन लग्गि वर चाहुआन ॥
छं० ॥ १५३८ ॥

तिन सुनी जानि पंगुर नरेस। जनु सत्त जुद्ध जुग्गिनिपुरेस ॥
जनु पंग विषम धुक्किय सयन्न। जुध सभें वीर विष पियन अन्न ॥
छं० ॥ १५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-मेंत। (२) ए. कृ. को.-तथ्य।

आवृत्त भूमि रनवज्जि बीर। कंपंत वप्प, कायर अधीर॥
हकंत [1]बप्प सो पंच बीर। सुनि श्रवन हास नारद गंभीर॥
छं०॥ १५४०॥
उर ग्रहन बाल दंपति सनाह। दिषि उदित मत्ति रत्तीस दाह॥
पहुपंग बीर संबर सु ताम। मनु बंधिय सेन रति पत्तिकाम॥
छं०॥ १५४१॥
सोभै सनाह उज्जल अवझझ। चमकंति भान द्रप्पनति मझझ॥
निस गयति अद्ध ससि उदित [2]बीर। बज्जे सु बज्जि मद्दत सुमीर॥
छं०॥ १५४२॥

पृथ्वीराज की वाराह और पंगराज की पारधी से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ अद्ध रयनि चंदनिय। अद्ध अग्गैं अंधियारिय॥
भोग भरनि अष्टमिय। सुक्र बारह सुदि रारिय॥
च्यारि जाम जंगलिय। राव निसि निंदन घुंच्यौ॥
यल विंच्यौ कमधज्ज। रह्यौ कंदल आहुट्यौ॥
दस कोस कोस कनवज्ज तैं। कोस कोस अंतर अनिय॥
वाराह रोह जिम पारधी। इम रुक्यौ संभरि धनिय॥ छं०॥१५४३॥
रोइ राह वाराह। भार सामंत उठारे॥
ढिल्लो ठार जुझार। पंच ह्वरति रषवारे॥
रन सिंघार झुझझार। उड्डु बग्गा उच्छारे॥
पारथ 'बर पच्छियै। सत्त स्वामित्त सु धारे॥
पारस विलास रा पंग दल। घन जिम घर बंबरि द्रवन॥
संग्राम धाम धुंधरि परिय। निसि विघात तारह छवन॥
छं०॥ १५४४॥

अंधेरी रात में मांसाहारी पशुओं का कोलाहल करना।

चंद्रायना॥ तारक मंत प्रगट्टिय। वट्टिय पंथियन॥
अंषिन अद्ध उरद्धन। अद्धन निंद मन॥

(१) ए.-कृ-को. तथ्थं। [२) ए. कृ. को.-बीर।

ढिल्लिय ढाल कुलाल । कुलाहल किन्नरन ।
ढिल्लिय माथ सु हाथ । समथ्थिन अथ्थियन ॥ छं० ॥ १५४५ ॥
दूहा ॥ अह अवन्निय चंद किय । तारस मारू भिन्न ॥
पलचर रुधिचर अंस चर । करिय रवन्निय रिन्न ॥ छं० ॥ १५४६ ॥

सामंतों का कमल व्यूह रचकर पृथ्वीराज को बीच में करना।

कवित्त ॥ चावद्दिसि रषि सूर । मद्धि रष्यौ प्रथिराजं ॥
ज्यौं सरद् काल रस सोष । मद्धि ससि [1]जुत्त विराजं ॥
ज्यौं जल मद्धित जोत । तपति वड़वानल सोहं ॥
ज्यौं [2]कल मद्धे जमन । रूप मधि रत्तौ मोहं ॥
इम मद्धि राज रष्यौ सुभर । नरन सकल निंदौ सु वर ॥
सब सुष्प पंग रुक्कौ सु बर । सो उप्पम जंप्यौ सु गिर॥छं०॥१५४७॥

पृथ्वीराज का प्रिया के साथ सुख से शेष रात्रि बिताना।

चंद्रायना ॥ मिच महोदधि मझ्झ । दिसंत ग्रसंत तम ।
पथिक बधू पथ द्रष्टि । अहुट्टिय चंग जिम ॥
जुवजन जुवतिन गंजि । सुमंति अनंग लिय ॥
जिम सारस रस लुद्ध । सुमुद्धह मद्ध तिय ॥ छं० १५४८ ॥
चांद्रायन ॥ षह[3] चारु रुचि इंद इंदीवर उद्दयौ ।
नव [4]विहार नवनह नवज्जल रुद्दयौ ॥
भूषन सुभ्भ समीपनि मंडित मंड तन ।
मिलि मृदु मंगल कौन मनोरथ सब्ब मन ॥ छं० ॥ १५४९ ॥
स्लोक ॥ जितं नलिनी तितं नीरं । जितं नलिनी [5] जलं तितं ॥
जतो गृह ततो गृहिणी । जच गृहिणी ततो गृहं ॥ छं० ॥ १५५० ॥

सब सामन्तों का सलाह करना कि जिस तरह हो इस दंपति को सकुशल दिल्ली पहुंचाना चाहिए।

दूहा ॥ मिलि मिलि बर सामंत सह । न्रप रष्षन बिचार ॥

(१) मो.-जुद्ध । (२) ए. कृ. को.-कमल । (३) मो. यह ।
(४) मो.-बिरह । (५) ए. कृ. को-नीरं ।

चलै राज निज तरुनि सम । हुहै सुमत्तह सार ॥ छं० ॥ १५५१ ॥

जैतराय निढ्ढुर और भौंहा चंदेल का विचारना कि नाहक की मौत हुई ।

कवित्त ॥ रा निढ्ढुर राजैत । राव भौंहा भर चिंतिय ॥
सो अरिष्ट उप्पज्यौ । मरन अपकित्ति सुनंतिय ॥
छुच्छंदरि ग्रहि अप्प । ग्रहन उग्रह को सुझ्झइ ॥
मरि छुट्टौ कैमास । मंत जगिगय ता मझ्झइ ॥
न्रिप कियौ सुभयौ इन भट्ट सथ । तट्ट भेष राजन कियौ ॥
परपंच पंच बंधहु सुपरि । जोगिनि पुर जाइ सुजियौ ॥
छं० ॥ १५५२ ॥

आकाश में चाँदना होतेही सामंतों का जाग्रत होना और राजा को बचाने के लिये व्यूह वद्ध होने की तैयारी करना ।

राजनिद्दि कै काज । सूर जग्गे जस पहरैं ॥
पलह चोर लगि आय । ध्रम्म लज्जा रषि गहिरैं ॥
छुध पिपास निद्रान । जानि हवि दीन पछित्तिय ॥
पंच इंद्री मुष बंधि । भए जोगिंद सु गत्तिय ॥
जहं लगि निद्रि यष रचन रहै । तहं लग्गि सब, पर बीर उत ॥
सब मिलिए सूर पुच्छहि सुमति । अप्प रहै कहुं न्रपति ॥
छं० ॥ १५५३ ॥

पति बर बर चहुआन । काम चहुन पंगी 'भय ॥
हेमादक उनमाद । मुक्कि मोहन सोषन लय ॥
हय गय नर सर नारि । गोर चिहुकोद चलाइय ॥
लाज कोट चहुआन । दुहुन दंती दुहुलाइय ॥
मन रुक्कि मार दल रुक्किदल । उग्गि चंद कविचंद कहि ॥
सामंत सूर उच्चारि तब । कही मंत फुनि प्रत्त लहि ॥ छं० ॥१५५४॥

(१) ए. कृ. को.-बस ।

मिले चंद सामंत। मंति सा ध्रम्म विचारिय॥
इह सुवेह मंगलिय। होइ मंगल अधिकारिय॥
मुगति भुगति अप्पियै। जुगति लब्भै न जुगंतह॥
जस मंगल तन होइ। काम मंगल सुभ जै ग्रह।
कढ़ियै स्वामि तन वढ़ियै। चढ़ियै धार धारह धनी॥
मंगलन होय इह अन्न कौ। पति रष्षै पति अप्पनी॥ छं०॥१५५५॥

गुरुराम का कन्ह से कहना कि रात्रि तो बीती अब रक्षा का उपाय करो।

दूहा॥ मानि मंत सामंत सह। चलिग बोलि दुजराज॥
स्वामि ध्रम्म पत्तिय सु पति। चलि पुच्छन प्रथिराज॥छं०॥१५५६॥
अन्न लग्गि कहि कन्ह सौं। तकित राय अनुवत्त॥
निसा अप्प ग्रह कियन कछु। प्रात परै इह [1]छत्त॥छं०॥१५५७॥

कन्ह का कहना कि औघट से निकल चलना उचित है।

कवित्त॥ कहै कन्ह तम मुद्ध। मूढ़ राजन जिनि[2]मंगह॥
उद्ध मरन तैं डरह। काइ भग्गहु अनभंगह॥
कहिय राव पज्जून। सोब चित्तक द्रह वित्तिय॥
असुर बुद्धि असुरिय। भट्ट मंडन किय कित्तिय॥
गारुडिय ग्रह्यौ अंमृत मितिय। विषम विष्ष नल उत्तरै॥
[3]अवघट्ट घाट नंषै न्रपति। दैव घाट संमुह करै॥ छं०॥१५५८॥
जिहि देवल भर कोट। सूर सामंत थंभ धर॥
कित्ति कलस आरुहिय। नीम जीरन जुग्गह कर॥
सार पट्ट पट्टयौ। चित्र मंड्यौ सु उकति अप॥
धर्यौ पुहुप पहुपंग। करौ पूजा सु बीर जप॥
सा ध्रम्म वचन लग्गौ चरन। देव तेव प्रथिराज हुअ॥
वामंग अंग संजोगि करि। लच्छि रूप मंड्यौ सु धुअ॥
छं०॥१५५९॥

(१) मो.-वत्त। (२) मो.-संग्रह। (३) ए. आवट्टनाव।